हज़रत मौलाना

अबुल हसन अली नदवी

रहमतुल्लाह अलैहि

तालीफ़ :
इरफान फारुकी नदवी

प्रकाशक : मकतबा अहसान
504/64, अहसान मंज़िल, टैगोर मार्ग
डालीगंज, लखनऊ-20, फोन : 0522-3206907

www.abulhasanalinadwi.org

© सर्वाधिकार सुरक्षित

किताब का नाम	:	हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी रहमतुल्लाह अलैहि
तालीफ	:	इरफान फारुक़ी नदवी
प्रथम संस्करण	:	२०११
पुस्तक संख्या	:	
मूल्य	:	
प्रकाशक	:	मकतबा अहसान ५०४/६४, अहसान मंज़िल, टैगोर मार्ग, डालीगंज, लखनऊ-२० फोन : ०५२२-३२०६६०७

www.abulhasanalinadwi.org

विषय सूची

1.	मुकद्दिमा	01
2.	सन्देश	02
3.	अपनी बात	03
4.	हज़रत मौलाना अलीमियां का नाम व नसब	05
5.	आपके पिता अब्दुल हई हसनी	05
6.	हज़रत मौलाना अली मियां की माँ	07
7.	आपके बड़े भाई सय्यद अब्दुल अ़ली	09
8.	मौलाना अ़ली मियां का बचपन	11
9.	खानदान की आर्थिक स्थिति और उसके सुधार की कोशिश	11
10.	बचपन में किताबों का शौक़ और पहली तक़रीर	12
11.	तअ़लीम (शिक्षा)	13
12.	पिता का देहान्त	14
13.	तकिया रायबरेली का क़ियाम (निवास)	14
14.	माँ की तर्बियत में	14
15.	लखनऊ में नवाब नूरुल हसन खां की कोठी पर क़ियाम	15
16.	मौलाना अब्दुल अली साहब की निगरानी	16
17.	अरबी शिक्षा	17
18.	उस्ताद अदब	17
19.	उर्दू लिट्रेचर व साहित्य का मुताअ़ला (अध्ययन)	18
20.	नदवतुल उलमा का कानपुर का जलसा	18
21.	खेलों में दिलचस्पी	19
22.	लखनऊ यूनिवर्सिटी में एडमीशन	20
23.	लाहौर का ऐतिहासिक सफर	20
24.	दारुल उलूम नदवातुल उलमा में हदीस पढ़ना	21
25.	अल्लामा तक़ीउद्दीन हिलाली का नदवा आना	21
26.	तिर्मिज़ी शरीफ के टीमा कार अब्दुर्रहमान मुबारक पुरी से इजाज़त	21
27.	हज़रत मौलाना की पहली किताब	21
28.	अंग्रेज़ी की तरफ ध्यान देना और आपकी मां की परेशानी	22
29.	मौलाना हुसैन अहमद मदनी से सम्बन्ध	22
30.	लाहौर जाना और मुहम्मद गुलाम पूरी साहब से बैअ़त	22
31.	देवबन्द का सफर	23

www.abulhasanalinadwi.org

32. लाहौर का सफर और मौलाना अहमद अली साहब से पूरा क़ुरआन पढ़ना 23

33. दारुल उलूम नदवातुल उलमा में उस्ताद बनना 24

34. दारुल उलूम में क़ियाम (निवास) और किताबों का पढ़ाना 24

35. हज़रत मौलाना की शादी 24

36. डाक्टर अम्बेडकर को इस्लाम की तरफ और मुम्बई का सफर 25

37. सीरत सय्यद अहमद शहीद लिखने की शुरुआत 26

38. हज़रत अशरफ अली थानवी की लखनऊ आमद (आगमन) 26

39. अल्लामा इक़बाल से आखिरी मुलाक़ात 26

40. अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के दीनीयात के डिपार्ट के लिए एक किताब का लिखना 27

41. सीरते सय्यद अहमद शहीद का छपना और उसका हाथों हाथ लिया जाना 27

42. पत्रिका "अन्नादवा" का सम्पादन 27

43. मदरसों के लिए नए सेलेवस की किताबों का तय्यार करना 28

44. मौलाना मन्ज़ूर नोअ़मानी से पहली मुलाक़ात 28

45. दीनी मर्कज़ों (केन्द्रों) का दौरा 29

46. जमाअ़ते इस्लामी का मिम्बर बनना और उससे अलग होना 30

47. जमाअ़ते इस्लामी से अलग होने के कारण 31

48. जामिया मिल्लिया की तरफ से बुलावा और वहां मक़ाला (निबन्ध) पढ़ना 34

49. इन्सटीटयूट तअ़लीमाते इस्लाम का क़ियाम (स्थापना) और दर्स क़ुरआन 34

50. हज़रत मौलाना की एक इन्क़िलाबी किताब 35

51. हज़रत मौलाना मुहम्मद इलयास साहब और उनकी तहरीक (आन्दोलन) से सम्बन्ध 37

52. लखनऊ के आस पास के क्षेत्रों में तब्लीग़ी काम की शुरुआत और हज़रत मौलाना इलयास साहब के खत 38

53. मौलाना इलयास से प्रभावित होने के कारण 38

54. तब्लीग़ी जमाअ़त में निकलने से छात्रों की तर्बियत (प्रशिक्षण) 39

55. नदवा के प्रिंसपल इमरान खां साहब भोपाली का जमाअ़त में लगना 39

www.abulhasanalinadwi.org

56. हज़रत मौलाना का शेखुल हदीस मौलाना ज़करिया से परिचय 40
57. लखनऊ शहर में तब्लीग़ी काम और मौलाना इलयास साहब का लखनऊ का सफर 40
58. तब्लीग़ी यात्राएं व इज्तमाआत और दारुलउलूम से इस्तीफा 42
59. पेशावर का ऐतिहासिक सफर 43
60. हाजी अरशद साहब 43
61. कराची का सफर 44
62. मौलाना इलयास साहब की बिमारी और वफात (मृत्यु) 44
63. हज़रत मौलाना यूसुफ साहब का जमाअते तब्लीग़ का अमीर बनना 45
64. हज़रत मौलाना के सोचने का अन्दाज़ 46
65. लखनऊ की इल्मी व दीनी हल्क़ों में काम का मक़बूल होना 47
66. हज़रत मौलाना की एक ग़लती 47
67. हज़रत मौलाना अहमद अली साहब का हज़रत मौलाना को खिलाफत देना 48
68. हज़रत मौलाना का पहला हज और वहां तब्लीग़ी काम 48
69. हिजाज़ में तब्लीग़ी काम 49
70. अमीर सऊद के नाम एक ऐतिहासिक पत्र 49
71. हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का बंटवारा और उसके परिणाम 50
72. मुसलमानों की मायूसी और नए हालात में काम करने की ज़रुरत 50
73. नदवतुल उलमा की कमेटी का मिम्बर और मोअतमद तअ़लीम बनना 52
74. हज़रत अब्दुल क़ादिर रायपुरी का हज़रत मौलाना को अपना खलीफा बनाना 52
75. हज का दूसरा सफर 53
76. इज़्ज़त व एहतिराम का मुबारक दिन 54
77. सऊदी रेडियो पर हज़रत मौलाना की तक़रीरें 54
78. मिस्र का सफर 55
79. मिस्र के इख्वानुल मुस्लिमीन और उनसे सम्बन्ध 56
80. सूडान व दिमश्क़ 59
81. उर्दुन के बादशाह शाह अब्दुल्लाह 59

www.abulhasanalinadwi.org

82. हिन्दुओं और मुसलमानों के मिलेजुले जलसों को सम्बोधित करना 60
83. "तारीख दअ़वत व अज़ीमत" को लिखना 60
84. दिमश्क़ यूनिवर्सिटी में Vising Professer की हैसियत से जाना 61
85. क़ादयानियों के विरोध में एक किताब 61
86. अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी की रक्षा की फ़िक्र 62
87. दीनी तअ़लीमी कौन्सिल 63
88. बड़े भाई डाक्टर अब्दुल अली साहब की मृत्यु 63
89. नदवतुलउलमा का नाज़िम (मैनेजर) बनना 63
90. जामिया इस्लामिया मदीना मुनव्वरा और राब्ता आलमे इस्लामी मक्का मुकर्रमा का क़ियाम (स्थापना) 64
91. मुस्लिम मजलिस मुशावरत की स्थापना 64
92. हज़रत मौलाना का त्याग व कुर्बानी 64
93. मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड की स्थापना 65
94. हज़रत मौलाना का विदेश का दौरा 65
95. शाह फ़ैसल का शहीद होना 65
96. नदवा का पच्चासी साला जश्न 66
97. मस्जिदे हराम (कअ़बः) के इमाम शेख अब्दुल अज़ीज़ का नदवा आगमन 66
98. देश में एमरजेन्सी का लागू होना 67
99. इन्द्रागांधी का रायबरेली हज़रत मौलाना से मिलने आना 68
100. चन्द्रशेखर और अटलबिहारी बाजपेयी का नदवा हज़रत से मिलने आना 68
101. अमरीका का पहला सफर और आंख का आपरेशन 68
102. मक्के की एक दुर्घटना 69
103. फ़ैसल एवार्ड 69
104. मुरादाबाद का दंगा 70
105. हिजाज़ का सफर और यासिर अराफात के सामने तक़रीर 71
106. कश्मीर यूनीवर्सिटी का आपको डाक्टरेट की डिग्री देना 72
107. बैरुत की घटना 72
108. आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में इस्लामिक सेण्टर की स्थापना 73
109. मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड का अध्यक्ष बनना 73

www.abulhasanalinadwi.org

110.	हिन्दूइयत का तूफ़ान और इन्द्रा गांधी का क़त्ल	74
111.	श्रीमती गांधी का क़त्ल	75
112.	यूरोप का सफर	75
113.	सुप्रीम कोर्ट का "मुस्लिम पर्सनल" लॉ के खिलाफ फैसला और हज़रत मौलाना के नेतृत्व में मुसलमानों की जंग	75
114.	इमामे हरम (कअ़बः) शेख मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह सबील व "राब्ता आलिमे इस्लामी" के जनरल सेक्रेट्री का आगमन	76
115.	हज़रत मौलाना का बीमार होना	77
116.	भागलपुर का दिल दहला देने वाला दंगा और उसके प्रभाव	77
117.	हज़रत मौलाना की बीवी की मृत्यु	78
118.	बाबरी मस्जिद का मसला	78
119.	मद्रास का सफर और शंकराचार्य से भेंट	78
120.	बाबरी मस्जिद के मसले में हज़रत मौलाना पर एतिराज़	79
121.	दिल्ली में उलमा का इज्तिमाअ़ और हिन्दुओं और मुसलमानों के धर्मगुरुओं की आपस में बातचीत	80
122.	मुख्य मंत्री मुलायम सिंह जी का उचित निर्णय	80
123.	पार्लियामेंट का हंगामी इज्लास और वी0 पी0 सिंह का अल्पमत में आना	80
124.	यू0 पी0 के मुख्य मंत्री मुलायम सिंह का बहुमत सिद्ध करना	81
125.	सम्प्रदायिक दंगा	81
126.	प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर को खत लिखना	81
127.	राजीव गांधी का क़त्ल	82
128.	नरसिम्हा राव हिन्दुस्तान के नए प्राइमिनिस्टर	82
129.	पदमभूषण का सम्मान लेने से इन्कार	82
130.	यू0 पी0 में भारती जनता पार्टी की हुकूमत	82
131.	नरसिम्हा राव का पत्र	83
132.	हज़रत मौलाना का जवाब और नरसिम्हा राव का उत्तर	83
133.	बाबरी मस्जिद का विध्वंस	83
134.	केन्द्र का चार स्टेटों की B.J.P. सरकारं को बरखास्त करना	84
135.	ईराक़ का कुवैत पर हमला	84
136.	मस्जिदे अक़्सा (फिलिस्तीन) के इमाम का नदवा आना	84
137.	बम्बई, सूरत, महाराष्ट् के हौलनाक दंगे	84
138.	मुम्बई के धमाके	85

www.abulhasanalinadwi.org

139. मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के वफ्द का दोबारा प्रधानमंत्री से मिलना 85
140. बाबरी मस्जिद के गिराने का ज़िम्मेदार कौन 85
141. विश्व स्तर पर हज़रत मौलाना की बेचैनी 86
142. मौलाना के दूसरे देश विदेश के सफर और दीनी खिदमात 86
143. दारुलउलूम नदवतुल उलमा पर पुलिस का छापा और उसकी प्रतिक्रिया 86
144. विदेश में इसकी प्रतिक्रिया 87
145. Uniform Civilcourt को लागू करने का मुतालबा और पर्सनल लॉ बोड का विरोध 87
146. प्रधानमंत्री H.D. देवगौड़ा का हज़रत से मिलने आना 88
147. हिजाज़ का सफर और एक बहुत बड़ा सम्मान 88
148. मुसलमानों में एकता पैदा करने की फ़िक्र 89
149. क़ादयानियों के विरोध में एक विश्व स्तर का जलसा 89
150. हज़रत मौलाना की अध्यक्षता 90
151. सरकारी स्कूलों में वन्देमातरम को कम्पलसरी (अनिवार्य) करना 90
152. हज़रत मौलाना के पुश्तैनी घर पर छापा 91
153. वन्देमातरम का आर्डर वापस लिया जाना और शिक्षा मन्त्री की बरखास्तगी 91
154. मीडिया की दहशतगर्दी 92
155. हज़रत मौलाना को एक आलिमी पुरस्कार 92
156. हज़रत मौलाना पर फालिज का हमला 93
157. प्रधानमंत्री अटल बिहारी को नसीहत 93
158. हज़रत मौलाना की तब्लीग़ी इज्तिमाअ़ में आख़िरी तक़रीर 94
159. हज़रत मौलाना को अमीर तब्लीग़ जमाअ़त मौलाना सअ़द मौलाना ज़ुबैर साहब को खिलाफत देना 94
160. मीडिया की झूठी रिपोर्ट 94
161. सुल्तान बुरुनाई एवार्ड 95
162. रमज़ाम में नदवा का क़ियाम और हज़रत की वफात 96
163. हज़रत मौलाना उलमा की नज़र में 96
164. हज़रत मौलाना की किताबें 97
165. हज़रत मौलाना का इल्म 98
166. हज़रत मौलाना के अख़्लाक़ व व्यवहार 99

www.abulhasanalinadwi.org

विषय सूची

विषय	पृष्ठ सं०
अनुवादक के कलम से	4
किताब लिखने की वजह	5
लेखक की किताब लिखने में हिचकिचाहट	5
दाढ़ी मुंडाना अंग्रेज़ों के प्रभाव से शुरु हुआ है	6
गुनाहगार मुसलमान भी अपने नबी (सल्ल०) से मुहब्बत करते हैं	6
दीन का इल्म न होने से लोग दीनी काम से नफ़रत करते हैं	7
दाढ़ी रखना इबादत है	8
रवाज के मुक़ाबिले में क़ुर्आन व ह़दीस पर अ़मल होगा	12
अन्नासु अ़ला दीने मुलूकेहिम	14
आ़म मुसलमानों के अ़मल को दलील नहीं बनाया जा सकता	15
दिल व बदन सब पर अल्लाह की हुकूमत है	16
क्या दाढ़ी रखने से आदमी जंगली लगता है	17
हर विषय के माहिर से ही उसके बारे में समझना चाहिए	19
ज़िन्दगी की ज़रूरतों में सुन्नत सादगी है	22
मुजाहिदीन भी दाढ़ी रखते थे	23
क्या दाढ़ी वाले मक्कार होते हैं	26
दाढ़ी रखना इस्लाम का शिआ़र है	27
शिआ़र का मतलब	28
जिस काम का हुक्म इस्लाम में साबित है उनमें तशब्बुह का कोई एतिबार नहीं	30
दाढ़ी रखना वाजिब है	31
दाढ़ी रखना सभी नबियों की सुन्नत है	34
दाढ़ी सभी सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम रखते थे	35
बुज़ुर्गों की भी दाढ़ी होती है	37
दाढ़ी औ़रतों ही के नहीं होती	37
दाढ़ी मर्दानगी की निशानी है	39
दाढ़ी का छोड़ना अ़मली है	40
नेक काम करने के बाद उसका पूरा करना ज़रूरी होता है	41
सुन्नत से फ़र्ज़ की कमी पूरी होती है	42
दाढ़ी के सुन्नत होने का दूसरा मतलब	43
दाढ़ी के सुन्नत होने का तीसरा मतलब	44
दाढ़ी रखने का हुक्म ह़दीस में	45

www.abulhasanalinadwi.org

हज़रत मौलाना अलीमियां रहमतुल्लाहिअ़लैहि

हज़रत मौलाना अलीमियां का नाम व नसब–

६ मुर्हरम १३२३ हिजरी '१५ दिसम्बर १९१३' को रायबरेली जिले के एक छोटे से गाँव दाइरा शाह अलमुल्लाह– जो तकिया कलाँ के नाम से मशहूर है– में पैदा हुए। सातवें दिन आपका अक़ीका हुआ और हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अन्हु के नाम पर आप का नाम ''अबुल हसन अली'' रखा गया। आप हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु की नस्ल से हैं। हिन्दुस्तान में आपके पूर्वजों में सबसे पहले कुतुबुद्दीन मुहम्मद मदनी छठी शताब्दी हिजरी में अपने बहुत से मुरीदों के साथ आए और कड़ा मानिकपुर में ठहरे। हज़रत कुतुबुद्दीन हज़रत शेख अब्दुल क़ादिर जीलानी के भतीजे और उनके खलीफ़ा थे, जो लोगों में बड़े पीर के नाम से मशहूर हैं।

आपके पिता अब्दुल हई हसनी–

आपके पिता अब्दुल हई हसनी हिन्दुस्तान के बहुत बड़े इतिहासकार और बड़े आलिम थे। आप १८ रमज़ान १२८६ में दाइरा शाह अ़ल्मुल्लाह ज़िला रायबरेली में पैदा हुए। आप बचपन से ही बहुत ही सीरियस और चुप स्वभाव के थे, न किसी से लड़ाई झगड़ा करते न किसी का दिल दुखाते। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा आपके ननिहाल हंस्वा ज़िला फतेहपुर में हुई। फिर जब ददिहाल में रहने लगे तो अरबी ग्रामर (सर्फ व नह्व) की किताबें शाह ज़ियाउन्नबी हसनी से पढ़ीं, यहां पर आपने कुछ दिन इंग्लिश भी पढ़ी थी। आपने कुछ महीने फतेहपुर में ठहरकर मौलाना नूर मुहम्मद से फिक़्ह की एक किताब पढ़ी। १३१० हिजरी में पिता श्री फखरुद्दीन साहब के पास भोपाल गए वहां कुछ लोगों से पढ़ने के बाद आपने लखनऊ में शिक्षा प्राप्त की, उसके बाद आप दोबारा भोपाल गए शेख हुसैन बिन हुसैन यमानी से हदीस पढ़ी और उनसे हदीस की

www.abulhasanalinadwi.org

इजाज़त ली।

आपने अपने पढ़ाई ही के ज़माने मे हज़रत फज़्ल रहमान गन्ज मुरादाबादी से बैअ़त कर ली थी। लेकिन उनसे ज़्यादा फाइदा आप नहीं उठा सके, आपको आपके ससुर शाह ज़ियाउन्नबी और पिता श्री फखरुद्दीन साहब से ज़्यादा फाइदा उठाने का मौक़ा मिला।

आप अपनी पढ़ाई के ही ज़माने में "दारुलउलूम" के शुरुआती जलसों व कान्फ्रेंसो में शामिल हुए। १३१३ हिजरी मे आप मुआ़विन नाज़िम (सहायक प्रबन्धक) बने और इसी हैसियत से आप बहुत दिनों तक दारुल उलूम नदवतुलउलमा की मुफ्त सेवा करते रहे। लेकिन मिम्बरों के बार—बार कहने पर आप तन्ख्वाह लेने लगे थे। दस साल तक ऐसे ही चलता रहा फिर आप अपनी रोज़ी रोटी के लिए अपना मतब्ब (डिस्पेन्सरी) चलाने लगे थे और वेतन लेना बन्द कर दिया था। १३ अप्रैल १९१५ ई० को मौलाना मुहम्मद अली मूंगेरी प्रबन्धक दारुल उलूम नदवतुलउलमा के इस्तीफे के बाद आप दारुलउलूम के प्रबन्धक बनाए गए। आप अचानक १५ जमादिउल १३४१ हिजरी (२ फरवरी १९२३ ई०) में इस दुनिया से चल बसे। आप बहुत बड़े लेखक थे। आपने बीसों किताबें लिखी हैं जिनमें "नुज्हतुल खवातिर" सबसे अहम समझी जाती है। इसमें हिन्दुस्तान के साढ़े चार हज़ार उलमा व औलिया की जीवनी आपने लिखी है। मौलाना अब्दुलहई साहब ने दो शादियां की थीं, पहली बीवी सय्यद अब्दुल अज़ीज़ साहब हंसवी फतेहपुरी की बेटी ज़ैनब थीं, जिनसे डाक्टर अब्दुल अ़ली साहब पैदा हुए। डा० साहब के पैदा होने के पाँच साल बाद ही वह अल्लाह को प्यारी हो गई थीं। फिर आपने शाह ज़ियाउन्नबी की बेटी खैरुन्निसा से निकाह किया उनसे हज़रत मौलाना अ़ली मियां, अमतुल्लाह तस्नीम और अमतुल अजीज़[1] पैदा हुईं।[2]

१. मौलाना सानी साहब और दारुलउलूम नदवातुलउलामा के प्रबन्धक व मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के वर्तमान अध्यक्ष मौलाना मुहम्मद राबेअ़ साहब और नदवातुल उलमा के मुअतमद तअलीमात मौलाना वाज़ेह साहब उन्हीं के लड़के हैं। २. हज़रत मौलाना अलीमियाँ ने "हयात अब्दुल हई के नाम से आपकी जीवनी लिखी है।

www.abulhasanalinadwi.org

हज़रत मौलाना अली मियां की माँ—

आपकी माँ का नाम खैरुन्निसा है। उनका जन्म १२९५ हिजरी मुताबिक १८७८ ई० में हुआ। आप अपने ज़माने की बड़ी नेक, पाकदामन, और अल्लाह से डरने वाली, परहेज़गार औरत थीं। उनके पिता शाह ज़ियाउन्नबी खुद बड़े बुजुर्ग और आलिम थे। इसलिए उनकी शिक्षा पिता के पास हुई। उन्हीं से आपने कुरआन का अनुवाद और दूसरी किताबें पढ़ीं। उस खानदान की यह सबसे पहली औरत हैं जिन्होंने पूरा कुरआन याद किया था। रमज़ान में यह लोग "सूरः अलमतरा" से तरावीह की नमाज़ पढ़ा करती थीं। उनके पिता तहज्जुद पढ़ने के लिए मस्जिद जाते तो यह अपनी माँ के साथ घर में तहज्जुद पढ़तीं थीं।

जब आप शादी की उम्र को पहुंची तो आपके निकाह के पैग़ाम व सन्देश आने लगे। लेकिन शाह ज़ियाउन्बी की नज़रों में कोई जमता न था। इसी बीच मौलाना अब्दुल हई साहब की पहली बीवी का देहान्त हो गया, उस समय आपकी उम्र ३३ साल थी, आपने दूसरी शादी न करने का फैसला कर लिया। लेकिन आपके पिता फखरुद्दीन साहब के हुक्म पर आप शादी करने के लिए तय्यार हो गए और शाह साहब के यहां निकाह का पैग़ाम भेज दिया गया। लेकिन मौलाना के यहां ग़रीबी बहुत थी, फिर दूसरों पर सब खर्च कर देना आप की आदत थी, इसलिए शाह साहब की पत्नी को इसमें बहुत संकोच था। लेकिन इसी बीच हज़रत मौलाना की माँ खैरुन्निसा बेग़म ने कुछ ऐसे सपने देखे जिसमें इस पैग़ाम के क़बूल करने की तरफ इशारे थे। चुनान्चे अब्दुल हई साहब का पैग़ाम स्वीकार कर लिया गया और हज़रत अब्दुल हई साहब का निकाह खैरुन्निसा से हो गया। आप मौलाना अब्दुल हई के यहां जिस समय आईं वह फक़्र व फाक़ा का ज़माना था। लेकिन आपके मश्वरे से कुछ दिन बाद मौलाना अब्दुल हई साहब मतब्ब (डिस्पेन्सरी) चलाने लगे थे, जिससे यह तकलीफ दूर हो गई थी। आपने अपने सौतेले बेटे अब्दुल अ़ली का ऐसा ध्यान रखा कि वह

www.abulhasanalinadwi.org

अपनी सगी और सौतेली माँ में अन्तर न कर सके।

जिस समय हज़रत अब्दुल हई साहब का देहान्त हुआ उस समय हज़रत मौलाना अली मियां की उम्र ९ साल थी। आपकी माँ हज़रत मौलाना सय्यद अजीज़ुर्रहमान साहब की इयादत के लिए गई हुई थीं। हज़रत मौलाना अली मियां साहब उनको लेने गए जब वह घर आईं और उन्हें पति के अचानक मौत की खबर मिली तो सज्दः में गिर पड़ीं और फ़रमाया जो होना था हो चुका। वह कहती हैं कि यह मुसीबत मेरे लिए क़ियामत से कम न थी, मैं नहीं कह सकती कि यह दिल दिल की शक्ल मे कैसे रह गया बस यह कहना चाहिए कि अल्लाह तआला का यह हुक्म मेरे लिए मौत व मुसीबत नहीं बल्कि उसकी रहमत का ज़रिया (माध्यम) था। अब्दुल हई साहब की मृत्यु के बाद मौलाना अली मियां ही हज़रत खैरुन्निसा के लिए सब कुछ थे। अब वह उनके लिए दिन रात दुआएं किया करती थीं। बल्कि यह कहना चाहिए कि उनकी सारी ज़िन्दगी ही दुआ थी और यह दुआंए केवल मौलाना अली मियां के लिए थीं। वह गर्मी में ढाई बजे और जाड़ों में तीन बजे से, जबकि रमज़ान में गर्मी में एक बजे से और जाड़ों में डेढ़ बजे से तहज्जुद के लिए उठ जाती थीं और लम्बी–लम्बी सूरतें नमाज़ में पढ़ती थीं और इतना रोती थीं कि आँसुओं से मुसल्ला (जिस पर बैठ कर नमाज़ पढ़ते हैं) भीग जाता। तहज्जुद पढ़ने के बाद फ़ज्र की नमाज़ तक अल्लाह के ज़िक्र में लग जातीं, फिर फ़ज्र की नमाज़ के बाद "तस्बीहात" पढ़तीं, इशराक़ की नमाज़ पढ़ने के बाद नाश्ता करतीं और फिर कुरआन पढ़ने बैठ जातीं और घर के कुछ काम काज में भी हाथ बटातीं फिर चाश्त की नमाज़ के बाद "मुनाजातें" (ईश प्रार्थना) लिखना शुरु कर देतीं, फिर ज़ुहर का खाना खाकर कुछ देर आराम करतीं, फिर अज़ान से एक घण्टा पहले उठ जातीं और तस्बीह पढ़ने लगतीं, ज़ुहर की नमाज़ के बाद सूरः फत्ह और सूरः नबा पढ़ती फिर अस्र तक तस्बीह पढ़तीं, अस्र की नमाज़ पढ़ने के बाद मग़रिब तक कुरआन पढ़तीं। आपका यह मअ़मूल (रुटीन) ज़िन्दगी के आखिरी क्षणों तक रहा, आप

www.abulhasanalinadwi.org

की उम्र ९० साल हो गई थी आँखों से दिखाई न देता था लेकिन फिर भी आप अपने मअ़मूलात पूरी करती रहीं। आपकी मृत्यु १९६८ ई० में रायबरेली में हुई, हज़रत मौलाना अली मियां ने नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई।[१]

आपके बड़े भाई सय्यद अब्दुल अ़ली–

हज़रत मौलाना अ़ली मियाँ केवल ९ वर्ष के ही थे कि उनके पिता का देहान्त हो गया था। उसके बाद आप की तअ़लीम व तर्बियत की पूरी ज़िम्मेदारी डाक्टर अब्दुल अ़ली साहब ने उठाई।

डाक्टर साहब १८९३ ई० में अपने ननिहाल हंस्वा ज़िला फतेहपुर में पैदा हुए। आपने शुरु में हज़रत रशीद अहमद गंगोही के शागिर्द (छात्र) हज़रत अब्दुल हकीम साहब से पढ़ा। आठ वर्ष की उम्र में जब माँ परलोक सिधार गई तो आप का पालन पोषण आपकी नानी ने किया। जब १९०४ में मौलाना अब्दुल हई ने दूसरा निकाह कर लिया तो आप मौलाना अली मियां की सगी माँ और अपनी सौतेली माँ खैरुन्निसा के पास रहने लगे। दारुल उलूम नदवा के अध्यापकों से आपने अपनी शिक्षा पूरी की। फिर उसके बाद हज़रत शेखुल हिन्द महमूदुल हसन साहब से बुखारी व तिर्मिज़ी और अ़ल्लामा अनवर शाह कश्मीरी से अबूदाऊद पढ़ी। देवबन्द से वापसी के बाद पिता श्री हकीम अब्दुल हई से तिब्ब (डाक्टरी) की किताबें पढ़ीं। फिर आपने कालेज की शिक्षा की तरफ़ ध्यान दिया और B.S.C. फाइनल में पूरे केनिंग कालेज में प्रथम और इलाहाबाद यूनीवर्सिटी में दूसरी Position प्राप्त की। लेकिन कालेज में पढ़ने के कारण आपके अन्दर धार्मिक हुक्मों के पालम में कोई कोताही नहीं हुई। एक बार इम्तिहान के समय नमाज़ का वक्त हो गया तो वहीं अपनी शेरवानी बिछाकर नमाज़ शुरु कर दी तो उनसे एक अंग्रेज़ प्रोफेसर ने कहा "मिस्टर हसनी अगर हमें पता होता तो हम आपके लिए मुसल्ला (जिस पर बैठ कर नमाज़ पढ़ते हैं) का इन्तिज़ाम कर देते।" १९२० में मेडीसिन की प्राप्ति के लिए किंग जार्ज

---

१. ज़िक्र खैर के नाम से हज़रत मौलाना अ़ली मियां ने अपनी माँ की जीवनी लिखी है।

www.abulhasanalinadwi.org

मेडिकल कालेज-- जो आज यूनिवर्सिटी है-- में एडमीशन लिया। इसी बीच हकीम अब्दुल हई साहब की वफात (मृत्यु) हो गई। हकीम साहब की मौत के बाद आप १९२३ में दारुल उलूम के मिम्बर, फिर १९२८ में नाइब नाज़िम (सहायक प्रबन्धक) और १९३१ में दारुलउलूम नदवतुलउलमा के प्रबन्धक बने और बराबर १९३१ से लेकर १९६१ ई० तक इस पद पर विराजमान रहे।

१९५८ ई० में आप दारुल उलूम देवबन्द के कमेटी के मिम्बर बने और जीवन के अन्तिम क्षण तक आप उसके मिम्बर रहे।

आप दूसरे धर्मों के मानने वालों को इस्लाम से परिचित क़राने और उसकी तब्लीग़ (प्रचार व प्रसार) में बड़ी दिलचस्पी लेते थे। आपने डा० अम्बेडकर को इस्लाम की दअ़वत देने के लिए अपने छोटे भाई अ़ली मियां को भेजा था।

आप इसी के साथ मुसलमानों के सुधार के लिए चलने वाली तहरीकों (आन्दोलनों) को बहुत पसन्द फरमाते थे। आप हज़रत मौलाना इलयास साहब कान्धलवी की कोशिशों को बहुत सराहते थे। आप मर्कज़ निज़ामुद्दीन भी कुछ दिनों के लिए गए थे जिससे हज़रत मौलाना इलयास साहब को बड़ी खुशी हुई थी। १९६१ ई० में आपको दिल का दौरा पड़ा और आप इस दुनिया से चल बसे। हज़रत मौलाना अलीमियां उस समय सहारनपुर में थे इसलिए आपके जनाज़ा में न पहुंच सके। हज़रत मौलाना अब्दुश्शकूर फारुकी ने लखनऊ में और मौलाना मन्ज़ूर नोअ़मानी ने रायबरेली में आपकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई।

आप बहुत ही खूबसूरत व हसीन, और बहुत नेक थे। आपके हम उम्र, सहपाठी आपको फरिश्ता कहते थे। आप अपने पिता के बहुत ही फरमाबरदार और आज्ञा का पालन करने वाले थे। एक बार किसी प्रोग्राम में हज़रत अब्दुल

हई साहब अपने स्थान पर अब्दुल अ़ली साहब को भेजना चाह रहे थे। उस बीच आपके इम्तिहान हो रहे थे लेकिन अब्दुल हई साहब को यह बात याद न थी आपने उन्हें उस प्रोग्राम को अटेण्ड करने को कहा। आप बिला झिझक वहां जाने को तय्यार हो गए। लेकिन हकीम साहब के किसी दोस्त ने उनसे बताया कि उनका इम्तिहान हो रहा है तो मौलाना अब्दुल हई ने उनको वहां जाने से सख़्ती से रोका।[1]

मौलाना अलीमियां का बचपन—

हज़रत मौलाना अभी १ साल और कुछ महीने ही के थे कि १९१५ ई० में बहुत ज़बरदस्त तूफान आया, जो तूफ़ाने नूह का एक नमूना था, ३०० वर्ष के तकिया के इतिहास में यह सबसे बड़ा तूफान था। लेकिन कोई जानी व माली नुकसान नहीं हुआ। हज़रत मौलाना के यहां जो बहुत क़ीमती हाथ की लिखी हुई पुरानी किताबें, दस्तावेज़, फरामीन (आदेशपत्र) आदि थे, सब महफ़ूज़ रहे और उन्हें दूसरी जगह पहुंचा दिया गया। फिर आप का परिवार लखनऊ में आपके पिता अब्दुल हई के दोस्त सय्यद नवाब नूरुलहसन खां के बुलाने पर उनके खानदान की कोठरी में ठहरा। फिर आप लोग मौलाना अब्दुल हई साहब के उस मकान में—जिस में आप मतब्ब (डिस्पेन्सरी) करते थे—रहने लगे।

इससे छोटा तूफान उस समय आया था जब कि आपकी उम्र सात साल की थी। आप लोग तकिया से क़रीब के गाँव मैदान पुर में चले गए थे जो आपके मामू सय्यद उबैदुल्लाह साहब की ज़मींदारी में था।

खानदान की आर्थिक स्थिति और उसके सुधार की कोशिश—

ज़मींदारी उस ज़माने में एक इज़्ज़तदार व शरीफाना कमाई का ज़रिया था, लेकिन उस समय

१. हयात अब्दुल हई के आख़िर में ज़मीमा के नाम से हज़रत मौलाना अली मियां के क़लम से हज़रत मौलाना अब्दुल अ़ली साहब की जीवनी लगी हुई है।

www.abulhasanalinadwi.org

उसमें बहुत कम फायदा होता था। इसलिए खानदानवालों ने मिलकर एक भट्टा लगाने का प्लान बनाया। ज़मीन की कमी न थी। इस तरह रेलवे लाइन के दक्षिणी दिशा में एक भट्टा लगाया गया। उसके मैनेजर हज़रत मौलाना के चाचा और उस्ताद सय्यद अज़ीज़ुर्रहमान साहब नदवी थे।उस ज़माने में हज़रत मौलाना सर्फ व नह्व (अरबी ग्रामर) की शुरु की किताबें पढ़ते थे। प्रतिदिन उनके पास सबक़ (पाठ्य) लेने जाते थे और उनके काम का तरीक़ा देखते थे। अब्दुल हई साहब का जिस समय देहान्त हुआ तो उन्होने कोई रुपया पैसा न छोड़ा था। लेकिन कुछ फीस उनकी राजा साहब प्रताप नय्यर पर बाक़ी थी उसी को लेकर आपके बड़े भाई अब्दुल अ़ली साहब ने भट्टे का शेयर खरीदा था। लेकिन कुछ दिनों के बाद भट्टे को नुकसान के कारण बन्द करना पड़ा। हज़रत मौलाना ने उसी की आमदनी से एक Air Gun और एक घड़ी खरीदी थी।

बचपन में किताबों का शौक़ और पहली तक़रीर–

मौलाना अ़ली मियां का घराना उलमा, व मुसन्निफीन (लेखकों) का घराना था। आपके पिता बहुत बड़े इतिहासकार व लेखक थे। चूंकि खानदानी असर बहुत ताक़तवर होते हैं जो बाद में आने वाली नस्लों में पाए जाते हैं, यहां तक कि बच्चों और बच्चियों सबमें कुछ न कुछ उसका असर ज़रुर होता है। इसलिए यह असर मौलाना अ़ली मियां और उनके घर वालों पर पड़ना ज़रुरी था। उन लोगों का पढ़ने का बेहद शौक बल्कि नशा और उससे बढ़कर पढ़ने की बीमारी थी। कोई छपी हुई चीज़ सामने आ जाए तो उसे पढ़कर ही छोड़ते थे। हज़रत मौलाना और उनके बहनों को जो जेब खर्च मिलता था उससे वह लोग किताबें खरीद लेते थे। हज़रत मौलाना अपनी एक दिलचस्प घटना लिखी है। लिखते हैं कि मेरे पास कुछ पैसे थे वह एक दो आने से ज़्यादा न थे। मैं इतना छोटा था कि मुझे यह न पता था कि बुकसेलर की दुकान पर किताब मिलती है और हर चीज़ की दुकान अलग होती है। मैं अमीनाबाद गया, घण्टाघर वाले पार्क के सामने बड़े दुकानों की जो लाइन

www.abulhasanalinadwi.org

है उसमें किसी मेडिकल स्टोर पर पहुंचा, मैंने पैसे बढ़ाए कि किताब दीजिए। दुकान पर काम करने वाले ने समझा कि किसी शरीफ घराने का भोला भाला बच्चा है, केमिस्टर की दुकान पर किताब क्या मिलती, दवाओं की सूची उर्दू में थी, उन्होंने वही बढ़ा दिया और पैसे भी वापस कर दिये मैं फूले नहीं समाता था कि किताब भी मिल गई और पैसे भी वापस कर दिए, खुशी खुशी घर पहुंचा और उससे अपने उस छोटी सी लाइब्रेरी को सजाया जिसको वालिद साहब की उन किताबों से बनाया था जो उनके लिए बेकार थीं और वह रद्दी में डाल देते थे।[१] उसी ज़माने में हज़रत मौलाना ने उर्दू में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत पर छोटी छोटी किताबें पढ़ी जो उनके दिल व दिमाग़ में रचबस गईं। जिसके पढ़ने के बाद हज़रत मौलाना को सीरत कान्फ्रेंस करने का शौक हुआ आपने छोटे बच्चों को उनके घर–घर जाकर बुलाया, हज़रत मौलाना के किसी बहन ने आपके सर पर छोटी सी पगड़ी बाँध दी। उन्हीं किताबों में से आपने कोई किताब लेकर पढ़ी। उस समय आपकी उम्र ८–९ वर्ष की थी।

तअ्लीम (शिक्षा)–

आपकी बाक़ायदा बिस्मिल्लाह मौलाना अज़ीज़ुर्रहमान साहब नदवी ने रायबरेली में कराई थी लेकिन कुरआन आपका लखनऊ में पूरा हुआ। मुहल्ले की मस्जिद के एक कमरे में पढ़ाई होती थी, आपका उसी मक्तब में एडमीशन हुआ, मस्जिद के मुअज़्ज़िन व इमाम हाफिज़ सईद साहब उस मक्तब के उस्ताद थे। जिस समय आप का कुरआन खत्म हुआ आप ७ साल के थे। उर्दू की पढ़ाई मौलाना अज़ीज़ुर्रहमान साहब के यहां शुरु हुई। वह नदवा के दफ्तर में काम करते थे, नदवा का दफ्तर उस समय गोला गन्ज में था। उर्दू के सेलेवस में ज़्यादातर मौलाना इस्माईल मेरठी की किताब पढ़ीं, जिसमें से "सफीना उर्दू" की बहुत सी नज़्में (कविताएँ) हज़रत मौलाना को याद हो गई थीं। उर्दू पढ़ लेने के बाद आपने फारसी शुरु की, "अन्जुमन हिमायतुल इस्लाम" की फारसी की पहली किताब सबसे पहले मौलाना मुहम्मद अली से

---

१. कारवाने ज़िन्दगी पृष्ठ ५९/१

www.abulhasanalinadwi.org

पढ़ी। उसी ज़माने में पिता हकीम अब्दुल हई की किताब तअ्लीमुलइस्लाम और नूरुलइस्लाम पढ़ी। उसी ज़माने में तख़्ती (स्लेट) और कागज़ पर लिखने की मश्क़ (प्रैक्टिस) की, जो उस ज़माने के सेलेबस का एक अहम हिस्सा था।

पिता का देहान्त—

२ फरवरी १९२३ को हकीम अब्दुल हई साहब की अचानक कुछ घण्टों की बीमारी के बाद मौत हो गई। उस दिन हज़रत मौलाना ही केवल उनके पास थे, उस समय आपकी उम्र ९—१० साल की थी। हकीम अब्दुल हई साहब ने वफात के कुछ पहले सन्तरे मंगवाए जब सन्तरे आ गए तो उन्होंने हज़रत की तरफ इशारा करके कहा इन्हें दे दो। हज़रत मौलाना ने उनके पैर दबाने शुरु किए, आवाज़ बन्द होने पर बहनों को परेशानी हुई। डाक्टरों ने आकर बताया कि वफात हो चुकी है और यह खबर बिजली की तरह पूरे शहर में दौड़ गई और लोगों की भीड़ की भीड़ आने लगी। कोई हज़रत मौलाना को गले लगा लेता, कोई सर पर हांथ फेरता कोई अपने पास बिठाता, उस समय आपके बड़े भाई अब्दुल अ्ली साहब मद्रास में थे।

तकिया रायबरेली का क़ियाम (निवास)—

अब्दुल हई साहब की मौत के बाद अब हज़रत मौलाना आदि का लखनऊ में ठहरने का कोई मतलब ही न था। यहां अब्दुल हई साहब ने कोई प्रापर्टी तो छोड़ी न थी इसलिए तकिया आ गए। फारसी की पढ़ाई यहां भी चलती रही, मुहम्मद इस्माईल साहब उसके उस्ताद थे, गणित पढ़ाने के लिए मास्टर मुहम्मद ज़मां साहब लोहानीपुर से आते थे।

माँ की तर्बियत में—

हज़रत मौलाना लिखते हैं ''घर में किसी बड़े के न होने की वजह से माँ ही मेरी निगरानी व देखभाल, और अख़्लाक़ी तर्बियत की

www.abulhasanalinadwi.org

ज़िम्मेदार थीं। मुझे कुरआन की बड़ी बड़ी सूरतें उन्होंने याद कराईं। अब्बा की मौत के बाद वह मेरे नखरे को दूसरी माँओं से ज़्यादा बर्दाश्त करती थीं लेकिन दो बातों में बहुत कठोर थी। एक तो नमाज़ के बारे में बिल्कुल नर्मी न करतीं, मैं इशा की नमाज़ पढ़ने से पहले सो गया तो मैं चाहे जितनी गहरी नींद सो रहा होता उठा कर नमाज़ पढ़वातीं और नमाज़ पढ़ने के पहले सोने न देतीं, इसी तरह फज्र की नमाज़ के पहले जगा कर मस्जिद भेज देतीं और फिर कुरआन पढ़ने के लिए बैठा देतीं। दूसरी बात जिसमें वह बिल्कुल नर्मी न करतीं और उन्हें ऐसा करने से उनकी मुहब्बत व लाड़ प्यार रुकावट न बनता कि अगर मै किसी नौकर के लड़के या काम काज करने वाले ग़रीब बच्चों के साथ कोई ज़्यादती या नाइन्साफी कर बैठता, घमण्ड व ग़ुरुर के साथ उनसे पेश आता तो न वह यह कि मुझसे माफी मंगवाती बल्कि हाथ तक जुड़वातीं, इसमें चाहे मुझे कितनी ही शर्म व लज्जा और बेइज़्ज़ती महसूस होती लेकिन ऐसा करवा कर ही मानतीं, उसका मुझे अपनी ज़िन्दगी में बहुत फाइदा पहुंचा, ज़ुल्म व अत्याचार, ग़ुरुर व घमण्ड से डर लगने लगा, और दूसरे के दिल को दुखाने और उसकी बेइज़्ज़ती करने को गुनाहे कबीरा समझने लगा''।[१]

लखनऊ में नवाब नूरुल हसन खां की कोठी पर क़ियाम (निवास)–

मौलाना अब्दुल हई साहब के देहान्त के बाद चूंकि उन्होंने कोई प्रापर्टी न छोड़ी थी इसलिए अब्दुल अ़ली साहब के लिए अपनी पढ़ाई को पूरा करने का मसला था लेकिन नवाब नूर हसन साहब की बेग़म और उनके लड़कों ने उन्हें अपने घर में रोका और उनके पढ़ने का इन्तिज़ाम किया। अब्दुल अ़ली साहब को जब कुछ इत्मिनान हुआ तो उन्होंने जल्दी ही हज़रत मौलाना को अपने पास बुला लिया और वह वहीं नवाब साहब की कोठी में रहने लगे। हज़रत मौलाना लिखते हैं कि उस कोठी में रहने का एक फाइदा यह हुआ कि आँखों पर से पर्दे हट गए और दौलत व हुकूमत से कभी आँख नहीं चौंधयाई इसलिए उसका बड़ा सा

१. कारवाने ज़िन्दगी पृष्ठ ८१/१

www.abulhasanalinadwi.org

बड़ा नमूना (सैम्पुल) कोठी में देख लिया। एक बार बेगम साहिबा नवाब भोपाल सुल्तान जहां यहां आई और उन्होंने हम बच्चों के सर पर हाथ रखा। नानपारा की रानी कमरज़मानी बेगम और दूसरे घरानों की बीवियां और रईस आते और मेहमान होते। सय्यद जहूरुलहसन के दोस्तों की टीम बहुत बड़ी थी। वह टेनिस के अच्छे खिलाड़ी थे, इस रिश्ते से मुस्लिम और नान मुस्लिम, लखनऊ यूनिवर्सिटी के कुछ प्रोफेसर और वकील आदि आते थे। इसलिए कालेज वालों और मालदारों को खूब देखा, अवध की तहज़ीब (सभ्यता), लखनऊ के आदाब, हुकूमत व रियासत की शान और नवाबों के ठाठ बाट सामने आए और कोई चीज़ अजनबी न रही।[१]

मौलाना अब्दुल अली साहब की निगरानी—

यहां अब्दुल अली साहब दो चीज़ों को ध्यान में रखते थे, एक यह कि अली मियां नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ते हैं या नहीं, कभी ऐसी हुआ कि मेडिकल कालेज से वापस आए—वह मग़्रिब बाद वापस आया करते थे— और पूछा ज़ुहर, अस्र और मग़्रिब की नमाज़ें पढ़ीं थीं। मौलाना ने हाँ में सर हिलाया उन्हें कुछ सन्देह हुआ तो दोबारा तीनों नमाज़ें पढ़वाईं। दूसरी यह कि कोठी के नौकरों के पास— जो बड़ी संख्या में थे— हज़रत मौलाना न बैठें और उनसे फ्री न हों और यह कि कोई नाविल आदि लेकर किसी से न पढ़ें। वह खुद किताबें सेलेक्ट करते फिर पढ़ने के लिए देते सबसे पहले उन्होंने सीरते खैरुलबशर फिर रहमतुल्लिआलमीन आपको पढ़ने को दी।

अब्दुल अली साहब ने अपने दूरदर्शिता के कारण यह समझ लिया था कि हिन्दुस्तान में फारसी का पृष्ठ उलट रहा है और अरबी का ज़माना आने वाला है। इसलिए उन्होंने मौलाना फारुक़ चिरयाकोटी की किताब ''उसूले फारसी'' के बाद आपकी फारसी की पढ़ाई बन्द करा दी।

---

१. कारवाने ज़िन्दगी पृष्ठ ८७/१

www.abulhasanalinadwi.org

अरबी शिक्षा–

अरबी भाषा की पढ़ाई १९२४ ई० के आखिर में शुरु हुई। मौलाना अब्दुल अली साहब ने मौलाना अली मियां को खलील अरब से– जो अरबी के बहुत ही कामयाब उस्ताद थे और लखनऊ यूनिवर्सिटी में अरबी पढ़ाते थे– अरबी पढ़ाने के लिए कहा। हज़रत मौलाना के केवल एक क्लास फेलो खलील अरब के छोटे भाई हुसैन थे। इधर अब्दुल अली साहब ने इंग्लिश रीडर भी शुरु कराई थी लेकिन यह पढ़ाई मात्र नाम भर के लिए थी। हज़रत मौलाना की अरबी शिक्षा की खानदान के कुछ लोगों ने आलोचना की और कहा कि उन्हें I.S.C. के लिए तय्यार करना चाहिए, तो डाक्टर अब्दुल अली साहब ने कहा कि हम अली को वही शिक्षा दे रहे हैं जो अगर अब्बा जीवित होते तो उनको देते। इस पर सबकी ज़बानों में ताले पड़ गए।

अरब साहब का अपना निजी एक सेलेवस था, जिसमें मिस्र के नए सेलेवस के किताबें शामिल थीं। कुछ ही दिनों बाद उन्होंने अरबी में बोलना ज़रुरी ठहराया, और उर्दू बोलने पर दो पैसे या एक आने का जुर्माना होता था। पाठ पढ़ाने का उनका तरीक़ा यह था कि छात्र स्वयं पूरा पाठ समझकर और पढ़ कर आएं और उन्हें सुना दें और जहां वह ग़लती करें उस पर वह उन्हें टोक दें। अरब साहब बड़े ग़ौर व फिक्र के बाद इस नतीजे पर पहुंचे थे कि एक साथ दो विषय छात्र को नहीं पढ़ाना चाहिए जिससे वह उलझ कर रह जाए। इसलिए हज़रत मौलाना को दो वर्ष तक वह केवल अरबी लिट्रेचर व ट्रान्सलेशन ही पढ़ाते रहे। जिसका फल यह निकला कि वह लोग केवल अरबी बोलते, अरबी सोचते और अरबी में लिखते थे।

उस्ताद का अदब–

एक बार हज़रत मौलाना के अंग्रेज़ी के उस्ताद खलीलुददीन हंसवी ने–जिनकी अरब साहब बड़ी इज़्ज़त करते थे– अरब साहब से हज़रत

मौलाना के किसी काम की शिकायत की जिससे उन्हें ऐसा लगा था कि मौलाना अली मियां ने उनकी बेइज़्ज़ती की है हालांकि यह एहसास केवल गलतफहमी के कारण हुआ था। हुआ यह था कि हज़रत मौलाना ने उनसे कहा कि आज मैं इस काम की वजह से नहीं पढ़ सकता हूं और दरवाज़ा ज़ोर से बन्द कर दिया था। अरब साहब पर इसका बहुत असर हुआ उन्होंने अब्दुल अ़ली साहब से इजाज़त ली की आज अली को समझाना है। उनके स्वभाव में थोड़ा तेज़ी थी इस घटना ने उनको और भड़का दिया। उन्होंने हज़रत मौलाना को खूब पीटा जो इस जुर्म की सज़ा से बहुत ज़्यादा थी। बाद में उनको एहसास हुआ कि उन्होंने कुछ ज़्यादा ही मार दिया है और इसके लिए उन्होंने माफी मांगी। धीरे–धीरे यह बात उनकी माँ खैरुन्निसा को रायबरेली पहुंची। उन्होंने हज़रत मौलाना से पूछा कि सुना है कि अरब साहब ने तुमको बहुत मारा? हज़रत मौलाना ने अपने उस्ताद खलील अरब की वकालत की और अम्मां से कहा कि मेरी ही गलती थी उन्होंने मुझे ठीक पीटा और उनकी मां चुप हो गई और बात आई गई हो गई।

उर्दू लिट्रेचर व साहित्य का मुताअ़ला (अध्ययन)–

हज़रत मौलाना ने बचपन में ही उर्दू साहित्य की बड़ी किताबें पढ़ ली थीं। रायबरेली में कभी–कभी ज़्यादा दिनों तक ठहरना होता था, उन्हीं दिनों में हज़रत मौलाना ने अल्लामा शिब्ली की किताब अलफारुक़, हुसैन अहमद की किताब "आबेहयात" अपने पिता की किताब "गुले रअ़ना" पढ़ीं।

नदवतुल उलमा का कानपुर का जलसा–

१९२६ ई० में कानपुर में नदवा का जलसा हुआ, अब्दुल अली साहब– जो उस समय उप प्रबन्धक थे– हज़रत मौलाना को अपने साथ ले गए। मौलाना की उम्र उस समय १०–१२ साल थी और आप अरबी बोलने लगे थे और एक शानदार शेरवानी पहने हुए थे, जिससे

www.abulhasanalinadwi.org

लोगों में आपका चर्चा था। डा० ज़ाकिर हुसैन— जो बाद में हिन्दुस्तान के प्रेसीडेण्ट हुए और तभी जर्मनी से पढ़कर आए थे— और मौलाना अबूअब्दुल्लाह मुहम्मद सूरती साहब ने हज़रत मौलाना को देखने की इच्छा प्रकट की, और अपने कमरे में बुलाया और कुछ सवाल भी किए जिनके उत्तर हज़रत मौलाना ने दिए। "रहमतुल्लिआलमीन" के लेखक मौलाना मुहम्मद सुलेमान मन्सूर पूरी भी उस जलसे में मौजूद थे, उन्होंने हज़रत मौलाना से कहा कि मैनें तुम्हें किताब भेजी थी। इस उम्र में मन्सूर पूरी साहब का हज़रत मौलाना के पास किताब भेजना हज़रत मौलाना की अहमियत को दर्शाता है।

खेलों में दिलचस्पी—

इसी ज़माने में हज़रत मौलाना को हाकी, फुटबाल मैच और टूर्नामेंट देखने का शौक हुआ। उस ज़माने में By Ground में बड़ी धूमधाम के टूर्नामेंट होते थे। हज़रत मौलाना लिखते हैं "इन टूर्नामेण्टों में रामलाल कप के टूर्नामेण्ट बहुत प्रसिद्ध थे। हम लोग सुबह से उसका इन्तिज़ार करते और वहां से आकर देर तक खेलने वालों पर रिमार्क होता। अब मुझे अन्दाज़ा होता है कि ऐसे शौक ध्यान लगाकर पढ़ने और ज़ेहनी यकसूई (एकाग्रता) पर कितना बुरा असर डालते हैं"।[१] हज़रत आगे लिखते हैं "यह ज़माना था जिसमें हमें न कोई दीनी शौक था और न ही किसी वली व बुज़ुर्ग की सुहबत (संग) प्राप्त थी। न भाषा व साहित्य, लिट्रेचर व खेल को छोड़ कर अन्य किसी चीज़ से दिलचस्पी थी, न शहर में कोई दीनी दअ्वत या तहरीक (आन्दोलन) थी जिसमें समय लगता और उससे कुछ फाइदा उठाया जा सकता। कभी शहर में मौलाना मुहम्मद अली, कभी मौलाना आज़ाद के आने की वजह से जलसे होते, इसी समय इन दोनों लोगों और मैलाना ज़फर अली खां को देखने और सुनने का मौक़ा मिला।[२]

---

१. कारवाने ज़िन्दगी पृष्ठ १०१/१ २. कारवाने ज़िन्दगी पृष्ठ १०२/१

www.abulhasanalinadwi.org

लखनऊ यूनिवर्सिटी में एडमीशन–

हज़तर मौलाना की उम्र कोई चौदह साल होगी कि खलील अरब– जो लखनऊ यूनिवर्सिटी में M.A. में पढ़ाते थे– के ज़ोर देने पर अब्दुल अ़ली साहब ने आपका एडमीशन लखनऊ यूनिवर्सिटी में करा दिया। जिसमें हज़रत मौलाना पहले साल एक पर्चे में फेल हो गए। इम्तिहान के स्टाफ वालों ने बताया कि अली के नम्बर इतने अच्छे थे कि अगर वह इस पर्चे में केवल पास मार्क्स भी पा जाते तो क्लास में फर्स्ट आते। अगले साल १९२९ ई० में आप क्लास में फर्स्ट डिवीज़न फर्स्ट आए, वज़ीफा भी मिला और स्वर्णपदक भी।

लाहौर का ऐतिहासिक सफर–

मौलाना के इस कामयाबी की खुशी में आपकी फूफी ने लाहौर आने की दअ़वत दी। मां और बड़े भाई के तय्यार हो जाने के बाद १९२९ ई० मे सय्यद इब्राहीम नदवी के साथ आप लाहौर गए। वहां आपके फूफा सय्यद तल्हा ने बड़े बड़े लोगों से आपको मिलवाया उस समय आपकी उम्र १६–१७ साल की थी। यहां हफीज़ जालन्धरी, अ़ल्लामा इक़बाल और मशहूर पहलवान गामा से भी भेंट की। हज़रत मौलाना ने अ़ल्लामा इक़बाल की नज़्म (कविता) चान्द का अरबी में अनुवाद किया था, अल्लामा ने उसे देखा था।

मौलाना तल्हा साहब ने ओरेन्टियल कालेज लाहौर के प्रोफेसर मुहम्मद शफीअ़ साहब से हज़रत मौलाना को मिलवाया तो उन्होंने हज़रत मौलाना के अरबी में कुछ मज़मून (निबन्ध) देखने के बाद यह मश्वरा दिय कि उन्हें अरबी ही से दिलचस्पी रखनी चाहिए जबकि दूसरे बहुत से लोग I.S.C. के लिए तय्यारी करने का मश्वरा देते थे। बाद में हज़रत मौलाना ने जब उनसे मुलाक़ात की और उन्हें उनका वह मश्वरा याद दिलाया तो वह अपने राय के सही होने पर बहुत खुश हुए।

दारुल उलूम नदवातुल उलमा में हदीस पढ़ना—

लाहौर से लौटने के बाद आप ने हज़रत हैदर हसन खां साहब से बुखारी, मुस्लिम और अबूदाऊद व तिर्मिज़ी पढ़ी और कुछ हिस्सा बैज़ावी शरीफ का भी पढ़ा और फिक़्ह मौलाना शिबली जैराजपुरी से पढ़ी।

अल्लामा तक़ीउददीन हिलाली का नदवा आना—

इन्हीं दिनों मौलाना तक़ीउद्दीन हिलाली मराक़शी नदवा आए। वह अरबी भाषा के विश्व स्तर के गिने चुने कुछ विद्वानों में से एक थे। हज़रत मौलाना ने उनसे बहुत फाइदा उठाया और कुछ किताबें उनसे पढ़ीं।

तिर्मिज़ी शरीफ के टीका कार अब्दुर्रहमान मुबारक पूरी से इजाज़त—

१९३१ ई० अल्लामा तक़ीउद्दीन के साथ मौलाना ने मऊ आज़मगढ़ के सफर किये। वहां तिर्मिज़ी शरीफ के सबसे अच्छी शरह (टीका) के लेखक हज़रत मौलाना अब्दुर्रहमान साहब मुबारक पूरी ने आपको हदीस की सनद और इजाज़त दी।

हज़रत मौलाना की पहली किताब—

मासिक पत्रिका "तौहीद" में मुजद्‌दिदे आज़म के नाम से कई किस्तों में एक मज़मून (निबन्ध) छपा था। डाक्टर अब्दुल अली साहब ने हज़रत मौलाना को उसका अरबी में अनुवाद करने का हुक्म दिया। उन्होंने उसका अनुवाद कर लिया तो तक़ीउद्‌दीन हिलाली साहब से उसको चेक कराया। उन्होंने कहा अगर चाहो तो मैं इसे रशीद रज़ा के पास "अलमनार" में छपने के लिए भेज दूं। उन्होंने न यह कि उसको अलमनार में छापा बल्कि उसको इजाज़त लेकर एक पम्पलेट के शक्ल में भी छापा। इस तरह हज़रत मौलाना का

www.abulhasanalinadwi.org

पहला पम्पलेट मिस्र से छपा उस समय आपकी उम्र केवल १६ वर्ष की थी।

अंगेज़ी की तरफ ध्यान देना और आपकी मां की परेशानी–

आपकी अंग्रेज़ी की पढ़ाई धीरे धीरे चल ही रही थी। इस ज़माने में आप पर अंग्रेज़ी शिक्षा का दौरा पड़ा और उसका बुखार इतना चढ़ा कि आपने मैट्रिक की किताबें खरीद लीं और गणित एक उस्ताद से पढ़ना शरु किया और खुद डिक्शनरी की सहायता से इण्टरमीडिएट की किताबें हल करना शरु कीं। जिससे मौलाना को बहुत फाइदा हुआ यूरोप के सफर और अपनी किताबों में आपने उससे फाइदा उठाया है। यह बात आपकी मां को पता चली कि वह दिन रात इसी धुन में लगे हुए हैं। तो आपकी मां ने यह खत लिखा "अली तुम किसी के कहने में न आओ, अगर तुम अल्लाह को खुश करना चाहते हो और मेरा हक़ देना चाहते हो उन लोगों को देखो जिन्होंने पूरी ज़िन्दगी धार्मिक शिक्षा को प्राप्त करने में लगा दी। अली! अगर मेरी १०० औलादें होती तो मैं यही शिक्षा देती अब तुम्हीं हो, अल्लाह तआला मेरी इस अच्छी नियत का फल दे कि सौ की खूबियां तुमसे मुझे मिलें।[1] इस तरह मौलाना का दिल अंग्रेज़ी शिक्षा से उचाट हो गया।

मौलाना हुसैन अहमद मदनी से सम्बन्ध–

मौलाना अब्दुल अली साहब का मतब्ब (डिस्पेन्सरी) अच्छी तरह से चलने लगा था वह हज भी कर आए थे। इसी बीच उन्होंने मदनी साहब से बैअ़त कर ली थी अब हज़रत मदनी जब भी आते तो यहीं ठहरते और मौलाना अली मियां साहब से मुहब्बत और प्यार करते थे।

लाहौर जाना और मुहम्मद ग़ुलाम पूरी साहब से बैअ़त–

१९३०–१९३१ के बीच में दो बार आप लाहौर मौलाना अहमद अ़ली साहब लाहौरी से पढ़ने

१. ज़िक्र खैर– ५३

www.abulhasanalinadwi.org

के लिए गए और पहली बार सूर: बक़र: और दूसरी बार हुज्जतुल्लाह पढ़ी। आपने इसी बीच मौलाना मुहम्मद अली से बैअ़त होना चाहा तो उन्होंने अपने पीर मुहम्मद अली दीनपुरी साहब के पास भेज दिया। हज़रत मौलाना कहते हैं "मैंने पूरे विश्व में उनसे बढ़कर किसी का चमकता हुआ रोशन चेहरा नहीं देखा"।[1] उन्होंने आपको बैअ़त कर लिया।

देवबन्द का सफर–

अगस्त १९३२ ई० में आप देवबन्द गए और मौलना मदनी के बुखारी व तिर्मिज़ी के घण्टे में आप बैठने लगे। हदीस के साथ आपने कुरआन की मुश्किल आयतों की तफ्सीर समझने के लिए मौलाना मदनी से वक्त लिया, हज़रत मदनी ने जुमा का वक़्त दिया। उसी ज़माने मे मौलाना अनवर शाह् कशमीरी ढाबेल से देवबन्द आए, आप को अस्र बाद की उनकी महफिल व मजलिस में दो तीन दिन बैठने का मौक़ा मिला।

लाहौर का सफर और मौलाना अहमद अली साहब से पूरा कुरआन पढ़ना–

१९३२ ई० में मौलाना लाहौर गए और इस बार उन्होने मौलाना अहमद अली साहब के मदरसे क़ासिमुलउलूम में एडमीशन ले लिया। जिसमें आपने पूरा कुरआन पढ़ा। इम्तिहान लेने अब्दुल हई फारुक़ी साहब लखनऊ से आए और उन्होंने आपको ७० नम्बर दिए जो सबसे ज़्यादा थे। इस पर लड़कों को एतिराज़ हुआ तो मौलाना मुहम्मद अली साहब ने खुद कापी चेक करने का ऐलान किया। सभी छात्रों के तो कुछ कुछ नम्बर बढ़ाए और हज़रत मौलाना के नम्बर उन्होंने ७० से ९८ कर दिए। १९३३ को हज़रत मदनी के हाथ से "सनद" मिली जिस पर मौलाना मदनी, मौलाना मुहम्मद अली और शब्बीर अहमद उस्मानी के हस्ताक्षर थे। हज़रत मदनी ने सनद देते वक्त जब नम्बर देखे तो फरमाने लगे

---

१. कारवाने ज़िन्दगी पृष्ठ १२८/१

www.abulhasanalinadwi.org

दो नम्बर क्यों रह गए।

दारुल उलूम नदवातुल उलमा में उस्ताद बनना--

१९३१ ई० में आप ने तक़ीउद्दीन हिलाली के साथ आज़मगढ़ व दारुल मुसन्निफीन का सफर किया। वहां यह तय हुआ कि "अज़्ज़िया" के नाम से अरबी में एक पत्रिका निकाली जाए, जिसके एडीटर मौलाना मसऊद आलम नदवी बनाए गए। आपके उसमें बराबर मज़मून (निबन्ध) छपते रहे। आपने इसी बीच दारुलमुसन्निफीन में काम करने का प्रस्ताव रखा, लेकिन जवाब मिला कि उनके लिए नदवा ज़्यादा मुनासिब है। १९३४ में अचानक हिलाली साहब ईराक़ चले गए और वहां स्थाई रुप से रहने लगे तो मसऊद आलम साहब ने ईराक जाकर उनके पास रहने का इरादा किया और एक साल की छुटटी ले ली और पत्रिका निकालने के ज़िम्मेदारी हज़रत मौलाना पर डाली, लेकिन सरकार ने उन्हें ईराक जाने की इजाज़त न दी और वह न जा सके। इसी साल नदवा के कमेटी की मीटिंग में आपका नाम उस्ताद के लिए मौलाना मसऊद अली ने पेश किया, हज़रत सय्यद सुलैमान नदवी और दूसरे मिम्बरों की रज़ामन्दी से आप नदवा के उस्ताद बन गए।

दारुलउलूम में क़ियाम (निवास) और किताबों का पढ़ाना--

आपने घण्टा लेना शुरु कर किया तो दारुलउलूम में रहने को पसन्द किया ताकि इत्मिनान के साथ पढ़ाई के लिए तय्यारी की जा सके। इसी साल आपने तिर्मिज़ी की दूसरी जिल्द और कुरआन के दस पारे और हमासा आदि किताबें पढ़ाई।

हज़रत मौलाना की शादी--

१९३४ ई० में हज़रत मौलाना की शादी शाह

www.abulhasanalinadwi.org

ज़ियाउन्नबी की पोती सय्यद तय्यिबुन्निसा से हुई। मौलाना हैदरहसन खां साहब शेखुल हदीस दारुलउलूम नदवातुल उलमा ने आपका निकाह पढ़ाया।

डाक्टर अम्बेडकर को इस्लाम की तरफ बुलाना और मुम्बई का सफर—

अभी हजरत मौलाना को दारुलउलूम में एक ही साल हुआ था। अक्टूबर १९३५ की बात है उस समय आप की उम्र २१ वर्ष की थी। डाक्टर अम्बेडकर के बारे में समाचार पत्रों मे यह समाचार आ रहे थे कि वह अपनी क़ौम हरिजनों के लिए सही धर्म की तलाश में हैं और जल्दी ही धर्मान्तरण करने वाले हैं। इसलिए डाक्टर अब्दुल अली और खलील अरब साहब ने हज़रत मौलाना को मुम्बई उन्हें इस्लाम धर्म की दअ़वत देने के लिए भेजा। सभी धर्म वाले डाक्टर अम्बेडकर को अपने धर्म में लाने के लिए उतावले हो रहे थे। हज़रत मौलाना कुछ धार्मिक किताबें व कुरआन का अनुवाद लेकर मुम्बई पहुंचे। पता पूँछ कर अम्बेडकर साहब के घर ७–८ बजे सुबह पहुंच गए, वह टहलने गए हुए थे। वेटिंग रुम में बहुत से लोग बैठे हुए थे वह जब आए तो उन्होंने हज़रत को इशारा किया और आप उनके साथ उनके रीडिंग रुम में पहुंच गए। वहां डाक्टर अम्बेडकर की मेज पर कुरआन का अनुवाद रखा हुआ था। हज़रत मौलाना ने अपनी बात यूं शुरु की, डाक्टर साहब! आप से बहुत से धर्मों के बड़े लोग मिले होंगे और उन्होंने ऊंची ऊंची बात की होगी। मैं केवल इतना कहना चाहता हूं कि अगर आपको अपनी और अपनी जाति व ब्रादरी के नजात की फिक्र है तो मैं पूरे इत्मिनान और निष्पक्षता के साथ आपको इस्लाम की तरफ बुलाता हूं और उसके लिए कोई रिश्वत, लालच नहीं देता। उन्होंने जवाब दिया यह बहुत ही सीरियस मैटर है मैं पढ़ भी रहा हूं और ग़ौर व फिक्र भी कर रहा हूं इसके बाद ही कोई फैसला करुंगा। हज़रत मौलाना इस्लाम धर्म से सम्बन्धित जो इस्लामी लिट्रेचर ले गए थे उसे उन्हें देकर वापस चले आए। उसके बाद डाक्टर साहब ने अपने और अपने जाति के लिए बौद्ध धर्म को चुना लेकिन उनको अपनी ज़िन्दगी मे ही अपने इस चुनाव की गलती का एहसास हो गया था।

www.abulhasanalinadwi.org

सीरत सय्यद अहमद शहीद लिखने की शुरुआत–

हज़रत सय्यद अहमद शहीद हिन्दुस्तान को इस्लामी हुकूमत बनाना चाहते थे। मुसलमानों पर अंग्रेज़ बहुत ज़ुल्म व अत्याचार कर रहे थे, पंजाब में सिखों ने मस्जिदों को अश्वशाला बना रखा था, इस हाल में हज़रत सय्यद अहमद शहीद जिहाद के लिए उठे और उन्होंने अपने मुजाहिदीन की एक फौज बनाई लेकिन अपनों की ग़द्दारी की वजह से कामयाबी न मिल सकी। चूकिं वह हज़रत मौलाना के सलफ (पूर्वज) व खानदान के थे इसलिए हज़रत मौलाना ने उर्दू व अरबी में उनकी जीवनी लिखी है। इस किताब की शुरुआत मई १९३६ में टोंक में आपने की।

हज़रत अशरफ अ़ली थानवी की लखनऊ आमद (आगमन)–

१९३८ में हज़रत थानवी इलाज के लिए लखनऊ आए। चालीस दिन तक लखनऊ में ठहरे रहे। डाक्टर अब्दुल अली साहब जुहर व अस्र के बाद ज़रुर आपकी मजलिस (बैठक) में जाते और हज़रत मौलाना को भी साथ ले जाते थे। १० सितम्बर १९३८ को अचानक हज़रत थानवी ने कहा आपके घर जाने को मेरा दिल चाहता है और पैदल आपके मकान आए।

अल्लामा इक़बाल से आखिरी मुलाक़ात–

१९३७ ई० को हज़रत मौलाना ने लड़कियों के एक मदरसे की दअ़वत पर जलन्धर का सफर किया, फिर वहां से लाहौर गए और अपने फूफा सय्यद तल्हा के साथ अल्लामा इक़बाल से मिलने गए। अल्लामा बहुत बीमार थे लेकिन उन्होंने फिर भी आपसे घण्टों बात चीत की। हज़रत मौलाना की अल्लामा इक़बाल से यह अन्तिम भेंट थी, इसके पांच छः महीने बाद उनका देहान्त हो गया। हज़रत मौलाना अली मियां इक़बाल से बहुत मुतास्सिर (प्रभावित) थे, क्यों कि उनकी कविताओं में बुलन्द हौसलगी

(महत्तवकांक्षा) मुहब्बत व ईमान है और वह यूरोपीय संस्कृति के बहुत बड़े बाग़ी और उसके आलोचक थे और कौमियत व वतनियत (देशभक्ति) आदि के बड़े विरोधी और इन्सानियत व इस्लाम के बड़े दाओ़ी व प्रचारक थे।

अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के दीनीयात के डिपार्ट के लिए एक किताब का लिखना—

१९३८ ई० में अलीगढ़ यूनिवर्सिटी के दीनीयात के डिपार्ट के अध्यक्ष सय्यद सुलेमान अशरफ की तरफ से समाचार पत्रों में यह ऐलान छपा कि यूनिवर्सिटी के B.A. के क्लास के लिए एक ऐसी किताब की ज़रुरत है जिसमें अक़ीदा (आस्था) ज़रुरी मसाइल, रसूलुल्लाह की सीरत और इस्लामी इतिहास की ज़रुरी बातें आ जाएं। जो किताब चुन ली जाएगी उसके लेखक को ५०० रु० इनआम दिया जायेगा। हज़रत मौलाना की किताब चुन ली गई और आप को ५०० रु० इनआ़म मिले, जिसकी मुबारकबाद सय्यद सुलेमान नदवी साहब ने आपको दी। आपको इस किताब से सम्बन्धित कुछ गुफ्तगू (वार्तालाप) करने के लिए अलीगढ़ आने की दअ़वत दी गई, आप लगभग वहां दो महीना रहे।

सीरते सय्यद अहमद शहीद का छपना और उसका हाथों हाथ लिया जाना—

१९३९ ई० में आपकी यह किताब छपी, हज़रत मौलाना की उम्र उस समय केवल २४—२५ साल की थी। उस पर हज़रत सय्यद सुलेमान साहब ने मुकद्दिमा लिखा था, यह किताब हाथों हाथ ली गई और बडी कद्र की निगाह से देखी गई।

पत्रिका "अन्नदवा" का सम्पादन—

पत्रिका "अन्नदवा" दो बार निकलकर बन्द हो चुकी था। तीसरी बार १९४० ई० हज़रत सुलेमान साहब नदवी ने जब उसे

निकालना चाहा तो उसके सम्पादक हज़रत मौलाना और अब्दुस्सलाम क़िदवई नदवी बनाए गए। लेकिन पैसे की कमी के कारण फिर उसे १९४२ में बन्द कर देना पड़ा।

मदरसों के लिए नए सेलेवस की किताबों का तय्यार करना—

हज़रत मौलाना ने नए सेलेवस की किताबें "मुख़्तारात" "कससुन्नबीयीन" और "अलक़िरातुर्राशिदा" आदि लिखीं। जो हिन्दुस्तान की इलाहाबाद, लखनऊ, अलीगढ़ बल्कि अरब देशों के यूनीवर्सिटी के सेलेवस में शामिल की गईं। यह बहुत बड़ी बात है कि अरबी साहित्य व लिट्रेचर पर एक हिन्दुस्तानी की किताब अरबी यूनीवर्सिटियों में पढ़ाई जाए, लेकिन हिन्दुस्तान के बहुत से मदरसों ने उन्हें अपने यहां के सेलेवस में शामिल नहीं किया।

मौलाना मन्ज़ूर नोअ़मानी से पहली मुलाक़ात—

हज़रत मौलाना की मौलाना मन्ज़ूर नोअ़मानी साहब से पहली भेंट (मुलाक़ात) उस समय हुई जब कि वह दारुल मुबल्लिग़ीन में पढ़ाते थे। हज़रत मौलाना को मुहम्मद सईद नसीराबादी ने मौलाना से एक दअ़वत में मिलाया था। स्वभाव और बहुत सी बातों में एक सोंच व फ़िक्र रखने की वजह से दोनों में जल्द ही दोस्ती हो गई। हज़रत मौलाना की किताब सय्यद अहमद शहीद जब छप कर आई तो आपने उसे मौलाना मन्ज़ूर नोअ़मानी को गिफ्ट भेजा। मौलाना नोअ़मानी ने किताब पढ़ने के बाद आपको लिखा कि कुछ करने का इरादा है? हज़रत मौलाना ने कहा हां। तो मौलाना नोअ़मानी रायबरेली आए फिर यहां से आप दोनों ने सफर किया। सबसे पहले लाहौर में अहमद अली साहब के यहां ठहरे। इसी सफर में हज़रत मौलाना की मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी से पहली मुलाक़ात हुई। यह अगस्त १९३९ ई० की बात है। वहां अब्दुल वाहिद साहब से भेंट के बाद यह बात तय

पाई कि पहले दीनी व धार्मिक आन्दोलनों और उनके मर्कज़ों व गढ़ों का सफर तय किया जाए। और अगर वहां कोई ऐसा आन्दोलन व मेहनत हो जिसको अगर तरक्की दी जाए तो वह इस ज़माने की ज़रुरत को पूरा कर सके तो उसको तरक़्क़ी दी जाए। इसके लिए सहारनपुर, रायबरेली, देहली, देवबन्द और थाना भवन के सफर का प्रोग्राम बनाया गया।

दीनी मर्कज़ों (केन्द्रों) का दौरा–

१९३९ ई० के आखिर में आपने अपना ऐतिहासिक सफर प्रारम्भ किया। सबसे पहले सहारनपुर पहुंचे, वहां उस समय शेखुल हदीस मौलाना ज़करिया मौजूद न थे इसलिए थोड़ी देर रुक कर आप लोग रायपुर चले गए। वहां आपकी मौलाना अब्दुल क़ादिर रायपुरी से मुलाक़ात हुई। आपने मश्वरा दिया कि आप लोग पहले हज़रत मौलाना इलयास साहब के काम को देखें अगर इत्मिनान हो तो उस काम में लग सकते हैं। रायपुर से आप लोग दिल्ली पहुंचे। हज़रत मौलाना इलयास और उनके दीनी तहरीक (आन्दोलन) के सम्बन्ध में एक बहुत ही शानदार व ताक़तवर निबन्ध मौलाना मौदूदी "एक दीनी तहरीक" के नाम से आपने पर्चे "तर्जुमानुल कुर्आन" में लिख चुके थे। जिससे हज़रत मौलाना बहुत प्रभावित थे। दिल्ली पहुंच कर मौलाना नोअ़मानी को पत्नी की बीमारी की वजह से लौटना पड़ा। हज़रत मौलाना अपने इस सफ़र के बारे में लिखते हैं "इस सफर में हमने जो सबसे हैरत अंगेज़ चीज़ देखी और जिससे हमको बड़ी खुशी हुई वह मेवात के क्षेत्र में हज़रत मौलाना इलयास साहब का दीनी काम है। हमने जो कुछ देखा वह बीसवीं सदी का दृश्य न था बल्कि पहली शताब्दी हिजरी का नक्शा मालूम होता था। रसूलुल्लाह (सल्ल०) के नबी बनाए जाने के बाद लोगों के आत्मा परिवर्तन और उनकी इस्लाह (सुधार) व तब्लीग़ (प्रचार व प्रसार) और पहली सदी हिजरी के नए मुसलमानों के शौक व उत्सुकता के बारे में जो किस्से हमने उनकी जीवनियों में और इस्लामी

www.abulhasanalinadwi.org

इतिहास में पढ़े थे, गुड़गांव की जामा मस्जिद और कस्वा नूह और शाहपुर की गलियों में उसकी एक झलक देखी''।[१]

जमाअ़ते इस्लामी का मिम्बर बनना और उससे अलग होना—

हज़रत मौलाना ३४.—३५ हिजरी से मौलाना मौदूदी का पर्चा तर्जुमानुल कुरआन पढ़ रहे थे, जिसका असर उनके लेख में भी पड़ा है। ४० हिजरी में मौलाना मौदूदी से पत्रों का आदान प्रदान शुरु हो चुका था। ३१ अगस्त १९४० को उन्होंने एक खत में अपनी किताब "पर्दा" के अरबी में अनुवाद का इन्तिज़ाम करने की इच्छा की थी। मौलाना मौदूदी से आपकी दूसरी भेंट उस समय हुई जब वह उस कमेटी में भाग लेने के लिए आए थे जो इस्लामी कानून का खाका (रुपरेखा) तय्यार करने के लिए नदवतुलउलमा में हो रही थी। ५ जनवरी १९४१ को वह लखनऊ आए और नदवा के मेहमान खाना में ठहरे। १९४१ के शुरु में हज़रत मौलाना जमाअत इस्लामी के मिम्बर बन गए और आपको लखनऊ की जमाअत का ज़िम्मेदार बनाया गया। मौलाना मौदूदी जमाअ़त वालों की ख्वाहिश पर पुनः लखनऊ आए और उन्होंने हज़रत मौलाना की फरमाइश पर अपना एक मक़ाला (निबन्ध) "नया तअ़लीमी निज़ाम" के नाम से नदवा के छात्रों के सामने पढ़ा। हज़रत मौलाना ४२ हिजरी में जमाअत इस्लामी की मीटिंग को अटेण्ड करने के लिए लाहौर गए। उस समय मौलाना मौदूदी के कुछ तहरीरों (लेख) पर बड़े बड़े मशहूर उलमा ने कुछ एतिराज़ किए थे और उनके विरुद्ध मुहिम छेड़ रखी थी। इसलिए उस मीटिंग में यह प्रस्ताव रखा गया कि मौलाना जमाअत इस्लामी की अध्यक्षता से इस्तीफा दे दें और मौलाना अमीन अहसन इस्लाही साहब को अध्यक्ष बनाया जाए। हज़रत मौलाना लिखते हैं "जमाअत इस्लामी के इतिहास और उसकी ज़िन्दगी में यह बहुत अहम मरहला (मन्ज़िल) था, मेरा वोट इसमें मौलाना के हक़ में था............. और इसी पर फैसला हुआ''।[२]

---

१. कारवाने ज़िन्दगी पृष्ठ २४१/१। २. पुराने चिराग़ ३१०/२

www.abulhasanalinadwi.org

१९४४ में हज़रत मौलाना का दारुल इस्लाम पठान कोट जाना हुआ– जहां मौलाना मैदूदी स्थाई रुप से रहते थे– और आप मौलाना के मेहमान हुए। १९५४ में हज़रत मौलाना जब पहली बार पाकिस्तान बनने के बाद लाहौर गए तो मौलाना मौदूदी उस समय सेण्ट्रल जेल में थे इसलिए वहीं हज़रत मौलाना उनसे मिलने गए। उसके बाद १९५६ दिमश्क़ में एक कान्फ्रेंस में हज़रत मौलाना और मौलाना मौदूदी से मुलाक़ात हुई, जिसमें हज़रत मौलाना उपाध्यक्ष बनाए गए थे। मौलाना मौदूदी की फरमाइश पर हज़रत मौलाना ने उनकी दो तक़रीरों (भाषणों) का इस कान्फ्रेंस में अरबी में अनुवाद किया था। १९६४ ई० में जब मदीना की इस्लामिक यूनिवर्सिटी बनी तो हज़रत मौलाना को हिन्दुस्तान और मौलाना मौदूदी को पाकिस्तान से उसकी कमेटी का स्थाई मिम्बर बनाया गया, जिसकी मीटिंगों में आप लोगों की बड़ी लम्बी लम्बी मुलाकातें रहीं, लेकिन मौलाना मौदूदी ने ६७ ई० से घुटनों की तक्लीफ की वजह से सफर बन्द कर दिया था। आखिरी बार १९७८ ई० में मौलाना मौदूदी के घर पर लाहौर में आप दोनों मिले, उस समय हज़रत मौलाना जमाअ़त इस्लामी से अलग हो चुके थे और मौलाना मौदूदी के एक किताब की आपने आलोचना भी की थी, लेकिन इसके साथ इन दोनों बुजुर्गों के आपस में मधुर सम्बन्ध थे। हज़रत मौलाना लिखते हैं "१९४३ से मेरा जमाअ़त से सम्बन्ध नहीं रहा था, लेकिन मौलाना मौदूदी और बहुत से जमाअ़त इस्लामी के वर्करों से हमारे दोस्ताना और मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध थे और एक दूसरे के एहतिराम व इज़्ज़त मे कोई अन्तर नहीं आया था"।[1]

जमाअत इस्लामी से अलग होने के कारण–

हज़रत मौलाना लिखते हैं "कि मुझसे जब भी जमाअ़त से अलग होने के कारण के बारे में खत लिखकर पूछा गया तो मैं उसका जवाब देने से हमेशा बचता रहा, जिसकी ग़लत उद्देश्य के लिए पब्लिसिटी की जा सक़ती थी। क्यों कि आदमी के किसी

---

१. पुराने चराग़ ३१२/२ २. पुराने चराग़ ३१५/२

www.abulhasanalinadwi.org

चीज़ से इत्मिनान न होने के कारण को २ और २ चार की तरह नहीं बताया जा सकता है''।[१]

उसके निम्नलिखित कारण थे। हज़रत मौलाना लिखते हैं कि मैं तीन साल तक लखनऊ की जमाअत का ज़िम्मेदार रहा जिसमें मेरे अन्दर कुछ ऐसा एहसास पैदा हुआ जिससे मैंने जमाअत से अपने सम्बन्ध के बारे में सोचना शुरु किया।

१. मैं यह देखता था कि मौलाना मौदूदी के बारे मे जमाअ़त इस्लामी के मिम्बर व वर्कस में बड़ा गुलू (अतिश्यिुक्ति) पैदा होता जा रहा था और उनको छोड़कर किसी दूसरे मुफक्किर (विचारक), लेखक व इस्लामिक प्रचारक के बारे में कोई अच्छी सोच रखने, उन पर भरोसा करने, और उनसे फाइदा होने की सलाहियत (Guds) से हर दिन वह दूर होते जा रहे थे और ऐसा लगता था बल्कि कभी कभी यह बात मुंह पर भी आ जाती थी कि उनसे अच्छा न इस्लाम को किसी ने समझा और न पेश किया है।

२. उनमें तनक़ीदी (आलोचना) हिस्सा बढ़ता जा रहा था और बड़े बड़े उलमा और दीनी हलक़ों के बारे में उनकी ज़बानें बेलगाम हो रहीं थीं।

३. उनके दीन के शैक व अमल मे कोई तरक्की, अपने सुधार का कोई जज़्बा और अल्लाह तआ़ला के साथ सम्बन्ध को मज़बूत करने के बारे में कोई सन्जीदा कोशिश दिखाई नहीं देती थी।

हज़रत मौलाना लिखते हैं ''मेरा मुताअ़ला (अध्ययन) जितना गहरा होता जा रहा था और मेरा एहसास जितना बढ़ता गया, मेरी दिमाग़ी उलझन उतनी ही बढ़ती जा रही थी। मेरी यह उलझन पीक प्वाइन्ट पर उस समय पहुंच गई जब मेरा

१. पुराने चराग़ ३१५/२

ज़्यादा आना जाना हज़रत मौलाना इलयास साहब के यहां होने लगा। एक बार मैंने लखनऊ से मौलाना मौदूदी के पास इस दिमाग़ी उलझन का हाल लिखा और उन्हें खुद भी मेरे मौलाना इलयास साहब से गहरे सम्बन्धों का पता चला तो उन्होंने मुझे इस बारे में यकसू (एकाग्र) होने की इजाज़त बल्कि मश्वरा दिया''।[१]

हज़रत मौलाना ने कुछ कारणों से मौलाना मौदूदी की किताब ''कुरआन की चार बुनयादी इस्तिलाहें'' पर आलोचना करना ज़रुरी समझा और आपने ''अस्र हाज़िर में दीन की तफ्हीम व तशरीअ़'' के नाम से एक किताब लिखी और उसे मौलाना मौदूदी के पास १९७९ ई० में गिफ्ट भेजा।

मौलाना मौदूदी ने उसके जवाब में आपके यह पत्र लिखा ''आपकी किताब ''अस्र हाज़िर में दीन की तफ्हीम व तशरीअ़'' मिली। मैं आपका शुक्रगुज़ार हूं कि मेरे जिस चीज़ से आपको खतरा लगा उसकी आपने आलोचना की, आप इसके साथ मेरी जिन जिन चीज़ों को दीन और मुसलमानों के लिए खतरनाक या नुकसान पहुंचाने वाला समझते हों उस की भी आलोचना करें। मैंने कभी अपने को इससे बड़ा नहीं समझा कि मेरी आलेचना की जाए, न मैं इसको बुरा मानता हूं लेकिन यह बात दूसरी है कि हर बात को मैं सही मान लूं ऐसा ज़रुरी नहीं है।[२]

इसके साथ हज़रत मौलाना मौलाना मौदूदी की पूरी इज़्ज़त व एहतिराम करते थे और उनको इस्लाम का एक सच्चा सेवक समझते थे। आप लिखते हैं ''सच्ची बात यह है कि उन्होंने कालेज में पढ़ने वाली नई नस्ल पर इल्म और विचार के हिसाब से अपना गहरा और बहुत ज़्यादा असर डाला है। उन्होंने इस नस्ल के बहुत सी बेचैन रुहों, बुद्धिजीवियों और पढ़े लिखे नौजवानों को इस्लाम से करीब करने बल्कि इस्लाम का पुजारी बनाने और उसके दिल व दिमाग़ में उसका भरोसा और उस पर एतिमाद पैदा करने की बहुत बड़ी सेवा की है। जहां

१. पुराने चराग़ ३१४/२ २. पुराने चराग़ ३१७/२

www.abulhasanalinadwi.org

तक उस पढ़ी लिखी नई नस्ल का सम्बन्ध है तो उसको प्रभावित करने और उस पर असर डालने में (इस ५० साल में) कोई मुसलमान लेखक व दार्शनिक उनके जोड़ का नहीं है''।[१]

जामिया मिल्लिया की तरफ से बुलावा और वहां मक़ाला (निबन्ध) पढ़ना–

१९४२ ई०

में आपको जामिया में मक़ाला पढ़ने की दअ़्वत मिली। आपने मज़हब व तमद्दुन (धर्म और संस्कृति) के नाम से मक़ाला पढ़ा। जिसमें डाक्टर ज़ाकिर हुसैन और दूसरे बड़े लोग मौजूद थे। यह मक़ाला मौलाना सईद अहमद अकबराबादी की अध्यक्षता में पढ़ा गया था। बाद में अंग्रेज़ी व अरबी में अनुवाद हो कर लखनऊ व बेरुत लेबनान से छपा।

इन्सटीटयूट तअ़्लीमाते इस्लाम का क़ियाम (स्थापना) और दर्स क़ुरआन–

१९४३ ई०

में मौलाना अब्दुस्सलाम नदवी दारुलउलूम नदवा से अलग हो गए थे। वह लखनऊ के एक मुहल्ले में कुरआन का दर्स दिया करते थे। जिसमें शहर के बहुत से असर रखने वाले इज़्ज़तदार और यूपी हुकूमत के कुछ मुसलमान अफसर भी उपस्थित होते थे। नदवा से अलग होने के बाद उन्होंने १० मई १९४३ में "इदारा तअ़्लीमाते इस्लाम'' के नाम से एक इन्सटीटयूट की बुनयाद डाली और इसके लिए अमीनाबाद पार्क में घण्टाघर के सामने एक कमरा किराए पर लिया। मौलाना ने इस इंस्टीटयूट से कुरआन को समझाने और उसके मुतअ़ला (अध्ययन) के लिए लोगों को तय्यार करने का बीड़ा उठाया था। इसमें जुमा के दिन वह मग़िरब बाद कुरआन का दर्स दिया करते थे और हफ्ते में एक दिन हदीस के दर्स की ज़िम्मेदारी हज़रत मौलाना की थी। हज़रत मौलाना लिखते हैं "कि इस में पढ़े लिखे लोगों की इतनी भीड़ लगने लगी और दीनी सोच व दिमाग़ रखने वाले लोग उसमें इतने शौक़ से आते थे कि नीचे का हाल छोटा

---

१. पुराने चराग़ ३००/२

www.abulhasanalinadwi.org

पड़ने लगा और छत पर उसका इन्तिज़ाम किया गया। इस दर्स के वक्त अगर लखनऊ में किसी धार्मिक सोच रखने वाले मुसलमान अफसर को ढूंढा जाता तो शायद यही जवाब मिलता कि इस समय वह इदारा तअ़लीमात इस्लाम के दर्स कुरआन में होंगे। यह दर्स १९४७ तक होते रहे। १९५१ ई० में जब मैं मध्यपूर्व के सफर से वापस हुआ तो कचहरी रोड पर तब्लीग़ी मर्कज़ का निर्माण हुआ। मौलाना अब्दुस्सलाम साहब १९५१ में जामिया के दीनयात के डिपार्टमेण्ट के ज़िम्मेदार बने, वह जामिया चले गए तो यह दर्स फिर मर्कज़ में होने लगे, यहां इतनी भीड़ होने लगी थी कि लाउडस्पीकर लगाने की आवश्यकता हुई, फिर जब मैं दारुल उलूम में रहने लगा और मेरे विदेशों के लम्बे लम्बे सफर होने लगे तो यह दर्स मौलाना मन्ज़ूर नोअ़मानी साहब देने लगे थे।"

१९४३ ई० में इंस्टीटयूट के तरफ से "तअ़मीर" के नाम से एक पत्रिका निकाली गई थी, जिसके एडीटर हज़रत मौलाना और अब्दुस्सलाम किदवई नदवी थे।

हज़रत मौलाना की एक इन्क़िलाबी किताब—

१९४४ ई० में हज़रत मौलाना के दिल में यह विचार आया कि एक ऐसी किताब लिखी जाए जिसमें यह दिखाया गया हो कि मुसलमानों के ज़वाल (पतन) से विश्व पर क्या प्रभाव पड़ा, उनके उरुज (उत्थान) से इन्सानियत, कल्चर, व संस्कृति और दूसरी क़ौमों व धर्मो को क्या क्या मिला और उनकी गिरावट व पतन से उन्होंने क्या कुछ खोया। उस वक्त तक मुसलमान लेखकों का टापिक और मुसलमान इतिहासकारों व स्कालरों के ग़ौर व फिक्र का मैदान यह था कि विश्व में होने वाले परिवर्तन, विश्वयुद्ध, सल्तन्तों का पतन, साइन्सी व आर्थिक इन्क़िलाब और यूरोपीय साम्राज्य का मुसलमानों पर क्या असर पड़ा और उन्होंने क्या खोया और क्या पाया। ऐसा लगता था कि मुसलमान इतिहास के आमिल (रचयता) नहीं बल्कि

www.abulhasanalinadwi.org

दुनिया में होने वाले इन्क़िलाब का निशाना हैं। अभी तक ऐसी कोई कोशिश नहीं की गई थी कि इसको पलट कर यूं सोचा जाए कि मुसलमान इतिहास के Actor नहीं बल्कि इतिहास के रचयता और उसके Factor की हैसियत रखते हैं। हज़रत मौलाना ने इस किताब के पहले भाग में दिखाया कि रसूलुल्लाह सल्ल० के नबी बनने के पहले पूरा विश्व कैसी जाहिलियत और दरिन्दगी के हालत में था। किताब के दूसरे भाग में हज़रत मौलाना ने दिखाया है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इस्लाम की दअ़वत से कैसे लोगों की कायापलट कर दी है और जो लोग मुसलमान हो चुके थे उनकी पहली ज़िन्दगी से उनमें क्या बदलाव आया? और जो लोग अभी भी मुसलमान नहीं हुए थे उनकी ज़िन्दगी में और जो लोग मुसलमान हो चुके थे उनकी चरित्र, अख़्लाक़ में कैसा बड़ा अन्तर पाया जाता था। जिस में आपने सिद्ध किया है कि यही वह मैथड है जिस में क़ियामत तक के लिए इन्सानियत की कामयाबी है। तीसरे भाग में मुसलमानों के पतन की बड़ी दर्दनाक कहानी है जिसमें मौलाना ने पतन के कारणों का भी पता लगाने की कोशिश की है। चौथे भाग में मौलाना ने यह दिखाया है कि यूरोप ने विश्व की बागडोर कैसे आपने हाथ में ली और उसके क्या क्या प्राकृतिक कारण थे और वह क्यों कर ईसाईयत से हटकर माद्दापरस्ती (भौतिकता) में पड़ गया। इसके कौन कौन से ऐतिहासिक कारण थे। इसके बाद यह बताने की कोशिश की गई कि अब इस्लामी दुनिया अपनी खोई हुई इस इज़्ज़त को कैसे प्राप्त कर सकता है और दुनिया को कैसे इस गुमराही व पथ भ्रष्टता और उसको हलाक व तबाह होने से बचा सकता है। आखिर में अरबों को इस्लामी दुनिया की बागडोर सम्भालने और आगे लेकर चलने की दअ़वत दी गई है और उनकी कमज़ोरियों पर उंगली रखकर बताया गया है और उन्हें दूर करने के उपाय भी सुझवाए गए हैं। इस किताब का सबसे शक्तिशाली व प्रभावशाली वह भाग है जिसमें बताया गया है कि अरबों को जो कुछ मिला वह सब आप सल्ल० के द्वारा ही मिला है अगर वह इस नेअमत की नाशुक्री करते हैं और उसकी अहमियत व मूल्य का उन्हें इन्कार है और उनको अपनी जाहिलियत याद आती है और अरब

www.abulhasanalinadwi.org

वतनियत या अरब क़ौमियत में उन्हें अपनी बड़ाई दिखाई पड़ती है तो ठीक है इस नेअ़मत व गिफ्ट को वापस करके देखें उनके पास क्या रह जाता है। हज़रत मौलाना की इस किताब का नाम "माज़ा खसिरल्आलम बिइन्हितातिलमुसलिमीन" (मुसलमानों के पतन से विश्व को क्या नुक़सान पहुंचा) है। उस समय हज़रत मौलाना की उम्र केवल ३० साल थी। इस किताब की अहमियत व लोकप्रियता का इससे अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि इसके दसयों भाषाओं में अनुवाद हुए और लगभग १०० से अधिक एडिशन छप चुके हैं। मिस्र के एक बहुत बड़े आलिम अल्लामा यूसुफ अलकरजावी ने हज़रत मौलाना ने बताया कि जब हम लोग मिस्र में पढ़ते तो हम कहा करते कि "जिसने यह किताब नहीं पढ़ी वह पढ़ा लिखा आदमी नहीं है।"[1]

हज़रत मौलाना मुहम्मद इलयास साहब और उनकी तहरीक (आन्दोलन) से सम्बन्ध—

हज़रत मौलाना इलयास का नाम आप सय्यद मुहम्मद खलील साहब से सुन चुके थे और जब मौलाना मौदूदी के कलम से "एक अहम दीनी तहरीक" नाम का मज़मून (निबन्ध) निकला तो आपने उसे बार बार पढ़ा। लेकिन आपकी पहली मुलाकात मौलाना मन्ज़ूर नोअमानी और अब्दुल वाहिद साहब के साथ १९४० ई० में हुई। जब आप लोग निज़ामुद्दीन देहली बंगला वाली मस्जिद मौलाना इलयास साहब से मिलने पहुंचे तो पता चला कि मौलाना सहारनपुर किसी तब्लीग़ी जलसे मे गए हैं एक दो दिन बाद आएंगे। मौलाना एहतिशामुल हसन साहब ने— जो एक तरह से उनके दीनी काम के ज़िम्मेदार थे— वक्त से फाइदा उठाते हुए आप लोगों को कस्बा नूह ज़िला गुड़गांव के एक तब्लीग़ी इज्तिमाअ़ में भेज दिया, वहां से लौटे तो मौलाना इलयास साहब से मुलाक़ात हुई। हज़रत मौलाना लिखते हैं "वह इस मुहब्बत व गर्मजोशी से मिले जैसे वर्षों की जान पहचान थी या इन्तिज़ार में ही थे। सबसे पहली चीज़ जिसने हमको प्रभावित किया और जिसको मुझे अपनी ज़िन्दगी में पहली बार

१. कारवाने ज़िन्दगी २८१/१

www.abulhasanalinadwi.org

अनुभव हुआ था वह मौलाना की मुहब्बत और दिलों को आकर्षित करने की ताक़त थी''।[1] दूसरे तीसरे दिन मौलाना दोबारा निज़ामुद्दीन वापस आने का इरादा लेकर दारुलउलूम नदवा लौटे।

लखनऊ के आस पास के क्षेत्रों में तब्लीग़ी काम की शुरूआत और हज़रत मौलाना इलयास के खत–

हज़रत मौलाना ने जिस तरह कस्बा नूह में काम होते हुए देखा था और मौलाना इलयास साहब की बातों और निज़ामुद्दीन के माहौल से समझा था, लखनऊ आते ही उसी तरह काम शुरु कर दिया। उस समय तक हज़रत मौलाना के शहर वालों से ज़्यादा सम्बन्ध न थे, इसलिए आप अपने साथ छात्रों को लेकर निकलते और मुहल्ले मुहल्ले में घूम फिर कर, चक्कर लगा कर लोगों को कलिमा, नमाज़ और दीन की बातें सिखाते और उसकी रिपोर्ट बराबर आप हज़रत मौलाना इलयास साहब के पास भेजते थे।

मौलाना इलयास से प्रभावित होने के कारण–

अल्लाह तआला के साथ उनके मज़बूत सम्बन्ध, बहुत ज्यादा इबादत, दुआ और कुरआन की बहुत गहरी समझ व फहम और रसूल की जीवनी का आशिकाना मुताअ़ला (अध्ययन) मौलाना इलयास साहब की दअ़वत के स्रोत थे। जिसको हज़रत मौलाना ने अपने इल्म व फहम से समझ लिया था। दूसरा कारण यह भी था कि मौलाना इलयास साहब भी आप पर विषेश ध्यान देते थे। जिसकी वजह शायद यह भी थी कि उस समय तक मदरसों के पढ़ने वाले आलिम, फाज़िल उस काम से नहीं जुड़े थे, उस समय दारुल उलूम नदवा जैसी मशहूर मदरसे के उस्ताद व छात्रों का इस काम से दिलचस्पी लेना और उस काम को अपने यहां शुरु कर देना मौलाना इलयास साहब के यहा इज़्ज़त व कद्र की निगाह से देखा गया। हज़रत मौलाना लिखते हैं कि ''इस गिरोह ने मौलाना इलयास साहब से दुआएं ली जिससे न यह कि उनको फाइदा पहुंचा बल्कि दारुलउलूम में एक नया

---

१. कारवाने ज़िन्दगी २८५/१

www.abulhasanalinadwi.org

नया दीनी रंग पैदा हो गया, बल्कि एक नया पीरियड शुरु हो गया। जिसको नदवतुलउलामा की तहरीक (आन्दोलन) का इतिहासकार नज़र अन्दाज़ नहीं कर सकता''[1]

तब्लीग़ी जमाअत में निकलने से छात्रों की तर्बियत (प्रशिक्षण)—

दारुल उलूम के उस्ताद मौलाना मुहम्मद नाज़िम साहब ने भी हज़रत मौलाना के इस काम में बहुत साथ दिया। यह लोग जुमेरात के दिन अपना राशन और मौसम के हिसाब से बिस्तर लेकर पैदल मल्लहौर चले जाते जो लखनऊ से १२—१३ किमी० दूरी पर है। वहां से जुमा के दिन जमाअतें बनतीं और पास—पड़ोस के देहातों और कस्बों में जातीं। इस से छात्रों में शिष्टाचार पैदा हुआ, उनकी नमाज़ में तरक़्क़ी हुई, उन्हें तहज्जुद पढ़ने का अवसर मिला, इसके साथ बहुत से क़ीमती फायदे पहुंचे जिनमें से सादगी, लोगों से मिलने जुलने का ढंग, मेहनत करने की आदत, अपनी कमज़ोरियों का इल्म, और साधारण मुसलमानों की दीन से दूरी व जहालत का पता चलना आदि हैं। जिससे उनमें अपनी दीनी ज़िम्मेदारी का एहसास पैदा हुआ।

नदवा के प्रिंसपल इमरान खां साहब भोपाली का जमाअत में लगना—

हज़रत मौलाना हर महीना दो महीना में निज़ामुद्दीन पहुंचने लगे। जिनके सफर के खर्च ज़्यादातर आपके बड़े भाई अब्दुल अ़ली साहब उठाते थे। मेवात के दौरों और जलसों में भी आप शामिल होते इन सफरों में मौलाना इमरान खां साहब नदवी प्रिंसिपल नदवतुलउलमा साथ होते, जिसकी वजह से वह भी जमाअ़त से लगे और वह भोपाल में दअ़वत व तहरीक (आन्दोलन) के पहले दाअ़ी (प्रचारक) और वहां के इज्तिमाअ़ का कारण बने। जो हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा तब्लीग़ी इज्तिमाअ़ है।

---

१. कारवाने ज़िन्दगी २८५/१

www.abulhasanalinadwi.org

हज़रत मौलाना का शेखुल हदीस मौलाना ज़करिया से परिचय—

निज़ामुद्दीन में पहली बार हज़रत मौलाना की हज़रत शेखुल हदीस से मुलाकात हुई और उनसे परिचय हुआ। आप मौलाना इलयास साहब के भतीजे हैं। धीरे धीरे यह सम्बन्ध बढ़ते गए। मौलाना इलयास भी चाह रहे थे कि हज़रत मौलाना के शेखुलहदीस ज़करिया साहब से अच्छे तअ़ल्लुकात हों।

लखनऊ शहर में तब्लीग़ी काम और मौलाना इलयास साहब का लखनऊ का सफर—

बहुत दिनों तक यह काम केवल नदवा के छात्रों और उस्तादों तक ही सीमित रहा लेकिन धीरे धीरे शहर वाले काम से जुड़ने लगे और लखनऊ से बड़ी बड़ी जमाअ़तें निज़ामुद्दीन और मेवात जाने लगीं। जिससे इस काम में लगने वालों की ज़िन्दगी में बड़ा बदलाव और दीनी तरक्क़ी नज़र आने लगी। यहां तक कि लखनऊ वालों के दअ़वत पर हज़रत मौलाना इलयास साहब १८ जुलाई १९४३ ई० को मौलाना एहतिशामुल हसन कांधलवी, हाफिज़ फखरुद्दीन, मुहम्मद शफीअ आदि के साथ लखनऊ आए। मोती महल पुल से पहले आपने नफ्ल नमाज़ पढ़ी और अल्लाह तआ़ला से दुआएं मांगी। हज़रत मौलाना सय्यद सुलेमान नदवी भी एक दिन पहले नदवा आए हुए थे। दोनों आदमी साथ ही नदवा के मेहमान खाने में ८—९ दिन रहे। दूसरे दिन शेखुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया, मौलाना मन्ज़ूर नोअ़मानी और दूसरे उलमा नदवा में हाज़िर हुए। मौलाना इलयास साहब के नदवा के प्रबन्धक डाक्टर अब्दुल अली और अल्लामा सय्यद सुलेमान नदवी से भी अच्छे तअल्लुक़ात (सम्बन्ध) पैदा हुए। एक दिन मौलाना इलयास साहब ने हज़रत मौलाना से कहा मुझे ऐसी जगह ले चलो जहां से पूरा दारुलउलूम दिखाई दे। हज़रत मौलाना आप को दारुलउलूम की छत पर ले गए। जहां से एक तरफ नदी, दूसरी दिशा में दारुलउलूम की मस्जिद, शिबली हास्टल और दूसरी बिल्डिंगें दिखाई पड़ रही थीं। मौलाना

www.abulhasanalinadwi.org

इलयास साहब ने कहा मौलाना मैं दारुलउलूम की खिदमत करना चाहता हूं बताइये मैं उसकी क्या सेवा कर सकता हूं? हज़रत मौलाना ने कहा कि आप दारुलउलूम को वैसे ही मुहब्बत से देखें, उसकी वैसे ही सरपरस्ती करें जैसे कि आप मज़ाहिर उलूम की करते हैं, मौलाना इलयास साहब ने दारुलउलूम के लिए दुआ की और नीचे उतर आए।

इस बीच मौलाना इलयास साहब की कई बार तक़रीरें हुई लेकिन चूंकि आप की ज़ुबान में लुक्नत थी, आप हकलाते थे और आपकी दिल की बेचैनी का साथ आपकी ज़बान न देती थी इसलिए लोग पूरे तरीके से आपकी बात को समझ न पाते थे। इसलिए हज़रत मौलाना ने एक दो बार खड़े होकर उनकी बात लोगों को पूरी तरह से समझाई।

मौलाना इलयास साहब को हज़रत मौलाना पर बड़ा भरोसा था। एक दिन रात में आप निज़ामुद्दीन पहुंचे तो सुबह आपको मौलाना इलयास साहब ने नमाज़ पढ़ाने का हुक्म दिया जैसे ही आप नमाज़ पढ़ा चुके तो मौलाना ने कहा कुछ फरमाइये। हज़रत मौलाना ने कहा मेरे दिमाग़ में तो इस समय कोई बात नहीं। मौलाना इलयास साहब ने कहा आप शुरु तो करें, आपने बात शुरु की तो बहुत अच्छी बात की।

इन्हीं कारणों से मौलाना इलयास साहब हज़रत मौलाना को अपने पास बैठाते और अपने से क़रीब ही रखना चाहते थे। एक बार पास ही कहीं मर्कज़ वालों ने आपको गश्त के लिए भेज दिया। मौलाना इलयास साहब को पता चला तो आपने फरमाया एक ही आदमी तो मेरी बातें समझने वाला था, तुमने उसको भी भेज दिया, अब मै किससे बात करुं।

www.abulhasanalinadwi.org

तब्लीग़ी यात्राएं व इज्तमाआत और दारुलउलूम से इस्तीफा—

हज़रत मौलाना ने मेवात, पानीपत, करनाल, रुहतक, मुरादाबाद, बलमगढ़ आदि के सफर जमाआत के लिए किए। जब हज़रत मौलाना के यह सफर बहुत ज़्यादा होने लगे तो आपको एहसास हुआ कि इससे दारुलउलूम की पढ़ाई डिस्टर्ब होती है और इधर आपका स्वभाव भी दारुल उलूम के लगे बन्धे प्रबन्ध से उकता गया था। इसलिए हज़रत मौलाना ने सितम्बर १९४२ को दारुलउलूम से इस्तीफा देना चाहा, लेकिन आपने इलयास साहब से मश्वरा ज़रुरी समझा। मौलाना इलयास साहब ने कहा कि हमारे बड़े जब तक कमाई का कोई दूसरा दरवाज़ा न खुल जाए पहले काम के छोड़ने का मश्वरा नहीं देते। हज़रत मौलाना ने दूसरे बार उनसे कहा मौलाना इलयास साहब ने फिर वही जवाब दिया। शायद आप उनके इरादे का इम्तिहान ले रहे थे। फज्र की नमाज़ के बाद खुद पूछा मौलाना आपको दारुलउलूम से क्या मिलता है? हज़रत मौलाना ने कहा पच्चास रुपये। यह सुन कर बड़े जोश के साथ फरमाया "अजी हज़रत! ऐसे पच्चासों आपके ग़ुलामों पर न्यौछावर होंगे। यह कह कर आपने इजाज़त दे दी। हज़रत मौलाना के पास "सीरत सय्यद अहमद शहीद" के बिकने से जो रकम आई थी वह पोस्ट आफिस में जमा थी इसलिए पूरे साल पैसे की कोई तंगी न हुई। साल के अन्त में दारुलउलूम के प्रिंसिपल मौलाना इमरान खां साहब ने हज़रत सय्यद सुलेमान नदवी साहब को इस पर तय्यार कर लिया कि वह आपको कानूनन दारुलउलूम का उस्ताद बनने पर राज़ी कर लें। हज़रत मौलाना सय्यद साहब की बात को टाल न सके और दूसरी बात मौलाना के पास किताब की जो रकम थी वह भी समाप्त हो रही थी इसलिए मौलाना ने दोबारा पढ़ाना और तन्खवाह लेना शुरु कर दिया, यह दिसम्बर १९४३ ई० की बात है। लेकिन हज़रत मौलाना का यह साल बड़ी तंगी से गुज़रा और आपने ५ दिसम्बर १९४५ को नौकरी छोड़ दी और फिर कभी आपने नौकरी नहीं की।

www.abulhasanalinadwi.org

पेशावर का ऐतिहासिक सफर–

मार्च १९४४ ई० में हज़रत मौलाना को पेशावर के सीरत कमेटी के सेक्रेट्री A.R. Arshad साहब का खत मिला कि इस साल कमेटी के हर साल होने वाले कान्फ्रेंस में आपको बुलाए जाने का फैसला हुआ है। इससे पहले इस कमेटी की तरफ से मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी और कारी तय्यब साहब को दअ़वत दी जाती रही थी। लेकिन पहली बार हज़रत मौलाना और शाह मुहम्मद जअ़फर फुलवारी नदवी को बुलाया जा रहा था। हज़रत मौलाना ने पहली तक़रीर की लेकिन वह ज़्यादा जमी नहीं हज़रत मौलाना को भी इसका एहसास था। दूसरे दिन की तक़रीर असल थी, उस दिन दफ्तरों में छुटटी कर दी गई थी और हज़ारों की संख्या में मुसलमान इकटठा होकर जलसे में आए थे। हज़रत मौलाना ने ऐसी शानदार तक़रीर की कि लोग अपने चेहरों पर रुमाल डाले हुए रो रहे थे।

हाजी अरशद साहब–

यहीं हाजी अरशद साहब से हज़रत मौलाना की मुलाक़ात हुई। तक़रीर से पेशावर में एक दीनी माहौल पैदा हो गया था, हर जगह उसी तक़रीर का चर्चा था। इससे फाइदा उठाते हुए मौलाना ने तब्लीग़ी तरीक़े की दअ़वत दी, एक नई कालोनी– जिसमें बड़े बड़े अफसर व अधिकारी रहते थे– में सूबे सरहद का पहला तब्लीग़ी गश्त हुआ और उसी समय से वहां तब्लीग़ी काम की बुनियाद पड़ी। अगले ही महीने अरशद साहब निज़ामुद्दीन मौलाना इलयास साहब के पास पहुंचे और उन्हीं के होकर रह गए। उन्होंने कलकत्ता, पेशावर और फिर हिजाज़ में इस काम को बड़ी महारत व मेहनत के साथ पहुंचाया, और जापान में तो उनके हाथों इस्लाम क़बूल करने और मुसलमान होने का दरवाज़ा खुल गया। हज़रत मौलाना लिखते हैं "कि यह लिखने में कुछ मुबालग़ा (अतिशियोक्ति) नहीं कि आज जापान में इस्लाम के जितने नाम लेवा रहते बसते हैं और दीन की सेवा करते हैं उनमें से ज़्यादातर अरशद साहब की मेहनत का फल हैं"।[१]

---

१. पुराने चराग़ १७३/३

www.abulhasanalinadwi.org

कराची का सफर—

पेशावर से मौलाना अपनी किताब सीरत सय्यद अहमद शहीद के लिए नक्शा आदि लेना चाहते थे इसलिए आपने सूबे सरहद से पन्जतार और बालाकोट आदि का सफर किया। वहां से वापसी में पेशावर, लाहौर, दारुस्सलाम, पठानकोट होते हुए सहारनपुर पहुंचे। हज़रत मौलाना इस लम्बे सफर से थक चुके थे, मदरसे में आपने दोबारा डयूटी ज्वाइंन करली थी और आपको मदरसा छोड़े लगभग एक महीना हो रहा था। आप शीघ्र ही लखनऊ पहुंचना चाह रहे थे लेकिन वहीं सहारनपुर में आपको मौलाना इलयास साहब का खत मिला जिसमें आपने लिखा था कि जो जमाअ़त कराँची गई हुई है उसका एक टेलीग्राम आपके बुलावे का आया हुआ है। हैदराबाद सिन्ध में एक बड़ा जलसा होने वाला है जिसमें मौलाना किफायतुल्लाह साहब और मौलाना तय्यिब साहब आ रहे हैं, इसमें तब्लीग़ को अहमियत के साथ बताने और इस काम पर उभारने की बहुत ज़रुरत है। हज़रत मौलाना थक कर चूर हो रहे थे, दारुलउलूम भी पहुंचना ज़रुरी था लेकिन हज़रत शेख ने भी जाने का मश्वरा दिया इस तरह आप फिर वहां से कराची पहुंचे और वहां तब्लीग़ी तक़रीर भी की।

मौलाना इलयास साहब की बीमारी और वफात (मृत्यु)—

हैदराबाद और कराची का हज़रत मौलाना का यह पहला सफर था, वहां थोड़े दिन ठहर कर आप दिल्ली पहुँचे। मौलाना इलयास साहब की बीमारी बढ़ती ही जा रही थी। २१ जून को शेखुल हदीस भी पहुंच गए और अब्दुलकादिर रायपुरी साहब भी तशरीफ लाए। मौलाना इलयास साहब ने हज़रत मौलाना से यूं कहा अल्लाह तो सब कुछ कर सकता है लेकिन मेरे बचने की उम्मीद नहीं हैं। मग़िरब की नमाज़ पढ़ने के बाद आपको बुलाया और देर तक आपके बालों पर हाथ फेरते रहे। फिर पता नहीं कैसे इस कमज़ोरी की हालत में उठ कर आपके सर को चूमा और

www.abulhasanalinadwi.org

फरमाया तुम थक गए, तुम्हारा कोई मददगार नहीं। १२—१३ जुलाई की रात को उम्र भर का थका हुआ मुसाफिर जो शायद कभी इत्मीनान की नींद न सोया हो मंज़िल पर पहुंचकर मीठी नींद सो गया।

हज़रत मौलाना यूसुफ साहब का जमाअते तब्लीग़ का अमीर बनना—

हज़रत मौलाना इलयास साहब की बीमारी से वह लोग बड़े चिन्तित थे और उनको मौलाना इलयास साहब की बीमारी बहुत ही परेशानी में डालने वाली थी, जो इस दीनी काम से लगे हुए थे और इस काम की हर दिन होती हुई तरक्की उनके आंखों के सामने थी। कि मौलाना के बाद इस काम का ज़िम्मेदार कौन बनेगा और यह काम कैसे चल सकेगा। हज़रत मौलाना ने यह बात शेखुलहदीस मौलाना ज़करिया साहब से कही शेखुल हदीस ने फरमाया "अल्लाह तआला का यह तरीक़ा है कि जो लोग उसके दीन पर मरते मिटते हैं उनकी चीज़ अल्लाह तआला बर्बाद नहीं होने देता, यह बात ऐसी नहीं कि हम और आप इसका कोई इन्तिज़ाम करलें और वह हो जाए। कभी ऐसा होता है कि अचानक उसके लोगों में किसी एक में बहुत ज़्यादा बदलाव आता है और वह उस काम को सम्भाल लेता है, इस का इन्तिज़ार कीजिए और अल्लाह से दुआ भी कीजिए अगर ऐसी कोई बात नहीं हुई तो मैं मश्वरा दूंगा कि चाचा जान की क़ब्र और उनके कमरे की दीवार की वजह से यहां आने की कोई आवश्यकता नहीं है"।

मौलाना इलयास साहब ने अपनी वफात (मृत्यु) से पहले मौलाना यूसुफ साहब को अपना खलीफा बना दिया था। उनके इन्तिक़ाल (मृत्यु) के बाद उन्हीं को उत्तराधिकारी बनाया गया। जिससे उनके अन्दर वह सलाहियत और कमाल (योग्यता) पैदा हो गया जो इस काम को सही तरीक़े से मौलाना इलयास साहब के तरीक़े पर लेकर चलने के लिए ज़रुरी था।

www.abulhasanalinadwi.org

हज़रत मौलाना के सोचने का अन्दाज़–

हज़रत मौलाना लिखते हैं "कि दअ़वतों व तहरीकों (आन्दोलन) के लिए वह लोग ज्यादा फाइदेमन्द और काम के होते हैं जिनका दिमाग़ी सांचा उन्हीं दअ़वतों व आन्दोलनों से जुड़ने के बाद बनता है और उनको कोई फिक्री सफर नहीं करना पड़ता है यानी उन्हें अपने सोचने समझने का अन्दाज़ बदलने की ज़रुरत नहीं पड़ती है। लेकिन किस्मत या बदकिस्मती से मैं उनमें से नहीं था। मेरा इल्मी व फिक्री एक बैक ग्राउण्ड था मैंने ऐसी तहरीकों व आन्दोलनों के बानियों (प्रवर्तक) का अध्ययन ही नहीं किया था बल्कि उनकी जीवनियां भी मैंने लिखी थीं। इसलिए मेरे यहां बेस्ट से बेटर की खोज का सिलसिला समाप्त नहीं होता। इसलिए मेरी समझ से हर तहरीक (आन्दोलन) हर दअ़वत व मिशन और प्रत्येक इंस्टीटयूट को जो दीन की सेवा करने के लिए बने हों आगे बढ़ने, तरक्की करने, ज़िन्दगी और उनकी आवश्यकताओं क़ो जानने और जाइज़ और ज़रुरी हद तक उनको पूरा करने और ज़िन्दगी का साथ देने की कोशिश करनी चाहिए । वर्ना वह इंस्टीटयूट ज़िन्दगी व तरक्की से वंचित होकर स्थिरता का शिकार हो जाएगा और उसका फाइदा कम से कम होता चला जाएगा। मेरे यह विचार जो मेरे विशेष माहौल, मुताअ़ला (अध्ययन) और मेरे दिमाग़ी सोच के उपज हैं। उन्होंने मेरा किसी ज़माने में साथ न छोड़ा"[1] लेकिन मौलाना इलयास साहब के काम की धुन, हज़रत मौलाना से उनके सम्बन्ध और उनका अल्लाह तआ़ला की इबादत व दुआ का शौक़ आदि वह चीज़ें थीं जिससे हज़रत मौलाना के यह विचार उनके ज़िन्दगी में दबे पड़े थे। मौलाना इलयास साहब की मृत्यु के बाद फिर वह उभरने लगे। काम दूसरे देशों में फैल रहा था इसलिए मौलाना चाह रहे थे कि दअ़वत के उसूल (जिन्हें छः नम्बर के नाम से याद किया जाता है) को बाक़ी रखते हुए कुछ चीज़ों को बढ़ाना चाहिए ताकि उस तरफ पढ़े लिखे इल्मी ग्रुप को भी आकर्षित किया जा सके। लेकिन मौलाना यूसुफ साहब का दिमाग़ इसका साथ नहीं देता था। इसलिए हज़रत मौलाना ने यह फैसला किया कि दिल्ली मर्कज़ से सम्बन्ध बनाए रखते

---

१. कारवाने ज़िन्दगी ३१४, ३१५/१

www.abulhasanalinadwi.org

हुए अपने क्षेत्र लखनऊ आदि में इसको और ज़्यादा फाइदेमन्द बनाने की कोशिश करनी चाहिए।

लखनऊ की इल्मी व दीनी हल्क़ों में काम का मक़बूल होना—

१९४४ ई० से लेकर १९५३ ई० तक हज़रत मौलाना इसी तरह लखनऊ में काम करते रहे। उसके फलस्वरुप लखनऊ के बड़े बड़े वकील, अफसर, यूनिवर्सिटी व कालेज के पढ़े हुए लोग व उलमा आदि इस काम से बड़ी संख्या में जुड़ रहे थे। इसी ज़माने में लखनऊ से बिहार की पूर्वी सरहद कटिहार और पूर्निया तक और पंजाब व कश्मीर तक हज़रत मौलाना के मौलाना मन्जूर नोअ़मानी के साथ सफर हुए, वहां हज़रत मौलाना की बड़े बड़े कान्फ्रेंसों में तक़रीरें हुईं। इस ज़माने में जुमा के रात के तब्लीग़ी जलसे दारुलउलूम नदवतुलउलमा की मस्जिद में होते थे। दीनी माहौल के शौक़ीन और जमाअ़ती भाई बड़ी संख्या में अपना खाना और बिस्तर लेकर नदवा आते थे। १९५४ से यह इज्तिमाअ़ कचहरी रोड के तब्लीग़ी मर्कज़ में होने लगा।

हज़रत मौलाना की एक ग़लती—

हज़रत मौलाना के पिता की जिस समय मृत्यु हुई उस वक्त आप ९ साल के थे। आपके बड़े भाई ने उसके बाद आपको बाप का नहीं बल्कि मां का भी प्यार दिया। इसलिए आप साथ ही रहते थे, लखनऊ में मौलाना अब्दुल अली साहब से अलग रहने की बात कभी आपके दिमाग़ में भी न आई होगी। १९४६ ई० में हज़रत मौलाना ने दारुल उलूम से नौकरी छोड़ दी थी लेकिन अपने शौक से कुछ घण्टे पढ़ा दिया करते थे। लेकिन न जाने उस ज़माने में मौलाना को क्या सूझी कि मस्जिद के पास दारुलउलूम में नया नया कमरा बना था आपने कानूनी इजाज़त लेकर उसमें अलग रहना शुरु कर दिया और मां को भी आप अपने साथ लाए। यह साल आपका बड़ी तंगी

से कटा और आपके ऊपर कर्ज़ चढ़ता गया आपको इसकी कोई वजह न समझ में आई। एक दिन आपको पता चला कि आपके बड़े भाई को बहुत दुख है कि मेरे लखनऊ में रहते हुए अ़ली ने अलग रहना शुरु कर दिया। आपने अपने भाई से माफी मांगी और एक साल बाद फिर उसी पुराने घर में रहने लगे।

हज़रत मौलाना अहमद अली साहब का हज़रत मौलाना को खिलाफत देना–

हज़रत मौलाना के मौलाना अहमद साहब से बड़े अच्छे सम्बन्ध थे। १९४६ ई० में जब मौलाना अहमद अली साहब ने हज किया तो आपने मुबारक बाद का खत लिखा। उसके जवाब में मौलाना लाहौरी ने आपको लाहौर बुलाया और वहीं आपको खिलाफत दी।

हज़रत मौलाना का पहला हज और वहां तब्लीग़ी काम–

मौलाना इलयास साहब की सोच यह थी कि चूंकि मुसलमानों की दीनी ज़िन्दगी हिजाज़ से जुड़ी हुई है इसलिए इस दअ़वत व तहरीक (आन्दोलन) को हिजाज़ और वहां से पूरी दुनिया में पहुंचना चाहिए। मौलाना यूसुफ को यह सोच अपने पिता से विरासत में मिली थी, इसलिए आपने उबैदुल्लाह बलयावी साहब को हिजाज़ इस काम के लिए भेजा। वह वहां इस काम को पब्लिक तक पहुंचाने में कामयाब रहे। लेकिन इल्मी व साहित्यक हल्क़े (समुदाय) में अभी तक इस दअ़वत व तहरीक का परिचय नहीं हो सका था। उन्होंने मौलाना यूसुफ साहब को खत लिखकर हज़रत मौलाना को हिजाज़ भेजने की दरख्वास्त की। शेखुल हदीस मौलाना ज़करिया साहब के मश्वरे से यह तय पाया कि हज और दअ़वत के काम से हिजाज़ का सफर हज़रत करें। हज़रत मौलाना अपने साथ मां बीवी, और छोटी बहन को भी साथ ले गए और इनकी देखभाल के लिए मौलाना सानी साहब भी शेखुलहदीस के मश्वरे पर हज पर गए। यह छोटा सा काफिला १९ जुलाई

www.abulhasanalinadwi.org

१९४७ ई० को जद्दा पहुंचा। वहां से यह काफिला मदीना पहुंचा जहां मस्जिद नबवी के बिल्कुल पड़ोस में आप लोगों को रहने की जगह मिली। लगभग ३ महीना मदीना में रहकर २० ज़ीकअदा को इन लोगों ने हज का एहराम बांधा और मक्का के लिए निकले, हरम से बिल्कुल मिली हुई एक लाइब्रेरी थी वह आपको रहने के लिए मिल गई थी इस तरह आप हज के बाद लगभग तीन महीने मक्का में ठहरे। जनवरी १९४८ में वहीं से आप लोग हिन्दुस्तान के लिए निकले, और बम्बई के रास्ते से आप की वापसी हुई और वहीं से बड़ी एहतियात के साथ लखनऊ पहुंचे क्यों कि उस समय देश बंट चुका था और वहां दंगे और फ़साद हो रहे थे।

हिजाज़ में तब्लीग़ी काम–

हज़रत मौलाना का इस सफर का एक उद्देश्य इस दअ़वत को पढ़े लिखे इल्मी हलक़ों तक पहुंचाना था। इसके लिए आप अपना एक पम्पलेट ले गए थे। जो बहुत ही शानदार था, जिसमें अरबों को झकझोरा गया था और उन्हें उनकी ज़िम्मेदारी याद दिलाई गई थी। अब तक इस तरह का लिट्रेचर अरबों तक नहीं पहुंचा था। इस लिए इस पम्पलेट को हाथों हाथ लिया गया। इस पम्पलेट को वहां के बड़े उलमा, अफसरों मन्त्रियों और इमामे हरम को दिया गया। मस्जिदे नबवी में शेख मुहम्मद अ़ली अलहरकान हदीस पढ़ाते थे। उन्होंने हदीस की पढ़ाई को रोक कर पूरा पम्पलेट मस्जिदे नबवी में पढ़कर सुनाया। इस सफर में आपके सम्बन्ध शेख उमर बिन हसन से हुए जो वहां के चीफ जस्टिस शेख अब्दुल बिन हसन के भाई थे। उनका बड़ा असर व रौब था जिससे आपको तब्लीग़ में बड़ी मदद मिली।

अमीर सऊद के नाम एक ऐतिहासिक पत्र–

हिजाज़ में निवास के समय हज़रत मौलाना को अन्दाज़ा हो गया था कि यहां का समाज किधर जा रहा है, आपने

www.abulhasanalinadwi.org

यह महसूस कर लिया था कि शाम, मिस्र व ईराक़ जैसे आज़ाद मुल्कों के पीछे वह भी यूरोपीय देशों के पीछे चल पड़ा है। यह वह विचार थे जिनसे प्रभावित होकर हज़रत मौलाना ने अमीर सऊद के नाम एक खत लिखा जिसमें इस खतरे की तरफ आपने उनका ध्यान आकर्षित किया था और इन हकीकतों को खुलकर उसमें पेश किया गया था। यह खत शेख मुहम्मद बिन हसन ने अमीर सऊद को पढ़ कर सुनाया था। काश अगर उस समय इस पत्र के अनुसार कोई काररवाई की गई होती तो शायद आज अरब देशों का नक्शा कुछ और होता।

1456
14855

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का बंटवारा और उसके परिणाम–

हज़रत मौलाना हिजाज़ में थे, रमज़ान का महीना था, कि यहां १५ अगस्त १९४७ को हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का बंटवारा हो गया। हज़रत मौलाना और आपका पूरा घराना बंटवारे के विरोध में "जमीअते उलमा" और "मजलिसे अहरार" के साथ था। यह लोग बंटवारे को हानिकारक और मुज़िर समझते थे। लेकिन मुसलमानों के दिल बहुसंख्यकों की तंगनज़री, समप्रादायिकता और बुरे व्यवहार से दुखी थे और वह चाहते थे कि उनकी अपनी हुकूमत हो जहां वह अपनी इस्लामी ज़िन्दगी का तजुर्बा कर सकें और इस्लामी निज़ाम व प्रबन्ध की बड़ाई सिद्ध कर सकें। हज़रत मौलाना लिखते हैं "अफसोस है कि पाकिस्तान बनने के बाद इस लम्बी अवधि में इसकी कोई सन्जीदा कोशिश नहीं हुई और जिस चीज़ के लिए यह सारे नुकसान और घाटे हिन्दुस्तानी मुसलमानों ने बर्दाश्त किए थे उनकी इस शर्त और वादे को पूरा नहीं किया गया" (यानी पाकिस्तान इस्लामी हुकूमत नहीं बन सका)[१]

मुसलमानों की मायूसी और नए हालात में काम करने की ज़रुरत–

हज़रत मौलाना जनवरी १९४८ ई० के आखिरी महीने में हिन्दुस्तान पहुंचे तो यहां की

१. कारवाने ज़िन्दगी ३१४/१

www.abulhasanalinadwi.org

दुनिया ही बदली हुई थी। जो मुसलमान हिन्दुस्तान में रह गए थे वह मायूसी का शिकार थे, उनके लीडर उनको बेयारो मददगार छोड़कर चले गए थे। दूसरी तरफ बहुसंख्यक नानमुस्लिम दानिश्वर व सूझबूझ रखने वाले लोग ज़्यादातर हुकूमत के ऊंचे पदों पर थे, वह उनको ऐसे मश्वरे देते थे जैसे मुसलमान प्राइमरी में पढ़ने वाले छोटे छोटे बच्चे हों। कभी वह उनके अलग पहचान और कल्चर का मज़ाक उड़ाते थे। कभी बाहर मक्का, मदीना की ओर देखने पर उनके माथे पर बल पड़ता था, तो कभी उर्दू को हिन्दी लिपी में लिखने का मश्वरा देते थे। कभी इस पर आश्चर्य प्रकट करते कि हिन्दुस्तानी मुसलमान हिन्दुस्तान के महापुरुषों व पूर्वजों पर अपना नाम नहीं रखते और उनसे अपने आप को नहीं जोड़ते। जैसे हिन्दुस्तान व ईरान के मुसलमान प्राचीन ईरानी व अरब ऐतिहासिक व्यक्तियों के नाम जैसे रुस्तम, सोहराब, हातिमताई आदि पर अपने बच्चों का नाम रखते हैं कभी "ज़म ज़म" के पानी और खजूर से रोज़ा खोलने को सुन्नत और अफज़ल समझने पर तन्ज़ (व्यंग) करते और कहते कि हिन्दुस्तान के नदियों (गंगा,यमुना) और यहां उगने वाले स्वादिष्ट मेवों व फलों को मुसलमान ऐसा क्यों नहीं समझते।

पुरसकून वातावरण में यह एतिराज़ कोई ज़्यादा अहमियत नहीं रखते लेकिन जिन हालात से मुसलमान गुज़र रहे थे उनमें उनके यह एतिराज़ ज़ख्म पर नमक छिड़कने का काम दे रहे थे। इसमें बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन (अध्यक्ष विधान परिषद उत्तर प्रदेश) और सम्पूर्णा नन्द जी (शिक्षा मन्त्री उ०प्र० और बाद में वह मुख्य मंत्री भी बने) सबसे बढ़ चढ़ कर हिस्सा ले रहे थे। हज़रत मौलाना ने दो टूक अन्दाज़ में उन दोनों के जवाब में मज़मून (निबन्ध) लिखे जो "तअमीर हयात" और "अलफुर्कान" में छपे। हज़रत मौलाना ऐसे परिस्थितियों से निपटने के लिए २६ अगस्त १९४८ ई० को दारुलउलूम नदवातुलउलमा में एक कान्फ्रेंस बुलाई, जिसमें मुसलमानों बड़े बड़े लीडरों को दअवत दी गई थी। जिसमें हज़रत मौलाना ने अपना मक़ाला (निबन्ध) पढ़ा, उसमें हज़रत मौलाना ने यह प्रस्ताव

रखा था कि हिन्दू मुसलमानों के मिले जुले जलसों में सूझ बूझ से भरी तक़रीरें हों, हिन्दी और अंग्रेज़ी में इस्लामिक लिट्रेचर तय्यार किया जाए, साथ ही साथ वार्तालाप और डायलाग की ज़रुरत और साधारण लोगों से भी मिलकर उन्हें इस्लाम का परिचय कराने और इसके साथ इस्लामी आज़ाद कालेजों के बनाने की तरफ ध्यान आकर्षित किया गया था। जिसके बाद हज़रत मौलाना के कुछ निबन्धों का हिन्दी और अंग्रेज़ी में अनुवाद किया गया, लेकिन उस समय हिन्दू मुसलमानों की लिखी हुई कोई चीज़ न खरीदते थे। इसलिए हज़रत मौलाना ने उर्दू पर्चों में ऐलान निकाला कि मुसलमान इन पम्पलेटों को खरीद कर अपने हिन्दू साथियों को तोहफे में दें लेकिन एक आदमी को छोड़कर किसी का जवाब नहीं आया। बाद में हज़रत मौलाना ने सोचा कि इसके लिए अलग पूरा डिर्पाटमेन्ट बनया जाए। लेकिन न आपको उसके लिए कोई मुनासिब जगह मिली और न पढ़े लिखे. मुसलमानों ने इस काम की कोई सराहना की कि जिससे हिम्मत बन्धती। हज़रत मौलाना लिखते हैं "लेकिन उसकी अहमियत फायदा और ज़रुरत के बारे में न पहले कोई शक था और न अब कोई सन्देह है।"[१] बाद में हज़रत ने Academy of Islamic Resarch and Publication के नाम से मई १९५९ ई० में इस काम के लिए नदवा के अन्दर एक एकेडमी बनाई।

नदवतुल उलमा की कमेटी का मिम्बर और मोअतमद तअलीम बनना– १९४८ ई० में हज़रत मौलाना दारुलउलूम के कमेटी के मिम्बर बनाए गए। १९४९ ई० में हज़रत मौलाना को उपमोअतमद बनाया गया, फिर १९५४ ई० में मौलाना सय्यद सुलेमान नदवी मोअतमद तअलीमात की मृत्यु के बाद आप मोअतमद तअलीमात बने।[२]

हज़रत अब्दुल क़ादिर रायपुरी का हज़रत मौलाना को अपना खलीफा बनाना– हज़रत

१. कारवाने ज़िन्दगी ३४९/१ २. मोअतमद तअलीमात शिक्षा सम्बन्धी कार्यो को देखता है और यह नदवा में प्रबन्धक के बाद सबसे बड़ा पद है।

www.abulhasanalinadwi.org

रायपुरी से सबसे पहले आपकी मुलाकात १९३९ ई० में हुई थी। फिर मौलाना इलयास साहब ने मरते समय हज़रत मौलाना को उनसे सम्बन्ध बढ़ाने की वसीयत की थी, शेखुल हदीस ज़करिया साहब भी आपके पास जाने का मश्वरा देते थे। पाकिस्तान बन जाने के बाद जब लाहौर जाना मुश्किल हुआ तो आपके पीर अहमद अली साहब लाहौरी ने भी आपको अब्दुल क़ादिर साहब के यहां जाने का मश्वरा दिया और दूसरी तरफ खुद हज़रत अब्दुल कादिर रायपुरी साहब भी मौलाना से बड़ी मुहब्बत करते थे। वह सात बार लखनऊ और दो बार रायबरेली आप की दअ़वत पर आ चुके थे। १९४८ ई० में जब वह एक दिन सय्यद अहमद शहीद की मस्जिद से निकल रहे थे तो हज़रत मौलाना से आपने फरमाया मैं आपको चारों सिलसिलों विशेष कर सय्यद अहमद शहीद के सिलसिले में इजाज़त देता हूं।

हज का दूसरा सफर—

१९४९ ई० में हज़रत मौलाना को एक साहब ने हज कराने की पेशकश की। सुबह आपने टहलते समय हज़रत रायपुरी से मश्वरा लिया। उन्होंने कहा अगर मैं तुम्हें रोक दूं तो नागवारी तो न होगी? मैंने कहा नहीं हज़रत रायपुरी ने हज़रत मौलाना के चेहरे की तरफ देखा उस पर कोई असर न था, बात आई गई हो गई। जुलाई १९५० ई० को रायपुर पहुंचे तो रायपुरी साहब ने कहा मैं हज करने जा रहा हूं तुम भी मेरे साथ चलो। हज़रत मौलाना के पास हज के पैसे न थे उसका इन्तिज़ाम शेखुल हदीस ज़करिया साहब ने यूं कर दिया कि अपनी बेटी का "हज बदल" करने के लिए हज़रत को भेजा। आपके साथ आपके खर्चे पर हज़रत मौलाना के चार शार्गिद भी हज के लिए तय्यार हुए ताकि हज के बाद यह लोग वहां ठहर कर तब्लीग़ का काम करें और बड़े लोगों को हज़रत मौलाना के पम्पलेट आदि पहुंचाए। यह मौलाना राबेअ हसनी नदवी (वर्तमान प्रबन्धक नदवतुल उलमा) और डाक्टर सय्यद रिज़वान अली आदि थे।

इज़्ज़त व एहतिराम का मुबारक दिन—

कअ़बः की चाबी हज़रत उस्मान बिन तल्हा रज़ि० के खानदान में रहती है। शैबी साहब के पास इस ज़माने में कअ़बः की चाबी थी उन्होंने खुद आपको कअ़बः के अन्दर जाने की दअ़वत दी और आपसे फरमाया कि जिसे चाहें आप अन्दर ले जा सकते हैं इस तरह आपके साथ रायपुरी साहब और पूरा काफिला अन्दर गया और वहां उन लोगों ने नमाज़ें पढ़ीं। हज़रत मौलाना के कुछ साथियों और जानने वालों ने हज़रत मौलाना से शिकायत की तो दूसरे दिन हज़रत मौलाना ने शैबी साहब से कहा कि अगर दोबारा मुम्किन हो तो दूसरे लोगों को भी यह सआ़दत (भलाई) नसीब हो। शैबी ने दोबारा हरम के पुलिस के द्वारा यह इन्तिज़ाम किया और खुद वहां आए, दूसरे दिन भी हज़रत मौलाना और हज़रत रायपुरी दूसरे लोगों के साथ अन्दर गए।

२ नवम्बर १९५० को हज़रत रायपुरी हिन्दुस्तान वापस आ गए और हज़रत मौलाना वहीं रुक गए। हज़रत रायपुरी मोटर लांचर पर बैठकर जहाज़ के लिए रवाना हुए तो जब तक हज़रत मौलाना उन्हें दिखाई देते रहे आप उन्हें देखते रहे।

सऊदी रेडियो पर हज़रत मौलाना की तक़रीरें—

हिजाज़ में साहित्कारों, कलमकारों और उच्चतम शिक्षा प्राप्त लोगों से अभी तक कान्टेक्ट नहीं हो सका था। पाकिस्तानी तब्लीग़ जमाअ़त के अहम मिम्बर ज़ैनुलआ़बिदीन साहब ने हाफिज़ सय्यद महमूद से बात की जो हुकूमती प्रेस के ज़िम्मेदार थे। उन्होंने शेख अहमद अब्दुल ग़फूर अत्तार से हज़रत मौलाना का परिचय कराया। उन्होंने यह ज़िम्मेदारी ली और एक दिन अपने यहां प्रिन्ट मीडिया व इलेक्ट्रानिक मीडिया वालों और कलाकारों व साहित्यकारों को दअ़वत दी, हज़रत मौलाना भी इस दअ़वत में मौजूद थे। उन लोगों ने हज़रत मौलाना से बहुत से सवाल किए और हज़रत मौलाना ने सब के जवाब दिए। उसके बाद उन लोगों ने कहा क्या आप

www.abulhasanalinadwi.org

हमारे साथ घूमने चल सकते हैं। हज़रत उनके साथ चलने के लिए राज़ी हो गए। वह अचानक आपको एक अस्पताल में शेख मुहम्मद सरवर सब्बान– जो सऊदी रेडियो के ज़िम्मेदार थे– के पास ले गए, जो इलाज के लिए वहां भर्ती थे। उन लोगों ने हज़रत मौलाना की अरबी रेडियों पर तक़रीर करवाने की फरमाइश की और उन्होंने इजाज़त दे दी। इसके बाद आपकी दो तक़रीरें सऊदी रेडियो ने ब्राडकास्ट कीं जो दिलचस्पी के साथ सुनी गईं। इस प्रकार हज़रत मौलना का सभी हल्कों में अच्छी तरीके से परिचय हो गया।

मिस्र का सफर–

हज़रत मौलाना ने हिजाज़ में इस बात का अनुमान लगा लिया था कि अरब देश मिस्र के पीछे चल रहें हैं। इसलिए अगर अरब देशों में कोई बात पहुंचानी या फैलानी हो तो यह काम मिस्र के रास्ते से आसानी से हो सकता है। इसलिए हज़रत मौलाना ने मिस्र का सफर करने का इरादा किया लेकिन उसके लिए आपके पास खर्च न था आपके बड़े भाई मौलाना अब्दुल अली साहब और शेखुल हदीस ज़करिया ने आपके सफर के खर्च का इन्तिज़ाम किया।

हज़रत मौलाना अपने दो साथियों मौलाना मुईन उल्लाह नदवी और अब्दुर्रशीद नदवी के साथ २० जनवरी १९५१ को मिस्र के लिए निकले। हज़रत मौलाना लिखते हैं ''काहिरा (मिस्र की राजधानी) में हम नौजवान और अपरिचित परदेसियों के पास कोई ऐसी चीज़ न थी जो वहां के साहित्यिक व ऐजूकेटेड समुदाय में हमारा परिचय कराती। जो इस ग्रुप का तर्जुमान था वह कमज़ोर दुबला पतला ३६–३७ साल का नौजवान, हिन्दुस्तानी ड्रेस में, न अज़हर यूनिवर्सिटी के उलमा जैसा ड्रेस न धनी व ऐजूकेटेड ''आफन्दियों'' का सूट बूट और तुर्की टोपी, बल्कि वह ऐसे कपड़े में था जो वहां के सिलीपिंग ड्रेस से थोड़ा सा अच्छा था और किसी बड़े अच्छे होटल की जगह एक छोटे से इस्लामी

www.abulhasanalinadwi.org

इन्सटीटयूट में हमारा निवास था। ऐसी हालत मे यह बात सम्भव थी कि हम लोग वहां कुछ महीने ठहर कर चले आते और किसी को कानों कान खबर न होती।''[१] लेकिन अल्लाह तआ़ला ने आपके परिचय का इन्तिज़ाम पहले कर दिया था ''माज़ा खसिर'' मिस्र पहुंच चुकी थी और हाथों हाथ ली गई थी। इसलिए केवल परिचय के लिए इतना काफी था कि यह ''माज़ा खसिर'' के लेखक हैं। दूसरी बात यह कि कुछ बड़े इन्सटीटयूट में आपकी तक़रीरें हुई जिससे पूरे मिस्र वालों में आपका परिचय हुआ बल्कि सब लोगों की निगाहों में आप आ गए। इसके साथ अज़हर यूनिवर्सिटी में पूरे दुनिया से कोने कोने से पढ़ने वाले छात्रों से भी आपने मुलाक़ातें की। फिर शेखे अज़हर (चान्सलर) अब्दुल सलीम चिश्ती से आपने भेंट की, जो बहुत ही इल्मी व धार्मिक हैसियत के आदमी थे और बहुत दिनों में उन जैसा शेख ''अज़हर'' को मिला था। आपने अज़हर में उन्हें कुछ सुधार करने का मश्वरा दिया। उन्होंने कहा आप मुझे लिख कर दें उस पर ग़ौर किया जाएगा। आपने उन्हें लिखकर अपने क़ीमती मश्वरे दिए। वहां आपने मिस्र के नाम से एक निबन्ध लिखा जिसमे मिस्र वालों को उनकी ज़िम्मेदारियां याद दिलाई गईं। जो वहां की सबसे अच्छी पत्रिका ''अररिसाला'' में छपा फिर अलग भी पम्पलेट की शक्ल में छपा। सय्यद कुतुब शहीद– जो मिस्र के बहुत बड़े आलिम और इस्लाम के दाओ़ी हैं– ने कहा कि मैंने आपका निबन्ध पढ़ा अल्लाह करे मिस्र आपकी बात सुन ले।

मिस्र के इख़्वानुल मुस्लिमीन और उनसे सम्बन्ध–

इख़्वानुल मुस्लिमीन की बुनियाद शेख हसनुल बन्ना शहीद ने डाली थी यह अरब देश की सबसे बड़ी इस्लामी तहरीक है। हज़रत मौलाना के इस सफर में इख़्वान वालों से बड़े अच्छे सम्बन्ध हो गए थे। आपने उनके बीच अपनी तक़रीर की और उनकी अच्छाइयों की तारीफ करते हुए उनकी ग़लतियों और कोताहियों पर भी रोशनी डाली। तक़रीर के बाद इख़्वान वालों ने यहां तक कहा ''कि जब हज़रत मौलाना तक़रीर

---

१. कारवाने ज़िन्दगी ३६८/१

www.abulhasanalinadwi.org

कर रहे थे तो ऐसा मालूम हो रहा था जैसे शेख हसनुल बन्ना शहीद हमसे बातें कर रहे हैं।'' बाद में यह तक़रीर अलग पम्पलेट में छपी जिस पर ''इख़्वान'' के अध्यक्ष ने मुक़द्दमा लिखा था। हज़रत मौलाना इख़्वानियों की विशेषताओं पर रोशनी डालते हुए लिखते हैं ''मैं उनको करीब से देखने के बाद जिन चीज़ों से प्रभावित हुआ वह निम्न लिखित हैं--

१. इस तहरीक (आन्दोलन) ने एक ऐसी क़ौम और सोसाइटी में जो पश्चिमी कल्चर से पूरी तरह प्रभावित हो चुकी थी और उससे पहले की तुर्की हुकूमत और तानाशाही हुकूमत से प्रभावित होकर अमीराना ठाठ बाट और उसकी खराबियों में फंस चुकी थी। उसने ऐसी क़ौम में काम करने की ताक़त, सादगी, निडरता, निर्भीकता, और ऐसा पराक्रम पैदा कर दिया था। जिसका उदाहरण उस समय मिलना मुश्किल था।[१]

२. दूसरी चीज़ जिसने मुझे प्रभावित किया वह उनकी मुहब्बत, गर्मजोशी और उनके आपस के सम्बन्ध, इतना मज़बूत रिश्ता, अख्लाक़ व प्यार और भाईचारे का एहसास और दोस्ती है जो मैंने कम दअ़वतों और जमाअ़तों में देखा है। इख़्वान की तहरीक ने एक ऐसी आलमी बिरादरी पैदा कर दी जिसका हर आदमी दूसरे आदमी को अपना सगा भाई समझता है। और गिरोहबन्दी और क़ौमियत को पीछे छोड़कर उसकी मदद व सहायता के लिए तय्यार रहता है। किसी मिस्री समाचार पत्र ने एक बार व्यंग करते हुए लिखा था और मैं यह समझता हूं कि यह बिल्कुल अन्तिम उदाहरण है कि अगर शेख हसनुल बन्ना को स्कन्दरिया में छींक आए तो मिस्र के दूसरे कोने पर उसका जवाब यरहमुकल्लाह (अल्लाह तुम पर रहम करे) सुनाई देगा।

३. तीसरी बात जिसने मुझे प्रभावित किया कि इस तहरीक (आन्दोलन) का ज़िन्दगी से बहुत क़रीबी सम्बन्ध है और वह ज़िन्दगी से बचकर नहीं निकलती बल्कि उसके ऊपर अपना असर डालती है और उसकी मुश्किलों को हल करने की कोशिश करती है। उसका सम्बन्ध पब्लिक से और फील्ड से है। उसने

---

१. सवानेह मुफक्किरे इस्लाम २४५/१

www.abulhasanalinadwi.org

पब्लिक की ज़िन्दगियों पर प्रभाव डाला है, उनका सुधार किया है और हर हर क़दम पर उनकी मदद की कोशिश की है और मैं समझता हूं कि उसकी कामयाबी और लोकप्रियता में इसका बड़ा रोल है।

४. चौथी चीज़ यह कि उसने इल्मी व दीनी इख़्तिलाफ़ से बचकर काम किया है, यह चीज़ उसकी कमज़ोरी में भी गिनी जा सकती है। लेकिन इस्लामी दुनिया के धार्मिक व चारित्रिक पतन और नेचरयत व नास्तिकता के हमले और मुसलमानों की दिमाग़ी उलझन को अगर सामने रखा जाए तो यह बात एक इस्लामी दअ़वत व तहरीक के लिए खुश किस्मती की समझी जाएगी। कि वह अपनी ताकत और समय सीधे—साधे दअ़वत के बुनियादी कामों में लगाए।

५. इख़्वान की तहरीक का सबसे उज्जवल पहलू यह है कि उसने मिस्र (उसके पीछे चलने वाले अरब देशों) के बढ़ते हुए नेचरयत व नास्तिकता के धारे का रोका और दीन की वैल्यू व क़ीमत जो हर दिन घटती जा रही थी और ज़ेहनी बग़ावत का रुझान.जो हर दिन बढ़ता जा रहा था उसपर इस ने गहरा असर डाला। जो लोग मिस्र के साहित्य व सहाफत (प्रिन्टमीडिया) के बारे में जानते हैं उन्हें अच्छी तरह पता है कि वह इस देश में दीन के विरुद्ध सुसंगठित साजिश और कोशिश थी। मिस्र के साहित्यकारों, जर्नलिस्टों, लेखकों, स्कालरों सबने धर्म के विरुद्ध मोर्चा बना रखा था और फ्रांस के इंक़िलाब के लीडरों की तरह वह पूरी मिस्री इस्लामी सोसाइटी को अपने तरक्की पसन्द साहित्य, अपने शक व सन्देह से भरे हुए विचार व शोध, अपने व्यंग व मज़ाक से डाइना माइट कर रहे थे। इस एलाइन्स के विरोध करने की हिम्मत किसी दीनी जमाअत में यहां तक की "अज़हर" तक में न थी। इख़्वान के विरोधी भी मानते हैं कि इख़्वान ने इस एलाइन्स को कमज़ोर व भयभीत कर दिया। बड़े से बड़े साहित्यकार के अन्दर अब यह ताक़त न रही कि वह दीन का मज़ाक उड़ाए और इल्हाद (नास्तिकता) की तरफ लोगों को बुलाए। इख़्वान ने ग़ैरतमन्द नौजवानों और दीनी जोश व स्वभाव रखने वाले मुसलमानों की ऐसी टीम पैदा कर दी है कि नास्तिकों व नेचरयों को अपने अधार्मिक विचार को लिखने और उनका प्रचार करने और

www.abulhasanalinadwi.org

समाचारपत्रों और पत्रिकाओं को दीने इस्लाम के साथ हंसी मज़ाक करने की हिम्मत न रही। फिर उनके साथ उसने इस्लाम पसन्द साहित्यकारों, लेखकों, टीकाकारों व आलोचकों का ऐसा समूह पैदा कर दिया जो इल्मी हैसियत से उन नास्तिकों का मुक़ाबला कर सके और इस्लामी साहित्य को पेश कर सके। इख़्वान का यह इतना बड़ा कारनामा है कि जिसके अन्दर थोड़ा सा भी ईमान है वह उनके इस कारनामे को ज़रुर स्वीकार करेगा''।[१]

सूडान व दिमश्क़—

७ जून १९५१ को हज़रत मौलाना सूडान की राजधानी खुरतूम पहुंचे, मौलाना उबैदुल्लाह बलयावी आपके साथ थे। वहां उलमा और लीडरों से मुलाक़ातें हुईं और उनसे हिन्दुस्तान के दअ़वत व तहरीक का परिचय कराया गया। वहां से आप लोग काहिरा होते हुए २६ जून १९५१ ई० को ''शाम'' के शहर दिमश्क़ पहुंचे। शाम में आप लगभग ४८ दिन रहे और आप पूरी फुर्ती व लगन के साथ काम करते रहे। वहां दिमश्क़ यूनिवर्सिटी की मस्जिद में आपने जुमा का खुत्बा दिया। वहां से बैतुल मक्दिस गए और रमज़ान के आखिरी दस दिन वहीं रह कर ईद की नमाज़ मस्जिदे अक्सा में पढ़ी और वहां मुसलमानों के महबूब लीडर मौलाना मुहम्मद अली जौहर के क़ब्र पर भी आप गए।

उर्दुन के बादशाह शाह अब्दुल्लाह—

''मस्जिद अक्सा'' से लौट कर हज़रत मौलाना अम्मान में अपने मेज़बान साथियों के यहां खाने के लिए बैठे थे कि शाह अब्दुल्लाह की तरफ से बुलावा आया, इस बीच आपकी गिफ्ट दी हुई मशहूर किताब ''माज़ा खसिर'' को वह पढ़ चुके थे। आपने उन्हें फिलिस्तीन, मस्जिदे अक्सा और रिफ्यूजियों (शरणार्थी) की देख भाल करने का मश्वरा दिया। वह अगले जुमा ''मस्जिदे अक्सा'' में नमाज़ पढ़ने गए और वहीं शहीद कर दिए

---

१. कारवाने ज़िन्दगी ३८२/१

www.abulhasanalinadwi.org

गए।

२१ अगस्त १९५४ को यह सफर पूरा हुआ और दिमश्क से हवाई जहाज़ के द्वारा मदीना वापसी हुई। फिर वहां से १३–१४ महीने के लम्बे सफर के बाद अक्टूबर १९५१ को आप हिन्दुस्तान पहुंचे, आपके साथ मौलाना राबेअ़ साहब थे। लखनऊ स्टेशन पर मिलने वालों और जमाअ़त वालों की एक भीड़ थी, उन लोगों के बार बार कहने पर हज़रत मौलाना ने स्टेशन के क़रीब वाली मस्जिद में संक्षेप में सफर की दास्तान सुनाई।

हिन्दुओं और मुसलमानों के मिलेजुले जलसों को सम्बोधित करना—

हज़रत मौलाना के तब्लीग़ी सफर हो रहे थे। इसी बीच आपको यह ज़रुरत महसूस हुई कि हिन्दुओं और मुसलमानों के मिले जुले जलसे व कान्फ्रेंसे की जाएं। जिनमें पढ़े लिखे हिन्दुओं को भी बुलाया जाए और उसमें उनकी फिक्र व सोच को सामने रखते हुए आसान हिन्दी व अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग करते हुए भाषण दिए जाएं। आपकी इन तक़रीरों में इतनी भीड़ इकट्ठा होती थी जितनी बड़े बड़े राजनीतिक लीडरों बल्कि जवाहर लाल नेहरु की तक़रीरों में भी इकट्ठा नहीं होती थी। एक बार सीवान (बिहार) की एक तक़रीर के बाद एक हिन्दू वकील जबरदस्ती स्टेज पर चढ़ आया। उसने कहा कि मैं दो तक़रीरों से आज तक प्रभावित हुआ हूं। उनमें से एक आज की मौलाना की तक़रीर है और मैं साफ कहता हूं कि मुहम्मद अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर (सन्देशवाहक) हैं। मौलाना साहब आप केवल मुसलमानों के लिए ही नहीं हैं बल्कि सबके लिए हैं हम अगले साल भी आप को यहां आने का कष्ट देंगे।

"तारीख दअ़वत व अज़ीमत" को लिखना—

इसी बीच हज़रत मौलाना ने अपनी किताब "तारीख दअ़वत व अज़ीमत" लिखी। जिसमें यह बाद सिद्ध की गई है

कि इस्लाम को जिस ज़माने में जैसे लोगों की ज़रुरत पड़ी अल्लाह तआ़ला वैसे लोगों को पैदा करता रहा और जिस काल में जिस तरह का बिगाड़ व उपद्रव हुआ उसको कुचलने के लिए वैसे ही लोग अल्लाह तआ़ला ने पैदा किए और यह इस्लाम धर्म के सच्चा होने की भी एक बड़ी निशानी है।

दिमश्क़ यूनिवर्सिटी में Visiting Professer की हैसियत से जाना—

हज़रत मौलाना को दिमश्क़ यूनिवर्सिटी में कम से कम दो वर्ष के लिए पढ़ाने की दअ़वत मिली। लेकिन हज़रत मौलाना ने कहा कि मैं हिन्दुस्तान छोड़ कर साल दो साल के लिए नहीं लेकिन कुछ समय के लिए Visiting Professer की हैसियत से आ सकता हूं। दिमश्क़ यूनिवर्सिटी ने इसको स्वीकार कर लिया और शाम के प्रसीडेंट ने उन काग़ज़ों पर अपने हस्ताक्षर कर दिए। तीन महीने आप दिमश्क़ में रहे फिर वहां से तुर्की, बग़दाद और कराची होते हुए हिन्दुस्तान पहुंचे।

क़ादयानियों के विरोध में एक किताब—

अल्लाह तआ़ला ने मुहम्मद सल्ल० को अपना आखिरी रसूल बनाया है आपके बाद अब कोई नबी न आएगा। लेकिन पंजाब के एक आदमी गुलाम अहमद क़ादयानी ने अपने नबी होने का दावा किया। उलमा ने उसके काफिर होने का फत्वा दिया। इस टापिक पर पूरे दुनिया के उलमा की बैठकें हुई। कुछ अरब उलमा ने पाकिस्तानी उलमा से इस टापिक पर किताब मांगी लेकिन उस समय तक अरबी में इस पर कोई किताब न थी। मौलाना अब्दुल कादिर रायपुरी ने आपसे किताब लिखने के लिए कहा। उस समय तक आपने उनके बारे में कुछ पढ़ा न था लेकिन हज़रत रायपुरी के हुक्म से आप ने यह काम किया। गुलाम अहमद क़ादयानी की सभी किताबें पढ़ीं नोट्स बनाए और २३—२४ दिन में अरबी में आपने एक किताब तय्यार कर दी। जिसका उर्दू, अंग्रेज़ी और दूसरी भाषाओं में अनुवाद हुआ।

www.abulhasanalinadwi.org

अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी की रक्षा की फिक्र—

हज़रत मौलाना को अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के डिपार्टमेण्ट दीनयात के तरफ से एक सेमिनार में आने की दअ़वत मिली। हज़रत मौलाना ने १९५९ ई० में यूनियन हाल में अपना निबन्ध "नुबुवत का कारनामा" पढ़ा। उस समय कर्नल ज़ैदी वाइस चांसलर थे, ज़ैदी साहब के बाद बद्रउद्दीन तय्यिब जी अलीगढ़ यूनिवर्सिटी के चांसलर बनाए गए। वह जवाहर लाल नेहरु के बहुत क़रीबी आदमी थे और हुकूमत स्वंय "मुस्लिम" का शब्द अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी से निकाल कर उसे एक क़ौमी यूनिवर्सिटी बनाना चाहती थी। हज़रत मौलाना ने इसके लिए तय्यिब जी से बात करना चाही। संयोग से उन्होंने खुद बात शुरु की, हुआ यह कि मिस्र के डिक्टेटर कर्नल नासिर के विरुद्ध हज़रत मौलाना ने अपने पर्चों "अरराइद" व "अलबअ़स" में क़लमी जिहाद छेड़ रखा था जिससे कर्नल नासिर बहुत परेशान था। उसने जवाहर लाल नेहरु से इस बारे में बात की, नेहरु ने इस काम के लिए तय्यिब जी को चुना। तय्यिब जी ने इसे देशभक्ति और क़ौमी फाइदे के नाम से पेश किया। लेकिन हज़रत मौलाना ने फरमाया सही नेशनलिज़्म यह है कि अगर कोई फैसला नेहरु जी ग़लत ले रहे हों तो उसे उन्हें बताया जाए बल्कि आगे बढ़कर उनके हाथ को पकड़ लिया जाए इसलिए मैं नेहरु जी से इस बारे में माफी चाहूंगा। जिससे तय्यिब जी बहुत प्रभावित हुए कि एक मौलवी प्रधानमंत्री की बात को अपने उसूल के लिए यूं ठुकरा सकता है। हज़रत मौलाना ने उनसे यूनिवर्सिटी के बारे में बात की। तय्यिब जी आपसे इतना प्रभावित थे कि १७ अक्टूबर को जब उन्होंने पहली तक़रीर की तो जानने वाले सुनकर दंग रह गए कि उनकी तक़रीर उन्हीं प्वाइंट के इर्द गिर्द घूमती रही जो हज़रत मौलाना ने उन्हें लिख कर दिए थे। तय्यिब साहब ने ढाई साल के पीरियड में कोई एसी तक़रीर नहीं की जिसमें उन्होंने क़ुरआन का हवाला न दिया हो। इस सबके पीछे केवल एक व्यक्ति का हाथ था जिसके बारे मे बहुत कम लोग जानते हैं वह

www.abulhasanalinadwi.org

हज़रत मौलाना अली मियां थे।[१]

दीनी तअ़लीमी कौन्सिल–

हिन्दुस्तान के बँटवारे के बाद मुसलमानों का मुसलमान रहना मुश्किल हो रहा था। इसलिए हज़रत ने प्रदेश स्तर पर यह तहरीक (अन्दोलन) चलाई कि अपने आज़ाद मदरसे व स्कूल बनाए जाएं जिनमें बेसिक शिक्षा की व्यवस्था हो। मौलाना मन्ज़ूर नोअ़मानी, काज़ी अ़दील अ़ब्बासी, ज़फर अहमद सिद्दीक़ी के मदद से ३० दिसम्बर १९५९ को इसका पहला जलसा हुआ जिसके अध्यक्ष हज़रत मौलाना बनाए गए थे। इस कौन्सिल ने प्रदेश स्तर पर हज़ारों मदरसे बनाए जिसमें लाखों छात्र पढ़ते थे।

बड़े भाई डाक्टर अब्दुल अली साहब की मृत्यु–

हज़रत मौलाना के पिता डाक्टर अब्दुल हई साहब की मृत्यु के बाद आपके बड़े भाई ने ही आपको पढ़ाया लिखाया था वह आपके बड़े भाई ही नहीं बल्कि बाप समान थे। ७ मई १९६१ को उनकी मृत्यु हुई, उस समय आप सफर पर थे इसलिए जनाज़ा कफन व दफ्न में भी शामिल न हो सके। हज़रत मौलाना लिखते हैं ''यह मेरे होश का सबसे बड़ा हादसा था''।[२]

नदवतुलउलमा का नाज़िम (मैनेजर) बनना–

डाक्टर अब्दुल अली साहब के बाद १८ जून १९६१ ई० को सर्वसम्मति से आपको नदवा का मैनेजर बनाया गया।

---

१. विस्तार के लिए देखें ''अफकार व आसार'' २. कारवाने ज़िन्दगी

www.abulhasanalinadwi.org

जामिया इस्लामिया मदीना मुनव्वरा और राब्ता आलमे इस्लामी मक्का मुकर्रमा का क़ियाम (स्थापना)—

१९६२ में मदीना यूनीवर्सिटी बनी, स्वंय शाह सऊद ने हज़रत को एक खत लिखकर वहां पढ़ाने की दअ़वत दी। लेकिन आपने वही जवाब दिया जो दिमश्क़ यूनिवर्सिटी को दिया था। इसके कुछ दिनों बाद आपको यूनिवर्सिटी की कमेटी का मिम्बर बनाया गया। वहीं १९६२ में एक विश्व स्तर की एक तन्ज़ीम (संस्था) "राब्ते आलमे इस्लामी" की स्थापना हुई आपको उसका भी मिम्बर बनाया गया।

मुस्लिम मजलिस मुशावरत की स्थापना—

१९६४ में सम्प्रदायिक दंगे हुए, जिसमें सबसे भयानक दंगा जमशेदपुर और रावरकेला का था, उसमें लगभग तीन हज़ार मुसलमान शहीद हुए थे। जिससे हज़रत के दिल पर बड़ी चोट लगी और जिसने हर सोचने व समझने वालों को यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि अगर इस तरह के दंगे होते रहे और उनके रोकने की कोई कोशिश न की गई तो मुसलमानों का यहां बचा रहना मुश्किल हो जाएगा। इसलिए डाक्टर सय्यद महमूद साहब, मौलाना नोअ़मानी, मुफ्ती अतीकुर्रहमान साहब, मौलाना अबुल्लैस अमीर जमाअ़त इस्लामी हिन्द के मश्वरे से यह तय पाया कि देश के स्तर पर मुस्लिम मुशावरती मीटिंग की जाए। १८ अगस्त १९६४ को लखनऊ में पहली कान्फ्रेंस हुई जिसमें हज़रत मौलाना के मश्वरे पर डाक्टर सय्यद महमूद साहब को उसका पहला अध्यक्ष बनाया गया।

हज़रत मौलाना का त्याग व कुर्बानी—

हज़रत मौलाना के आंखों का आप्रेशन हुआ था इसलिए डाक्टरों ने ज़्यादा बोलने से या तेज़ बोलने से रोका था। लेकिन जब मजलिसे मुशावरत के जलसे में मतभेद पैदा होने लगे और खतरा हुआ कि आपस में फूट पड़ जाएगी तो हज़रत मौलाना अपने आप को रोक न सके और आपने बहुत ही जोश में तक़रीर की। जिसके फलस्वरुप जलसा तो कामयाब रहा

www.abulhasanalinadwi.org

लेकिन हज़रत की आंख महफूज़ न रह सकी।

मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड की स्थापना–

हिन्दुस्तान में मुसलमानों के वुजूद पर उस समय खतरा मण्डराने लगा जब हिन्दुस्तानी हुकूमत और खुद तथाकथित मुसलमानों में यह रुझान पैदा होने लगा कि सभी देशवासियों का पर्सनल ला एक होना चाहिए। इस खतरे को उलमा ने महसूस किया जिनमें सबसे आगे मिन्नतुल्लाह रहमानी थे। उनकी कोशिश और दूसरे इस्लामी इन्सटीटयूट व जमाअतों व मदरसों की मदद से २७–२८ दिसम्बर १९७२ को मुम्बई में "पर्सनल ला कन्वेन्शन" बुलाया गया। हज़रत मौलाना इन दिनों हिजाज़ (मक्का, मदीना) में थे और हज के दिन भी क़रीब थे। लेकिन काम की अहमियत व ज़िम्मेदारी को समझते हुए आप इस कन्वेन्शन (सभा) में उपस्थित हुए। इस कन्वेंशन में "मुस्लिम पर्सनल ला" बोर्ड की स्थापना हुई और सर्वसम्मित से दारुलउलूम देवबन्द के प्रिन्सिपल क़ारी तय्यिब साहब को अध्यक्ष और मिन्नतुल्लाह रहमानी को जनरल सिक्रेटरी चुना गया।

हज़रत मौलाना का विदेश का दौरा–

हज़रत मौलाना ने १९७३ ई० में ४ जून से २० अगस्त तक "राब्ता आलमे इस्लामी" की दअ़वत पर मध्यपूर्व के ६ मुस्लिम देशों अफग़ानिस्तान, ईरान, लेबनान, उर्दुन, शाम और ईराक़ का दौरा किया। वहां आपकी तक़रीरें हुई जिससे लोगों को बड़ा फाइदा हुआ।

शाह फैसल का शहीद होना–

सऊदी हुकूमत के बादशाह शाह फैसल जब वलीअहद (उत्तराधिकारी) बनाए गए थे तभी से हज़रत मौलाना से उनसे अच्छे सम्बन्ध थे, उन्होंने हज़रत मौलाना के लिट्रेचर को पढ़ा था। वह विश्वस्तर पर

www.abulhasanalinadwi.org

इस्लामी लहर चलाना चाहते थे। हज़रत मौलाना को आपसे बड़ी उम्मींदें थीं लेकिन २५ मार्च १९७५ को उन्हें अचानक शहीद कर दिया गया। जिससे मौलाना को बड़ा दुख हुआ था।

नदवा का पच्चासी साला जश्न—

हज़रत मौलाना दारुलउलूम नदवतुल उलमा के १८ जून १९६१ को प्रबन्धक बनाए गए और अपनी पूरी उम्र ३१ दिसम्बर १९९९ तक दारुल उलूम के प्रबन्धक रहे। आपको शुरु ज़माने में माली तंगी से गुज़रना पड़ा लेकिन आप किसी प्रकार दारुलउलूम को चलाते रहे। २० अगस्त १९६९ को आपने बीमारयों और यात्राओं के कारण इस्तीफा दिया, जिसे कमेटी ने नामन्ज़ूर कर दिया। नदवतुल उलमा के पहले बड़े बड़े जलसे होते थे लेकिन कुछ कारणों से इधर उसके जलसे नहीं हो पा रहे थे जिससे नदवा की तहरीक (आन्दोलन) सुस्त पड़ गई थी। इसलिए १९७५ ई० में नदवा का विश्व स्तर पर जलसा किया गया। जिसमें अरब के ५५ उलमा शामिल हुए। जिसमें विश्व की सबसे पुरानी व मशहूर यूनीवर्सिटी "अज़हर" यूनिवर्सिटी मिस्र के शेख और बहुत से इस्लामी दुनिया की मानी हुई हस्तियां, हिन्दुस्तान की दीनी इन्सटीटयूट और यूनीवर्सिटीयों के चांसलर आदि उपस्थित हुए। इसमें हिन्दुस्तान के वर्तमान राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद साहब का पयाम (सन्देश) भी पढ़कर सुनाया गया। इसके जलसे में ६०००० साठ हज़ार लोग एक एक मजलिस में (सभा) शामिल हुए।

मस्जिदे हराम (कअ़ब:) के इमाम शेख अब्दुल अज़ीज़ का नदवा आगमन—

नदवा के पच्चासी साला जश्न की गूंज पूरे दुनिया में सुनी गई। जिससे इस्लामी दुनिया के बड़े बड़े लोगों को नदवा से दिलचस्पी पैदा हो गई थी। इस जश्न के डेढ़ साल बाद ही मस्जिदे हराम (कअ़ब:) के इमाम शेख अब्दुल अज़ीज़ खुद ३ फरवरी १९७७ ई० को नदवा तशरीफ लाए। आपने जुमा की नमाज़ पढ़ाई आपका नदवा

www.abulhasanalinadwi.org

में हार्दिक अभिनन्दन किया गया। कई हज़ार लोगों ने आपके पीछे नमाज़ पढ़ी यहां तक कि दारुल उलूम नदवा की बाउण्ड्री के बाहर भी नमाज़ियों की कतारें थीं। खुत्बा में हज़रत इमाम साहब ने हज़रत मौलाना की बड़ी तारीफ की। एक दिन रुक कर यह काफिला रवाना हो गया।

देश में एमरजेन्सी का लागू होना—

१९७१ ई० रायबरेली से इन्द्रागांधी और उनके मुकाबले में राजनारायण चुनाव में खड़े हुए। इन्द्रिागांधी चुनाव जीत गईं लेकिन राजनारायण ने इलाहाबाद हाइकोर्ट में उनके विरुद्ध रिट दायर कर दी, न्यायमूर्ति जगमोहन लाल ने चार साल बाद १९७५ को अपने फैसले में उनकी सीट को रद्द कर दिया और छः साल तक श्रीमती गांधी के चुनाव में खड़े होने पर भी रोक लगा दी। उच्चतम न्यायालय में इन्द्रागांधी ने अपील की लेकिन राजनीतिक पार्टियों का दबाव इतना बढ़ा कि उन्होंने अपनी कुर्सी बचाने के लिए एमरजेन्सी लागू कर दी। हज़ारों लोग गिरफ्तार हुए, ज़बरदस्ती नसबन्दी की जाने लगी, समाचार पत्रों को बन्द कर दिया गया, सैकड़ों घरों पर बुलडोज़र चलवा दिए गए यह सारा काम इन्द्रिागांधी के छोटे बेटे संजय गांधी के देख रेख में हो रहा था। हज़रत मौलाना ने इस पीरियड में इन्द्रिागांधी से मिलने की कोशिश की लेकिन कामयाबी न मिली। अचानक १९७६ ई० को रायबरेली में कलक्टर साहब ने आकर बताया कि प्रधानमन्त्री जी ने आपको राष्ट्पति भवन में लन्च पर बुलाया है। आप दिल्ली पहुंचे और इन्द्रा जी से बात करने के लिए समय मांगा, उन्होंने आप से एकान्त में बात की जो करीब एक घण्टा तक चलती रही। हज़रत मौलाना एक खत लिखकर ले गए थे जिसमें आपने उन्हें देश के पूरे हालात से अवगत कराते हुए लिखा था कि "आज़ादी के आन्दोलन और उसके नेतृत्व करने वालों की नाकामी के लिए इससे बढ़कर कोई बात नहीं हो सकती कि लोग गुलामी के ज़माने को याद करने लगें। हम लोगों के लिए बड़े शर्म की बात है कि लोग खुले आम अंग्रेज़ों के ज़माने को याद करने लगे हैं"।

www.abulhasanalinadwi.org

इन्द्रागांधी का रायबरेली हज़रत मौलाना से मिलने आना—

१९७७ ई० में १९ महीना बाद एमरजेन्सी समाप्त हुई। चुनाव हुए जिसमें इन्द्रिा गांधी और संजय गांधी दोनों चुनाव हार गए। चुनाव के हारने के बाद श्रीमती गांधी ने कुछ दिनों बाद अपने चुनावी क्षेत्र का दौरा किया और हज़रत मौलाना से मिलने उनके घर पर गईं। जहां पहले से जमाअत इस्लामी हिन्द के अमीर मौलाना अबुललैस नदवी, अब्दुलस्सलाम नदवी और सय्यद सबाहउद्दीन अब्दुर्रहमान भी मौजूद थे।

चन्द्रशेखर और अटलबिहारी बाजपेयी का नदवा हज़रत से मिलने आना—

हज़रत मौलाना से अचानक मिलने के लिए जनता पार्टी के बड़े नेता चार्टर प्लेन से नदवा आए, जिनमें पूर्व प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर व पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी भी थे। हज़रत मौलाना ने उन्हें याद दिलाया कि जनता ने उन्हें किस तरह कांग्रेस के मुक़ाबले में जिताया और उनको जनता पार्टी से क्या उम्मीदें थीं, लेकिन उन्होंने आपसी मतभेद व लालच के कारण यह कुर्सी गवां दी थी और फिर कांग्रेस ने सरकार बनाई।

अमरीका का पहला सफर और आंख का आपरेशन—

१९७७ ई० में अमरीका की मशहूर मुस्लिम तन्ज़ीम (संस्था) M.S.A. के दअ़वत (निमन्त्रण) पर आपने अमरीका का सफर किया। वहां बीस से ज़्यादा आपकी तक़रीरें हुईं, अमरीका की पांच बड़ी यूनीवर्सिटियों कैम्बरेज, न्यूयार्क, लासएन्जेल्स आदि में आपके लेक्चर्स हुए और वहीं आपके दाएं आंख का कामयाब आप्रेशन हुआ।

www.abulhasanalinadwi.org

मक्के की एक दुर्घटना–

१९७९ ई० में हज़रत मौलाना अपने पोते अब्दुल्लाह हसनी के साथ मक्का पहुंचे, आप दोनों उमर: का एहराम बांधे हुए थे। दूसरे दिन अचानक खबर मिली कि कुछ ईरानियों ने हरम पर कब्ज़ा कर लिया है और मुहम्मद अब्दुल्लाह कहतानी ने मेहदी होने का दावा किया है। पांच दिन तक उनका कब्ज़ा रहा, पांच दिन बाद फौजो काररवाई में कहतानी मारा गया और उसका दायां हाथ समझा जाने वाला जहीमान उतैबी गिरफ्तार हुआ और क़त्ल कर दिया गया। कई दिनों तक इमाम हरम की इमामत में नमाज़ न पढ़ी जा सकी और न ही तवाफ किया जा सका। हरम के चारों तरफ फौजी पहरा था और टैंक व मोटरें थी इसलिए हज़रत मौलाना इस साल उमर: न कर सके।

फैसल एवार्ड–

शाह फैसल के शहीद होने के बाद १९७९ ई० में उनके यादगार में सऊदी अरब ने ''फैसल एवार्ड'' देना शुरु किया था। इस्लामी दुनिया में इस एवार्ड की वही हैसियत है जो दुनिया में नोबेलप्राइज़ की समझी जाती है। फैसल एवार्ड के चयन का तरीका यह है कि कमेटी की तरफ से इस्लामी दुनिया के बड़े इन्सटीटयूटों, अहम लोगों, तहरीकों और तन्ज़ीमों से राय मांगी जाती है जिसके बारे मे ज़्यादा लोगों की राय होती है उसे यह एवार्ड दिया जाता है। एवार्ड की रक़म दो लाख रियाल नक़द, एक स्वर्ण पदक, और सनद दी जाती है जिसमें इनआ़म पाने वाले के कार्यों का ज़िक्र किया जाता है।

१९८० ई० में यह इनआम हज़रत मौलाना और इन्डोनेशिया के प्रधानमंत्री डाक्टर नासिर को दिया गया। हज़रत मौलाना ने इस एवार्ड को लेने के लिए अपनी जगह डाक्टर अब्दुल्लाह अब्बास नदवी को भेजा था। वहीं उन्होंने एवार्ड की आधी रक़म अफग़ान शरणार्थियों के लिए चौथाई ''मदरसा सौलतया'' मक्का मुकर्रमा के लिए और चौथाई ''तहफीज़ कुर्आन'' को दे दी।

www.abulhasanalinadwi.org

आपने अपने मदरसों को उसमें से एक पैसा भी नहीं दिया।

मुरादाबाद का दंगा—

१९८० ई० में मुरादाबाद के फसाद में ६००० मुसलमान शहीद हुए। यह दंगा इस तरह हुआ कि मुसलमान ईदगाह में नमाज़ पढ़ रहे थे कि ईदगाह के अन्दर सुअर चला आया जो शायद पहले से बनाए गए प्लान का हिस्सा था। पुलिस वालों से इस पर कहा सुनी हुई नमाज़ पढ़ने वाले कहते थे कि सुअर कैसे आया? इसको बाहर करो। लेकिन पुलिस वालों ने इसमें अपनी बेइज़्ज़ती महसूस की। बाहर कैम्पों से एक ढेला आया बात बढ़ी और पुलिस ने फायरिंग शुरु कर दी। उस समय ईदगाह में क़रीब साठ हज़ार बड़े और इतने ही लगभग बच्चे मौजूद थे। मुहम्मद आज़म खाँ M.L.A. समाजवादी पार्टी ने अपनी असेम्बली की तक़रीर में दावा किया था कि २००० दो हज़ार मुसलमान P.A.C. की फायरिंग में शहीद हुए हैं जिनमें ७०० सात सौ बच्चे थे। ईदगाह के इमाम डाक्टर कमाल फहीम साहब ने बताया कि तीन सफें लाशें थीं और हर पंक्ति में १६५ आदमी मारे गए थे और बहुत से लोग मस्जिद के बाहर P.A.C. की गोली से मरे थे। शुरु में यह फसाद P.A.C. और मुसलमानों के बीच रहा। लेकिन दूसरे दिन ही उसे समप्रदायिक दंगा बना दिया गया। इसकी एक बड़ी वजह यह भी है कि मुरादाबाद औधोगिक शहर है और उसका पीतल के बर्तनों का उद्योग मुसलमानों के हाथों में है, जिससे खाड़ी देशों से भी मुसलमान अच्छा पैसा कमा रहे हैं और जिससे उनकी मस्जिदों, मदरसों, इन्सटीटयूटों और उनकी ज़िन्दगियों का ग्राफ बढ़ रहा था। और जानने वाले जानते हैं कि जहाँ मुसलमान तरक्की करते हैं वहां दँगा पहले होता है जैसे अलीगढ़, बनारस मेरठ और मुरादाबाद और भिवण्डी, गुजरात आदि में हुआ। हुकूमत ने इस दंगे में जिस तरह कारवाई करनी चाहिए थी नहीं की। क्यों कि वह केवल अपने वोट बैंक पर नज़र रखती है चाहे उन्हें इंसानी लाशों पर बैठ कर ही क्यों न प्राप्त करना पड़े।

हज़रत मौलाना ने मजलिसे मुशावरत के ज़िम्मेदारों से मिलकर मुरादाबाद

www.abulhasanalinadwi.org

का दौरा किया और वहां ग़ैरमुस्लिमों के बड़ लोगों से भी मुलाक़ातें कीं। फिर हज़रत मौलाना की अध्यक्षता में लखनऊ की "बारादरी" में पयामे इंसानियत का जलसा हुआ जिसमें यूनीवर्सिटी के प्रोफेसर, बहुत सारे मंत्री, राजनीतिक पार्टियों के ज़िम्मेदार, डाक्टर आदि शामिल हुए। इसमें हज़रत मौलाना ने चार बिन्दुओं की तरफ लोगों को मुतवेज्जह (ध्यान आकर्षित) किया।

१. सबसे पहली बात यह कि इंसानी और अख्लाकी बुनियाद पर लोगों से कान्टेक्ट किया जाए।

२. दूसरी बात यह है कि कालेजों के ऐसे सेलेवस को सही किया जाए जिससे सम्प्रदायिकता को हवा मिलती है।

३. समाचार पत्रों पर पाबन्दी (प्रतिबन्ध) कि वह झूठी खबरें और बात को बतंगड़ बना कर पत्रों में न छापें जिससे सम्प्रदायिकता भड़क उठे।

४. चौथी बात यह है कि P.A.C. व पुलिस की गड़बड़यों को दूर किया जाए और उनको चारित्रक शिक्षा दी जाए।

हज़रत मौलाना कहते हैं "कि इस कान्वेश्वन के द्वारा अपनी कमज़ोर आवाज़ को बड़े पैमाने पर पहुंचाने का अवसर मिला इससे ज़्यादा हमारे अधिकार में कुछ नहीं है"।[१]

हिजाज़ का सफर और यासिर अराफात के सामने तक़रीर–

हज़रत मौलाना १९८१ ई० में मक्का एक जलसे में शामिल होने के लिए गए। वहीं इस बीच फिलिस्तीनी आज़ादी के आन्दोलन के नेता यासिर अराफात हिजाज़ आए। उनके स्वागत में "राब्ता" ने एक प्रोग्राम किया। हज़रत मौलाना ने यासिर अराफात के सामने तक़रीर की। आपने उस तक़रीर में मुसलमानों के फिलिस्तीन से जज़्बाती लगाव को उजागर किया और इस बात पर ज़ोर दिया कि जो लीडर फिलिस्तीन को आज़ाद कराना चाहता हो उसको अपने अन्दर सलाहुद्दीन अय्यूबी जैसी खूबियां पैदा करनी चाहिएँ।

---

१. कारवाने ज़िन्दगी ३२७/२

www.abulhasanalinadwi.org

कश्मीर यूनीवर्सिटी का आपको डाक्टरेट की डिग्री देना—

हज़रत मौलाना को कश्मीर यूनीवर्सिटी ने २९ अक्टूबर १९८१ ई० को डाक्टरेट की डिग्री से सम्मानित करने का फैसला किया। हज़रत मौलाना से पहले मौलाना अब्दुल माजिद दरयाबादी, अल्लामा सय्यद सुलेमान नदवी, हबीबुर्रहमान खाँ शेरवानी को अलीगढ़ यूनीवर्सिटी डाक्टरेट की सनद से सम्मानित कर चुकी थी। एक बात यह भी थी कि हज़रत मौलाना जानते थे कि इस प्रोग्राम में गर्वनर, मुख्यमंत्री और दूसरे बड़े लोग उपस्थित होंगे और उनके सामने आपने दिल व दिमाग़ की बात रखने का अवसर मिलेगा, इसलिए आपने मश्वरे के बाद इस डिग्री को लेना स्वीकार कर लिया।

बेरुत की घटना—

१९८२ ई० के आखिर में ईस्राईली काररवाई में फिलिस्तीनी व लेबनानी मुसलमान भेड़ बकरी की तरह मारे गए। जिसका कोई उदाहरण भी इस ज़माने में नहीं मिलता। हज़रत मौलाना लिखते हैं "इस्लामी दुनिया की बेवज़नी, पड़ोसी अंरब हुकूमतों की बेबसी, और बेहिसी और बड़ी हुकूमतों की चुप्पी बल्कि इसे मूक दर्शक के समान देखते रहना, यह सब देखकर दिल टुकड़े टुकड़े हो गया। हज़रत मौलाना ने इससे प्रभावित होकर उर्दू, अरबी और अंग्रेज़ी प्रेस के लिए एक वक्तव्य तय्यार किया और उसमें आपने साफ साफ कहा कि इस वक्त वह कौमें जो अपने को पढ़ा लिखा और इण्टलीजेण्ट समझती हैं उनके अन्दर वह खूंखारगी और दरिन्दगी पाई जाती है जो इंसान को खाने वाले क़बीलों में पाई जाती थी। इस वक्तव्य को छापा गया और उसकी एक कापी अमरीका के राष्ट्रपति रेगन को भी भेजी गई।

इसी प्रकार हज़रत मौलाना ने १९८२ में "अफग़ान मुजाहिदीन को सलाम" के नाम से अफगान मुजाहिदीन को अपना मुबारक बाद का पयाम

www.abulhasanalinadwi.org

(सन्देश) लिखा। जिसमें हज़रत मौलाना ने उनकी खुल कर तारीफ की थी कि उन्होंने कम्युनिस्ट हमले को रोका और रुस जैसी सुपर पावर से टक्कर ली और मुसलमानों का सर शर्म से झुकने से बचा लिया, यह पयाम (सन्देश) उर्दू और अरबी में छपा। हज़रत मौलाना कहते हैं "इस तरह एक हिन्दुस्तानी मुसलमान जिसके सामने बड़ी मुश्किलें हैं अपने दीनी जज़्बात को पेश करके और उनकी दीनी व अख्लाक़ी हिमायत करके अपने दिल को ठण्डा कर सकता था"।

आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में इस्लामिक सेण्टर की स्थापना–

१९८३ ई० में हज़रत मौलाना को प्रोफेसर खलीक़ अहमद निज़ामी का अचानक खत मिला कि ब्रिटेन की आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी– जो दुनिया की मशहूर यूनीवर्सिटी है– उसमें एक इस्लामिक सेंटर बनाने की बात सोची जा रही है। यह यूनीवर्सिटी के सात सौ साल के इतिहास में पहला अवसर है कि इस्लामिक लिट्रेचर के स्टडी और उस पर रिसर्च करने के लिए कदम उठाया जा रहा है। इस काम में STCROSS COLLEGE के टीचर और वाइस प्रिन्सिपल सबसे आगे हैं, वह चाहते हैं कि आप इस अवसर पर उपस्थित हों और उसका पूरा सिस्टम और कानून बनाने में मदद करें और "इस्लाम व यूरोप" के टापिक पर अपना निबन्ध भी पढ़ें। हज़रत मौलाना बहुत दिनों से चाह रहे थे बल्कि आपने कभी कभी दुआ भी की थी कि यूरोप वालों से बात करने और उनके अन्दर के बिगाड़, उनके कल्चर आदि पर आज़ादी के साथ बात करने का अवसर मिले। हज़रत मौलाना मौलाना राबेअ़ साहब के साथ पहुंचे और आपने लेक्चर दिया और आपका एक निबन्ध डाक्टर फरहान साहब ने पढ़कर सुनाया। हज़रत मौलाना को इस सेंटर का CHAIRMAN चुना गया।

मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड का अध्यक्ष बनना–

१९७२ ई० में बम्बई में

www.abulhasanalinadwi.org

मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड बना था। हज़रत क़ारी तय्यब साहब उसके पहले अध्यक्ष बनाए गए। १९७७ ई० के रांची के जलसे में कुछ लोगों ने हज़रत मौलाना का नाम लिया लेकिन हज़रत मौलाना यह कह कर "तूफान में नाव नहीं बदली जाती" इसको रद्द कर दिया। १९८३ ई० में क़ारी तय्यब साहब की मृत्यु के बाद हज़रत मौलाना को २८ दिसम्बर १९८३ को सर्वसम्मित से अध्यक्ष चुन लिया गया। हज़रत मौलाना बीमारी के कारण से इस जलसे में नहीं पहुंच सके थे।

हिन्दूइयत का तूफान और इन्द्रा गांधी का क़त्ल–

१९७७ के चुनाव के बाद जनता हुकूमत बनी थी, १९८० ई० में चुनाव में दोबारा कांग्रेस को बहुमत प्राप्त हुआ और जनता हुकूमत का अन्त हो गया। वोट की राजनीति में– जिसमें इंसानों की लाशों पर बैठ कर भी वोट प्राप्त करना बुरा नहीं समझा जाता– कांग्रेस ने विश्व हिन्दू परिषद, शिवसेना, और R.S.S. को कार्य करने की खुली छूट दे दी।

विश्व हिन्दू परिषद ने ७–८ अप्रैल १९८४ को एक गुप्त मश्वरा किया जिसमें पूरे देश के कट्टरपंथी हिन्दू सम्मिलित हुए। जिसमें मुसलमानों के हिन्दुस्तान से सफाया करने और बनारस की ज्ञानवापी मस्जिद को विश्वनाथ मन्दिर, मथुरा की ईदगाह को कृष्ण जन्म भूमि, और अयोध्या की बाबरी मस्जिद को राम जन्म भूमि[1] में परिवर्तित करने की मांग की गई थी।

हज़रत मौलाना इस हालत से बेचैन हो गए और आपने प्रधानमंत्री इन्द्रा गांधी को २२ अक्टूबर १९८४ ई० को एक बहुत ही लम्बा खत लिखा, जिसमें

१. इस मस्जिद के बारे में हिन्दुओं को यह बात समझाई गई थी कि यह राम जन्म भूमि है यहां के मन्दिर को तोड़कर बाबर ने मस्जिद बनाई थी। इसके जवाब में सय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान ने "बाबरी मस्जिद का इतिहास" के नाम से उर्दू में किताब लिखी जिसमें उन्होंने सिद्ध किया कि इस बात का कोई सबूत नहीं है कि यह स्थान राम जन्म भूमि है और न ही बाबर ने किसी मन्दिर को तोड़कर मस्जिद बनाया था। इसी तरह डा० R.L. शुक्ला और चन्द्रदास गुप्ता ने भी अपने लेखों मे इसको सिद्ध किया है।

www.abulhasanalinadwi.org

आपने बहुत ही साफ शब्दों में इस की तरफ मुतवज्जेह किया था।

श्रीमती गांधी का क़त्ल—

इससे पहले की आपका खत इन्द्रा गांधी तक पहुंचता ३१ अक्टूबर १९८४ को इन्द्रा गांधी को उनके अंगरक्षकों ने क़त्ल कर दिया। जिससे सिखों के विरुद्ध दंगे भड़क उठे केवल दिल्ली में ५०० सौ सिख कत्ल हुए। उनको वहशियाना तरीके से कत्ल किया जा रहा था। कितने जगहों पर सिखों पर पेट्रोल छिड़कर कर आग लगा दी गई, कितनों को स्कूटर या किसी खम्बे से बांध कर ज़िन्दा जला दिया गया था। कहीं कहीं तो इस्लामी शिक्षा के विरुद्ध मुसलमान भी लूटने और इस तरह के काररवाईयों में शामिल हो गए थे। हज़रत मौलाना ने इस का नोटिस लिया और मुसलमानों को ऐसा करने से रोका और लुटा हुआ माल वापस करने की अपील की। सिखों को जब पता चला तो उन्होंने हज़रत मौलाना के पाँव छूकर उनका शुक्रिया अदा किया। आपने कहा कुरआन ने मुसलमानों को यह शिक्षा दी है।[1]

यूरोप का सफर—

आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी में इस्लामिक सेंटर की नींव रखी जा चुकी थी लेकिन अभी उसका उद्घाटन नहीं हुआ था। १९८५ को आप मौलाना राबेअ़ साहब के साथ आक्सफोर्ड पहुंचे और वहां इस्लामिक सेंटर का उद्घाटन किया। बेल्जियम में इस्लामी उलूम पर रिसर्च करने के लिए एक एकेडमी बनाई गई थी और हज़रत मौलाना उसके अध्यक्ष चुने गए थे। आप की अध्यक्षता में ११ अक्टूबर को जलसा हुआ।

सुप्रीम कोर्ट का ''मुस्लिम पर्सनल'' ला के खिलाफ फैसला और हज़रत मौलाना के नेतृत्व में मुसलमानों की जंग—

१९८५ ई० को शाहबोना केस में सुप्रीमकोर्ट

---

१. अब थोड़ा सोचिए और बताइए कि दहशतगर्द कौन है?

www.abulhasanalinadwi.org

ने जो फैसला किया वह "मुस्लिम पर्सनल ला" के बिल्कुल खिलाफ था। जज ने अपने फैसले में कुरआन से ग़लत तर्क दिए थे। इसके विरुद्ध ७ अप्रैल १९८५ को शाम में शहीद मीनार मैदान में एक बहुत बड़ा जलसा हुआ जिसमें लगभग ५ लाख मुसलमान शामिल हुए।[1] हज़रत मौलाना अध्यक्ष मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड के साथ पूरे मुसलमान और उनकी तंज़ीमें (संस्थाएं) एक जुट हो गई थीं जिससे पूरे देश में आग लग गई थी, हज़ारों छोटे बड़े जलसे जुलूस हुए। वर्तमान प्रधानमंत्री राजीव गांधी को तार भेजे गए, दस्तखती मुहिम चलाई गई। २ फरवरी १९८६ को हज़रत मौलाना दिल्ली में थे। प्रधानमंत्री ने मिलने की इच्छा प्रकट की, आपने अकेले में उनसे बात की। इस प्रकार कई बार मुसलमानों के डेपोटेशन के मिलने के बाद राजीव गांधी पार्लियामेंट में ऐसा बिल लाने पर तय्यार हो गए जिससे सुप्रीम कोर्ट का फैसला रद्द हो सकता था। पार्लमेण्ट में बिल पेश किए जाने का समय जितना निकट आता जाता हिन्दी, अंग्रेज़ी प्रसों और हिन्दूवादी पार्टियों का तूफान बढ़ता जाता था, ऐसा लगता था कि हिन्दुस्तान में भूकम्प आया हुआ है, या विदेशी फौज का हमला होने वाला है, या ज्वाला मुखी फटने वाला है या कोई महामारी फैलने वाली है। राजीव गांधी के दिल को अल्लाह तआला ने मोड़ दिया और उन्होंने आर्डर दिया कि हर कांग्रेसी मिम्बर पार्लियामेंट को इस बिल के पास होने के लिए वोट देना होगा वर्ना उसे कांग्रेस से निकलना होगा। ५—६ मई की रात को ३ बजे वोटिंग हुई ५४ वोटों के मुक़ाबले में ३५७ वोटों से यह बिल पास हो गया। हज़रत मौलाना ने इसके बाद राजीव गांधी को शुक्रिया का खत लिखा।

इमामे हरम (कअ़बः) शेख मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह सबील व "राब्ता आलिमे इस्लामी" के जनरल सेक्रेट्री का आगमन—

हज़रत मौलाना के बुलावे पर हरम के इमाम शेख मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह सबील और "राब्ता आलिमे इस्लामी"

---

१. लेकिन मुसलमानों के इतने बड़े जलसे को समाचार पत्रों ने बिल्कुल नहीं छापा किसी क्षेत्रीय समाचार ने लिखा तो इसमें शामिल होने वाले मुसलमानों की संख्या कुछ सौ बताई। हमेशा ही मीडिया ऐसा करता रहा है क्यों कि मीडिया पर दूसरे लोगों का क़ब्ज़ा है। अफसोस की बात यह है कि अभी यह हालात वैसे ही हैं, मुसलमानों को अपने चैनलों, समाचार पत्रों आदि की बड़ी ज़रुरत है।

www.abulhasanalinadwi.org

के सेक्रेट्री जनरल डाक्टर अब्दुल्लाह उमर नसीफ १९८६ को दारुल उलूम तशरीफ लाए और इमाम हरम ने नमाज़ जुमा पढ़ाई।

हज़रत मौलाना का बीमार होना–

मई १९८७ ई० के रमज़ान में हज़रत मौलाना की बीमारी शुरु हुई और जल्द ही बीमारी इतनी बढ़ी कि रोज़े भी छोड़ने पड़े और आप ईद की नमाज़ पढ़ने तक न जा सके। डाक्टरों ने बताया कि आपको अल्सर हो गया है। कई जगह इलाज कराने के बाद आप मुम्बई गए, वहां से १९८७ ई० को "ईदुलअज़्हा" में वापसी हुई।

भागलपुर का दिल दहला देने वाला दंगा और उसके प्रभाव–

नवम्बर १९८९ ई० में भागलपुर में दंगा हुआ। The Hindu ने अपनी विशेष रिपोर्ट में लिखा था "भागलपुर और उसके आस पास के देहातों में जो कुछ हुआ वह सम्प्रदायिक दंगा नहीं बल्कि उससे घटिया चीज़ थी, उसका शिकार ज़्यादातर अल्पसंख्यक हुए हैं उनमें भी बूढ़े, बच्चे, औरतें और अपाहिज लोग थे। मरने वालों की संख्या सैकड़ों बताई जाती है, उनमें वह लोग शामिल नहीं जो पुलिस और P.A.C. की फायरिंग में मारे गए हैं"।

चुनाव जल्द ही होने वाला था। शिलान्यास और रामजन्म भूमि का आन्दोलन यूपी में इस ज़ोर से उठा कि लगता था कि हिन्दुस्तान में तूफान आ गया है। दूसरी तरफ भागलपुर के दंगे के बारे में केन्द्र ने ऐसी कोई काररवाई न की थी जिससे यह तूफानी लहरें रुक सकें। चुनाव की राजनीति में कांग्रेस बहुसंख्यक को खुश करने के लिए यह सब कुछ कर रही थी लेकिन कभी कभी सारी चालें उलटी पड़ जाती हैं। इस तरह १९८९ ई० के चुनाव मे कांग्रेस पार्टी को मुंह की खानी पड़ी। जनता दल ने वी० पी० सिंह के नेतृत्व में सरकार

www.abulhasanalinadwi.org

बनाई। हज़रत मौलाना ने उनको एक बहुत ही लम्बा खत लिखा "आपने उसमें लिखा कि जो नई हुकूमतें बनी हैं उन्हें यह सोचना चाहिए कि उसके पहले की सरकार को क्यों मुंह की खानी पड़ी थी।" वी० पी० सिंह ने उस पूरे खत को पढ़ा और उसके प्वाइंट पर निशान लगाए और उन्होंने हज़रत मौलाना को खत लिखकर यक़ीन दिलाया कि आपने जिन चीज़ों की तरफ मेरा ध्यान आकर्षित किया है उन पर अमल किया जाएगा।

हज़रत मौलाना की बीवी की मृत्यु—

१५ दिसम्बर १९८९ ई० को इशा के समय हज़रत की बीवी सय्यद तय्यिबुन्निसा की मृत्यु हो गई। हज़रत मौलाना ने उनकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई।

बाबरी मस्जिद का मसला—

मशहूर बात यह है कि बाबरी मस्जिद का ताला राजीव गांधी ने खुलवाया था और उसमें मूर्तियां उसी समय रखी गई थीं। लेकिन पूर्व रक्षा मंत्री जार्ज फर्नांडीज़ ने एक बयान में कहा "हमें यह सुनकर धचका लगा कि मिसेज़ इन्द्रा गांधी ने सितम्बर १९८४ ई० मे विश्व हिन्दू परिषद के लीडरों को मश्वरा दिया था कि अगर वास्तव में वह हिन्दू मन्दिर बनाने के लिए बाबरी मस्जिद लेने के बारे में गम्भीर हैं तो उन्हें ज़बरदस्त आन्दोलन करना चाहिए। उन्होंने कहा १९८६ ई० में ताला खोल देना और १९८९ में शिलान्यास की अनुमति देना कांग्रेस की एक साजिश का हिस्सा है, ताकि हिन्दू वोट अधिक से अधिक प्राप्त किए जा सकें।[1]

मद्रास का सफर और शंकराचार्य से भेंट—

नवम्बर १९८९ में बिहार के पूर्व गवर्नर मुहम्मद यूनुस सलीम और आन्ध्र प्रदेश के पूर्व गवर्नर कृष्ण कान्त जी

---

१. क़ौमी आवाज़ १९ नवम्बर १९९० ई०

www.abulhasanalinadwi.org

हज़रत मौलाना से मिले और बाबरी मस्जिद के मसले पर हिन्दू धर्म के दो लीडरों से जिन्हें शंकराचार्य कहा जाता है बात करने की दरख़्वास्त की। १९ मार्च १९९० को हज़रत मौलाना मदरास से ७२ कि०मी० दूर कांचीपुरम पहुंचे। वहां दो शंकराचार्य थे एक श्री परम आचार्य दूसरे श्री विजेन्द्र आचार्य। पहले दिन आप लोगों की श्री विजेन्द्र से भेंट हुई। हज़रत मौलाना लिखते हैं "यह जानकर बड़ी खुशी हुई और तअज्जुब भी कि आचार्य जी मस्जिद गिराने की राय नहीं रखते, बल्कि उन्होंने तो यहां तक कहा कि जब वह मस्जिद है तो वहां नमाज़ पढ़ने की इजाज़त होनी चाहिए।[1] बहुत ही अच्छे माहौल में यह बात चीत हुई। जिससे बहुत अच्छी उम्मीदें बंध गई थीं। लेकिन मुसलमान लीडरों की हद से बढ़ी हुई जज़्बातियत (भावुकता) के कारण आगे कुछ अमल नहीं हो सका"।

बाबरी मस्जिद के मसले में हज़रत मौलाना पर एतिराज़—

हज़रत मौलाना को ७ सितम्बर को राब्ता आलमे इस्लामी की कान्फ्रेंस में हिजाज़ का सफर करना पड़ा। अभी शंकराचार्य वाले फार्मूले से बात आगे नहीं बढ़ी थी। अखबारों में हज़रत मौलाना पर दो एतिराज़ किए गए थे यहां तक कि इलाहाबाद उच्च न्यायालय में रिट भी दायर की गई थी जिसमें दरख़्वास्त की गई थी कि मौलाना अली मियां को मुसलमानों का नुमाइन्दा न बनाया जाए। एक यह कि मुसलमानों की तरफ से वह बातचीत कैसे कर सकते हैं। बल्कि शाही इमाम बुखारी को मुसलमानों का तर्जुमान होना चाहिए। दूसरी बात यह है कि उनके पिता श्री मौलाना अब्दुल हई साहब ने लिखा है[2] कि यह मस्जिद मन्दिर तोड़ कर बनाया गया है और अलीमियां भी उसको सच समझते हैं। हज़रत मौलाना ने इसका जवाब लिखवाया कि मैं ऐसा नहीं समझता और खुद मेरे कहने पर सय्यद सबाहउद्दीन अब्दुर्रहमान ने किताब लिखी है जिसमें साबित किया है कि वहां कभी मन्दिर नहीं था और दूसरी बात यह कि मौलाना अब्दुल हई साहब ने

---

१. कारवाने ज़िन्दगी २०२. सरकारी तौर पर इस मसले को हल करने के लिए हज़रत मौलाना और शंकराचार्य का नाम लिया जा रहा था। २. यह किताब अरबी में है और बहुत पहले छपी थी लेकिन कुछ मुसलमानों ने जिन्हें हज़रत से खुदा वास्ते बैर था उसको निकाला और अखबारों में दिया।

www.abulhasanalinadwi.org

"कहा जाता" है लिखा है अर्थात ऐसा लोगों में मशहूर है।

दिल्ली में उलमा का इज्तिमाअ और हिन्दुओं और मुसलमानों के धर्मगुरुओं की आपस में बातचीत—

हज़रत मौलाना हिजाज़ के सफर पर थे, यहां पूर्व गवर्नर बिहार यूनुस सलीम और पूर्व गवर्नर आन्ध्र प्रदेश कृष्ण कान्त अपनी कोशिशें जारी रखे हुए थे। हज़रत मौलाना ने सफर से वापसी के बाद अपने एक भरोसे मन्द साथी मौलाना अब्दुल करीम पारेख को मद्रास शंकराचार्च से बात करने के लिए यूनुस सलीम व कृष्ण कान्त के साथ भेजा। वहां पहुंचकर तीनों लोगों को बड़ा धक्का लगा। शंकराचार्य और हज़रत मौलाना की बातचीत प्रेस में आने के बाद कुछ कट्टरपंथी हिन्दुओं ने शंकराचार्य को धमकी दी थी कि अगर वह इससे अलग नहीं होते तो उनके मठ को आग लगा दी जाएगी जिससे शंकराचार्य ने उनसे अलग रहने का वाइदा कर लिया था।

मुख्य मंत्री मुलायम सिंह जी का उचित निर्णय—

३० अक्टूबर १९९० को रथयात्रा और कारसेवा निकालने का प्रोग्राम था। मुलायम सिंह ने पुलिस और फोर्स से भरपूर काम लेते हुए एक शहर दूसरे शहर जाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। बहुत सी ट्रेनें रद्द कर दी गई थीं। बी० जे० पी० के राष्ट्रीय अध्यक्ष आडवाणी को बिहार, राजमाता सिन्धिया को बांदा और अटल बिहारी बाजपेयी को लखनऊ में गिरफ्तार कर लिया गया था।

पार्लियामेंट का हंगामी इज्लास और वी० पी० सिंह का अल्पमत में आना—

रामजन्म भूमि के लीडरों को रिहा कर दिया गया था और बहुत से जगहों पर कर्फ्यू में ढील दी गई थी। मुख्यमंत्री ने कारसेवकों को बाबरी मस्जिद जाने और दर्शन

www.abulhasanalinadwi.org

करने की इजाज़त दे दी थी और उसी पर अमल भी हुआ था। इधर पूर्व प्रधान मंत्री वी० पी० सिंह— जिनके इशारे पर दोनों ग्रुपों में बात चीत हो रही थी— की सरकार अल्पमत में आ गई और चन्द्रशेखर देश के नए प्रधानमंत्री बने।

यू० पी० के मुख्यमंत्री मुलायम सिंह का बहुमत सिद्ध करना—

अब मुलायम सिंह को बहुमत सिद्ध करना था। मुसलमानों की धड़कनें तेज़ हो रही थीं कि अगर मुलायम सिंह बहुमत नहीं साबित कर पाते तो उन्होंने जो काररवाई मस्जिद के बारे में की है उसका इन्तिक़ाम मुसलमानों से लिया जाएगा। लेकिन खुश किस्मती से २० नवम्बर को उन्होंने बहुमत सिद्ध कर दिया।

सम्प्रदायिक दंगा—

मुलायम सिंह की हुकूमत ने बाबरी मस्जिद को गिरने से बचा लिया था। लेकिन रथ यात्रा ने जो आग लगाई थी उसमें मुसलमानों को सुलगना पड़ा। हिन्दू आतंकवादियों ने बिजनौर में मुसलमानों को मार मार कर जय सियाराम कहने पर मजबूर किया, सैकड़ों लोगों के हाथ पैर तोड़े गए, कई जगह बलात्कार किया गया, औरतों को जलाया गया, पच्चासों लोग P.A.C. की मार से बेकार हो गए, मस्जिदों को नुकसान पहुंचाया गया। मरने वालों की संख्या सौ से अधिक बताई जाती है। मुल्क के हालात बिगड़ते चले गए ८ दिसम्बर की खबर है। १५० लोग अलीगढ़ में मारे गए और १२१ ज़ख्मी हुए, हैदराबाद में ८१ लोगों का क़त्ल हुआ और आन्ध्र प्रदेश में मरने वालों की संख्या ९० तक पहुंच गई थी। बाबरी मस्जिद को बम से उड़ाने की कोशिश की गई और एक आदमी गिरफ्तार हुआ, कानपुर में भी फौज बुलानी पड़ी।

प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर को खत लिखना—

हज़रत मौलाना ने इससे पहले

www.abulhasanalinadwi.org

इन्द्रिागांधी, राजीव गांधी और वी० पी० सिंह को खत लिखा था। जिसमें उन्हें मुल्क के हालात के बारे में अवगत करते हुए उनसे सही क़दम उठाने की बात कही गई थी। इसी तरह का खत आपने चन्द्रशेखर को लिखा था लेकिन टाइम्स आफ इण्डिया ने इस खत का हवाला देते हुए लिखा था कि मौलाना अलीमियां ने कोई पर्सनल फार्मूला भी बाबरी मस्जिद के बारे में दिया है। इससे ग़लत फ़हमी फैल सकती थी। इसलिए आपकी तरफ से क़ौमी आवाज़ में यह आर्टिकिल छपा कि मौलाना ने कोई नया फार्मूला पेश नहीं किया है।

राजीव गांधी का क़त्ल—

२१ मई १९९१ ई० को अचानक राजीव गांधी को एक बम विस्फोट में क़त्ल कर दिया गया।

नरसिम्हा राव हिन्दुस्तान के नए प्राइमिनिस्टर—

१७ जून १९९१ ई० को नर सिम्हा राव प्रधानमंत्री बने, उस समय वह कांग्रेस के अध्यक्ष भी थे। हज़रत मौलाना ने उनके पास एक जुलाई १९९१ ई० एक बड़ा लम्बा खत लिखा और उन्हें कुछ विशेष चीज़ों की तरफ मुतवज्जेह किया।

पदमभूषण का सम्मान लेने से इन्कार—

२०—२१ जुलाई को नर सिम्हा राव ने आपको फोन किया कि हुकूमत आपको पदमभूषण का सम्मान देना चाहती है। हज़रत मौलाना ने कहा कि मुझे इससे माफ रखा जाए। उन्होंने दोहराया कि इसमें कोई राजनीतिक उद्देश्य नहीं है। लेकिन आपने क़बूल नहीं किया।

यू० पी० में भारती जनता पार्टी की हुकूमत—

B.J.P. ने राम मन्दिर के मुद्दे

www.abulhasanalinadwi.org

पर उत्तर प्रदेश में २४ जून १९९१ ई० को बहुमत प्राप्त कर लिया। इसी के साथ उसने पूरे हिन्दुस्तान को हिन्दू राष्ट्र बनाने का ऐलान किया।

नरसिम्हा राव का पत्र–

११ अगस्त १९९२ ई० को नरसिम्हा राव का खत आपके पास पहुंचा उसमें उन्होंने लिखा था कि बाबरी मस्जिद और राम जन्म भूमि के झगड़े में मज़हब, इतिहास, कानून व राजनीति को इस तरह उलझा दिया गया है कि इस का हल करना एक आदमी के बस की बात नहीं है........... मुनासिब तो यह था कि आपसे मुलाकात होती लेकिन अगर आप किसी कारण दिल्ली सफर न कर सकें तो खत आदि के द्वारा अपनी राय दें।

हज़रत मौलाना का जवाब और नरसिम्हा राव का उत्तर–

हज़रत मौलाना ने, उनके खत का जवाब लिखा और बताया कि मुझे अभी लन्दन का सफर करना है और मैं आपसे खुद मिलना चाह रहा हूं अगर आप ६–७ सितम्बर को समय दें सकें तो सूचित करें। इस तरह आपने एक बार जनरल सेक्रेट्री मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड मिन्नतुल्लाह रहमानी साहब के साथ भेंट की, फिर दोबारा आपने एकान्त में मुलाकात की लेकिन कोई हल नहीं निकल सका।

बाबरी मस्जिद का विध्वंस–

यू० पी० में B.J.P. की हुकूमत थी जिसके मुख्यमंत्री कल्याण सिंह थे। वह बाबरी मस्जिद के मुद्दे पर ही मुख्यमंत्री बने थे। वह लोग राम मन्दिर का आन्दोलन चला रहे थे, इस तरह कारसेवकों द्वारा ६ दिसम्बर १९९२ ई० को बाबरी मस्जिद को शहीद कर दिया गया। B.S.F. व P.A.C. और पुलिस कुछ दूर पर खड़ी मूकदर्शक बनी हुई थी और कल्याण सिंह की हुकूमत तो उसकी हिम्मत बढ़ा रही थी।

www.abulhasanalinadwi.org

केन्द्र का चार स्टेटों की B.J.P. सरकार को बरखास्त करना–

केन्द्र ने चारों तरफ से दबाव और अपने बदनामी के डर से मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और हिमाचल प्रदेश की B.J.P. हुकूमत को बरखास्त कर दिया और हिन्दू आतंकवादी पार्टियों विश्वहिन्दू परिषद, बजरंग दल और R.S.S. पर प्रतिबन्ध लगाया इसके साथ ही जमाअ़त इस्लामी हिन्द पर भी यह प्रतिबन्ध लगाया गया। हज़रत मौलाना ने एक प्रेस रिलीज में तअज्जुब करते हुए कहा कि जमाअत इस्लामी पर प्रतिबन्ध को देश व विदेश में नापसन्दीदगी से देखा जाएगा क्यों कि यह एक इस्लाही (सुधारवादी) और दीनी जमाअत है।

ईराक़ का कुवैत पर हमला–

२ अगस्त १९९० ई० को सद्दाम हुसैन ने कुवैत पर हमला कर दिया जिससे मुसलमानों की गर्दनें शर्म से झुक गईं।

मस्जिदें अक़्सा (फिलिस्तीन) के इमाम का नदवा आना–

१७ फरवरी को मस्जिदे अक़्सा के जलावतन इमाम महमूद सियाम नदवा आए। वहां "इस्लामिक एकेडमी" की तरफ से अस्र बाद उनके सम्मान में एक जलसा रखा गया था। मग़्रिब की नमाज़ उन्होंने पढ़ाई थी। उन्होंने हज़रत की किताबों का जो प्रभाव इस्लामी दुनिया में देखा था, उसको अपने खुत्बे में ज़िक्र किया।

बम्बई, सूरत, महाराष्ट्र के हौलनाक दंगे–

बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद महाराष्ट्र और गुजरात के बहुत से इलाकों में दंगे भड़क उठे। जिनमें मुसलमानों को एक न्यूज़ पेपर के अन्दाज़ के हिसाबा से ५६ छप्पन अरब का नुक़सान हुआ केवल एक ही रात में ५०००० लोग शरणार्थी बने और १७०० मुसलमान केवल पुलिस की

www.abulhasanalinadwi.org

गोली से ज़ख्मी हुए और हज़ारों लोग क़त्ल हुए हज़रत मौलाना ने दिल्ली का सफर कर के प्रधानमंत्री से कहा कि आप मुल्क़ की खबर लें मुल्क़ जल रहा है। बराबर हज़रत मौलाना के पास खबरें आ रहीं थी मौलाना ने फिर फोन करके कहा कि आप जल्दी मुम्बई की खबर लें उन्हों ने वाइदा किया और कुछ कारवाई भी हुई। दूसरी तरफ मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड का जलसा था जलसे में तय पाया कि एक डेपोटेशन प्रधानमंत्री से मिले और उनसे अनुरोध करे कि वह खुद बम्बई जाए और शीघ्र ही काररवाई करें। यह डेपोटेशन उनसे मिला और उन्होंने बम्बई के सफर का वाइदा भी किया लेकिन् वह देर से गए और उनका जाना केवल फार्मेल्टी की हद तक रहा जिससे कोई विशेष फाइदा नहीं हुआ।

मुम्बई के धमाके—

१२ मार्च १९९३ को मुम्बई में जुमा के नमाज़ के समय थोडी थोड़ी देर से १३ जगहों पर ताक़तवर बम फटे। जिसमें सरकारी रिपोर्ट के अनुसार ३१७ लोग मारे गए।[1]

मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड के वफ्द का दोबारा प्रधानमंत्री से मिलना—

मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड का एक वफ्द दोबारा प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव से मिला और उन्हें मेमोरेण्डम पेश किया। प्रधानमंत्री ने मेमोरेण्डम पर ग़ौर करने का वाइदा करके उसे अपने पास रख लिया।

बाबरी मस्जिद के गिराने का ज़िम्मेदार कौन—

नई दिल्ली १३ दिसम्बर १९९३

---

१. बड़े अफसोस की बात है कि बम्बई और गुजरात के दंगों के ज़िम्मेदारों को अभी तक कोई सज़ा नहीं दी गई है। जबकि इन धमाकों के ज़िम्मेदारों पर करीब १०० लोगों पर टाडा की विशेष अदालत ने फांसी व आजीवन कारावास और जुर्माने की सज़ाएं दी हैं। जबकि यह धमाके बाबरी मस्जिद विध्वंस और उसके बाद होने वाले दंगे की प्रतिक्रिया में किए गए थे।

www.abulhasanalinadwi.org

को कानून के माहिरीन के नेतृत्व में एक शहरी ट्रिबूनल ने अपने फैसले में बाबरी मस्जिद के गिराए जाने का ज़िम्मेदार उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री कल्याण सिंह, संघपरिवार के लीडरों और केन्द्र की हुकूमत को ठहराया था।[1]

विश्व स्तर पर हज़रत मौलाना की बेचैनी–

हज़रत मौलाना एक तरफ हिन्दुस्तानी मुसलमानों के लिए मुस्लिम मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड, मिल्ली कौन्सिल, इस्लाहे मआशरा और पयामे इंसानियत के स्टेज से बराबर कोशिश कर रहे थे तो वहीं आपको विश्व स्तर पर भी यह फिक्र लगी हुई थी। आपने कई भाषणों में कहा "सैंकड़ों साल बाद यहूदी दिमाग़ और ईसाई ताक़त दोनों मिल गए है और उन्होंने अपना दुश्मन मुसलमानों को समझ रखा है। वह मुसलमानों को ईमान और अख्लाक़ से दीवालिया कर देना चाहते हैं। उनमें से एक साजिश यह भी है कि अमरीका ने Fundamentalish के विरुद्ध मुहिम चला रखी है ताकि आदमी जो चाहे करे चाहे वह चीज़ इस्लामी आस्था व शिक्षा के विरुद्ध ही क्यों न हो, इसलिए इस परोपगण्डे को समझने और उसका मुक़ाबला करने की ज़रुरत है"।

मौलाना के दूसरे देश विदेश के सफर और दीनी खिदमात–

हज़रत मौलाना ने इसके साथ बंग्लादेश, बुखारा, समरकन्द, कतर, तुर्की, कर्नाटक, नागपुर, पटना आदि का सफर किया और वहां जलसों में तक़रीरें की और बहुत से दीनी सेवाएँ जारी रखीं।

दारुलउलूम नदवतुल उलमा पर पुलिस का छापा और उसकी प्रतिक्रिया–

२२ नवम्बर १९९४ को २ बजे रात को इण्टेलीजेन्स ब्यूरो ने दिल्ली पुलिस और लखनऊ

---

१. क़ौमी आवाज़ लखनऊ १५ दिसम्बर १९९३ ई०

www.abulhasanalinadwi.org

पुलिस व P.A.C. की मदद से नदवा में छापा मारा। पुलिस ने अतहर हास्टल को घेर लिया, छात्रों के कमरों में बाहर से कुण्डी लगा दी, कुछ उस्तादों को और दूसरे हास्टल के छात्रों को भी डांटा। कमरा नं० २० की खिड़की तोड़ दी गई और एक दर्जन राउण्ड से ज़्यादा पुलिस ने गोलियां भी चलाई, जिसमें तीन विधार्थी ज़ख्मी भी हुए, गिरफ्तार छात्रों को कहीं ले जाया गया। हज़रत मौलाना उस समय अपने पुश्तैनी घर रायबरेली में थे, आप नदवा पहुंचे और एक प्रेस कान्फ्रेंस बुलाई जिसमें बहुत से लीडर भी आए हुए थे इस दुघर्टना की उसमें भर्तसना की गई। दारुलउलूम के प्रिन्सिपल मुख्मंत्री मुलायम सिंह से मिले उन्होंने अपनी फ्लाइट लेट कर दी, छात्रों को छोड़ने का हुक्म दिया, नदवा को एक लाख और ज़ख्मी छात्रों को हरजाना देने का ऐलान किया और लखनऊ के S.P. और इन्सपेक्टर को सस्पेण्ड कर दिया, उनका कहना था कि यह सब उनकी जानकारी के बिग़ैर हुआ।

विदेश में इसकी प्रतिक्रिया–

विदेश से निकालने वाले अरबी अखबारों मे इस घटना की बड़ी भर्तसना की गई और शायद पहली बार इस्लामी दुनिया के सबसे बड़े इन्सटीटयूट राबते आलमे इस्लामी ने यूनेस्को को भी इस मसले की तरफ तवज्जुह दिलाई कि वह इसकी तहक़ीक़ व मज़म्मत करे। खाड़ी देश की रियासत शार्का के हाकिम ने हिन्दुस्तानी दूत से भी इस मसले पर बातचीत की।

Uniform Civil cord को लागू करने का मुतालबा और पर्सनल लॉ बोर्ड का विरोध–

सुप्रीम कोर्ट ने अचानक हुकूमत से Uniform Civil Cord को लागू करने का मुतालबा किया। हुकूमत का ज़ेहन भी साफ न था। हज़रत मौलाना ने इसके विरोध में प्रेस में बयान दिया जिससे नरसिम्हा राव ने यह इशारा दिया कि हुकूमत इस पर अमल करने का कोई इरादा नहीं रखती।

www.abulhasanalinadwi.org

प्रधानमंत्री H.D. देवगौड़ा का हज़रत से मिलने आना–

३ जुलाई १९९६ ई० को प्रधानमन्त्री देवगौड़ा हज़रत मौलाना से मिलने नदवा पहुंचे। जहां बहुत से मसाइल पर अंग्रेज़ी में बातचीत हुई। दारुलउलूम में आने का प्रधानमंत्री का पहले से प्रोगाम नहीं था। प्रधानमंत्री के साथ यू० पी० के गर्वनर शफीअ, मिस्टर शरदयादव, राम विलास पासवान, सी० एम० इब्राहीम भी नदवा आए हुए थे।

इस दौरे की B.J.P. के प्रदेशाध्यक्ष कलराज मिश्र ने आलोचना की और कहा कि इससे दुश्मन क़ौम ताकतों की हिम्मत बढ़ेगी।

इस दौरे के कुछ दिन बाद हज़रत मौलाना ने प्रधानमंत्री को पत्र लिखा और उन्हें बहुत से मुफीद मश्वरे दिए।

हिजाज़ का सफर और एक बहुत बड़ा सम्मान–

हज़रत राब्ता आलमे इस्लामी के एक प्रोग्राम को अटेण्ड करने के लिए हिजाज़ गए। १८ दिसम्बर १९९६ ई० को कमेटी के मिम्मबरों को कअ़बः मे दाखिल होने की दअ़वत दी गई। हज़रत मौलाना की सेहत बहुत खराब थी इसलिए आपने तेज़ दवाएं ली। हज़रत व्हील चेयर पर थे, कअ़बः पर ज़ीना लगाया जा चुका था शाह सऊद के पोते अमीर मश्अ़ल बिन मुहम्मद बिन सऊद ने हज़रत को सहारा देकर ऊपर चढ़ाया। दरवाज़ा उस समय तक बन्द था। हज़रत कअ़बः के दरवाज़े का कड़ा पकड़ कर खड़े हो गए। कुछ देर बाद शैबी साहब आए उन्होंने चाबी दरवाज़े के अन्दर लगा दी और हज़रत से दरख्वास्त की कि वह अपने हाथ से दरवाज़ा खोलें और अन्दर दाखिल हों। हज़रत मौलाना ने चाबी घुमाई, अपने हाथ से दरवाज़ा खोला दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी। हज़रत से अमीर मशअ़ल ने दुआ की दरख्वास्त की, हज़रत ने पूरे मुसलमानों और मक्का मदीना की हिफाज़त के लिए दुआ की और वहां मौजूद उलमा ने आमीन कही। यह ऐसी घटना

www.abulhasanalinadwi.org

है जो शायद ही १४०० साल में किसी के साथ पेश आई होगी।

मुसलमानों में एकता पैदा करने की फिक्र–

इधर कुछ दिनों से सलफियों या अहले हदीसों ने इमाम अबूहनीफा, इमाम शाफई, इमाम मालिक, इमाम अहमद के फिक्ह यानी उनके कुरआन व सुन्नत की तशरीह और उसकी सूझबूझ पर अमल करने वालों के खिलाफ ऐलान जंग कर रखा था, यहां तक कि उन्हें मुश्रिक तक ठहराया जा रहा था। जिससे हिन्दुस्तान जैसे देश में आपस में सर फुटव्वल होने लगी थी, और दअ़वती काम करने वालों को बड़ी शर्मिन्दगी का सामना करना पड़ा रहा था। हज़रत ने एक बहुत बड़े अहले हदीस आलिम सऊदी अरब के मुफ्ती आज़म अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज़ को इसकी तरफ तवज्जुह दिलाई। उन्होंने इस खत का जवाब दिया और चारों इमामों के इल्म व मेहनत को माना और उनकी फिक्ह पर अमल करने को आम लोगों के लिए जाइज़ नहीं बल्कि ज़रुरी ठहराया।

क़ादयानियों के विरोध में एक विश्व स्तर का जलसा–

हज़रत मौलाना ने क़ादयानियों के खिलाफ दारुलउलूम नदवा में १२–१३ नवम्बर १९९७ को एक आलिमी इजलास बुलाया। जिसमें "पायनियर" के रिपोर्ट के मुताबिक ३ लाख लोग शामिल हुए। सऊदिया से एक विशेष हेलीकाप्टर से इमाम हरम मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह सबील, मदीना यूनीवर्सिटी के वाइस चांसलर डाक्टर सालेह, राब्ता आलमे इस्लामी के सहायक जनरल सेक्रेट्री शेख नासिर आदि आए थे। इस जलसे में मस्जिदे अक़्सा के ज़लावतन इमाम महमूद सियाम भी आए हुए थे।

www.abulhasanalinadwi.org

हज़रत मौलाना की अध्यक्षता–

सबसे पहले प्रोग्राम में इमाम हरम को अध्यक्ष बनाया गया। लेकिन जब उनका नाम अध्यक्षता के लिए लिया गया तो इमाम हरम ने कहा कि जहां शेख अबुलहसन अली नदवी मौजूद हों मैं अध्यक्ष नहीं बन सकता फिर उन्होंने खुद अध्यक्षता के लिए हज़रत मौलाना का नाम लिया। इस तरह आपके एक तरफ इमामे हरम और दूसरी तरफ इमामे मस्जिद अक़्सा बैठे हुए थे और आपने इस जलसे की अध्यक्षता की। नमाज़ जुमा इमामे हरम ने पढ़ाई दोनों इमामों की तक़रीरें भी हुईं।

सरकारी स्कूलों में वन्देमातरम को कम्पलसरी (अनिवार्य) करना–

U.P. की B.J.P. हुकूमत मुसलमानों के लिए एक नंगी तलवार के तरह थी। उसने "वन्देमातरम" पढ़ने को सरकारी स्कूल के हर छात्र के लिए ज़रुरी ठहराया था। इसके साथ हर स्कूल के लिए यह भी ज़रुरी किया गया था कि वह हिन्दुस्तान का नक़्शा और सरस्वती की फोटो चिपकाए। छात्र जब स्कूल से आएं और जाएं तो यह तस्वीर उनके सामने हो। सरस्वती वन्दना के बाद वह क़ौमी गीत गाँए। छात्र स्कूल छोड़ने से पहले भारतमाता की जय पुकारें आदि।

इस के विरोध मे "दीनी तअ़लीमी कौन्सिल" के नदवा फिर अलीगढ़ में २९ अप्रैल को जलसे हुए, जिसमें हज़रत मौलाना ने तक़रीरें की। १९ नवम्बर १९९८ को अचानक B.B.C., STAR. TV. , ZEE. TV. और हिन्दी अंग्रेज़ी प्रिन्ट मीडिया वाले हज़रत मौलाना का इण्टरव्यू लेने नदवा पहुंचे। हज़रत मौलाना ने कहा मुसलमानों के नज़दीक सबसे अहमियत की चीज़ तौहीद (ऐकेश्वरवाद) का अक़ीदा है और इसे हम दीन में मुदाखिलत (हस्तक्षेप) समझते हैं। हज़रत मौलाना ने आगे कहा कि अगर यह आर्डर वापस न लिया गया तो मैं मुसलमानों को मश्वरा दूंगा कि वह अपने बच्चे सरकारी स्कूलों से हटा लें।

www.abulhasanalinadwi.org

हज़रत मौलाना के पुश्तैनी घर पर छापा—

वन्देमातरम के खिलाफ हज़रत ने प्रेस में बयान दिया था। उसके दो दिन बाद २२—२३ नवम्बर १९९८ को २ बजे रात को हज़रत के घर पर छापा डाला गया। उन लोगों ने पूरी इमारत की तलाशी ली अलमारियां भी खुलवाईं और यह कहते हुए निकले कि कुछ भी नहीं मिला।

इस खबर से पूरे हिन्दुस्तान में हलचल मच गई B.J.P. अध्यक्ष राजनाथ सिंह, पूर्व रेलवे मन्त्री जअ़फर शरीफ, पूर्व मुख्य न्यायाधीश सुप्रीम कोर्ट एम० ए० अहमदी, सय्यद हामिद वाइस चांसलर अलीगढ़ और बहुत से सियासी लीडर मिलने आए। मिसेज़ सोनिया गांधी ने नारायण दत्त तिवारी पूर्व मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश को अपना खत देकर भेजा। रायबरेली, लखनऊ आदि में हड़ताल हुई, यू०पी० हुकूमत ने इसकी जांच के लिए एक कमेटी बनाने का ऐलान किया। लेकिन इस कमेटी का क्या हुआ कुछ नहीं पता।

वन्देमातरम का आर्डर वापस लिया जाना और शिक्षा मन्त्री की बरखास्तगी—

वन्देमातरम के विरोध में हज़रत मौलाना की प्रेस कान्फ्रेंस के बाद प्रधानमंत्री अटलबिहारी बाजपेयी और ग्रह मंत्री लाल कृष्ण आडवाणी ने अपने स्टेटमेंटों में कहा कि यह सबके लिए ज़रुरी नहीं है। बाद में इन लोगों ने और U.P. के मुख्यमंत्री कल्याण सिंह ने कहा कि उन्होंने ऐसा कोई आर्डर नहीं दिया है। बाद में तहक़ीक से पता चला कि यह आर्डर प्राइमरी शिक्षा मन्त्री रोन्द्र शुक्ला ने दिए थे। ३ दिसम्बर १९९८ ई० को यू०पी० हुकूमत ने उस आर्डर को जिसके भेजने से वह इन्कार करती रही थी कैन्सिल करने के आर्डर जारी किए। मुख्यमंत्री कल्याण सिंह ने प्राइमरी शिक्षामंत्री रोन्द्र शुक्ल को हटा दिया और उनके सिकेट्री R-S

www.abulhasanalinadwi.org

द्विवेदी का ट्रांसफर कर दिया गया।

मीडिया की दहशतगर्दी—

हिन्दुस्तान टाइम्स ने २२ फरवरी १९९८ ई० को एक सनसनी खेज हेडिंग लगाई "प्रदेश दहशत गर्दों की ज़द में और पुलिस बैठी है खामोश"। खबर में कहा गया है कि कश्मीर से बहुत से दहशतगर्द यू०पी० में नेपाल के रास्ते से आ गए हैं। उनका प्लान बहुत बड़े पैमाने पर दहशतगर्दी फैलाने का है। उनमें से चार लोगों की शिनाख्त हो गई है वह हैं अबुल आला मौदूदी, अबुलहसन नदवी, डाक्टर अब्दुल हमीद कादरी, और मन्जूर नोअ्मानी। मजबूर होकर कर्नल शम्सी ने— जिनके नदवा से अच्छे सम्बन्ध हैं— न्यूज़ पेपर के एडीटर को लिखा कि जिनको आपने दहशतगर्द बताया है। उनमें से मौलाना मौदूदी १८ साल पहले और मन्जूर नोअ्मानी १ साल पहले वफात पा चुके हैं और मौलाना मियां तो एक आलिमी व्यक्ति हैं। लेकिन एडीटर ने इसकी तरफ कोई तवज्जुह नहीं की।

हज़रम मौलाना को एक आलिमी पुरस्कार—

दुबई के अन्तर्राष्ट्रीय "कुरआन पुरस्कार" के सरकारी इंस्टीटयूट ने १९९८ ई० में आपको इस्लामी बड़ी शख्सियत का एवार्ड देने का फैसला किया। मौलाना की सेहत खराब थी, उम्र भी ज़्यादा हो चुकी थी, इसलिए आप एवार्ड लेने के लिए जाना नहीं चाहते थे। लेकिन हुकूमत ने बार—बार कहा कि अगर हज़रत नहीं आएंगे तो हुकूमत को शर्मिन्दगी उठाना पड़ेगी और उन्होंने लखनऊ एयरपोर्ट पर एक विशेष प्लेन दो आदमियों के साथ हज़रत को लेने के लिए भेजा। हज़रत मौलाना अपने साथियों के साथ वहां पहुंचे। आपको एवार्ड दिया गया जिसकी कीमत लगभग डेढ़ करोड़ रुपए हिन्दुस्तानी होगी, आपने उसे लेते ही दीनी इन्सटीटयूटों को देने का ऐलान किया और अपने ऊपर एक पैसा खर्च नहीं किया। इस तरह आप दो दिन बाद

www.abulhasanalinadwi.org

९ ज़नवरी १९९९ को विशेष प्लेन के द्वारा लखनऊ वापस लौट आए।

हज़रत मौलाना पर फालिज का हमला–

हज़रत मौलाना कुछ दिन पहले दक्षिण भारत के सफर पर थे। वहां से वापस होने के कुछ ही दिन बाद आप पर फालिज का हमला हुआ और आपको लखनऊ में भर्ती कराया गया। डाक्टरों की राय थी कि आपको दिल्ली चेकअप के लिए ले जाया जाए लेकिन आपकी हालत अच्छी न थी। हुकूमत ने अपनी तरफ से चार्टर प्लेन का इन्तिज़ाम किया। हज़रत मौलाना ने आज तक हुकूमत का कोई एहसान न लिया था उन्हें यह बात मालूम न थी, D.M. साहब ने आकर कहा हज़रत दिल्ली जाने के लिए प्लेन का इन्तिज़ाम हो गया है। हज़रत मौलाना ने नाराज़ होकर कहा– "कौन दिल्ली जा रहा है? मै दिल्ली नहीं जाऊंगा" और इस तरह आपने हुकूमत से कोई मदद नहीं ली।

आपको देखने के लिए बड़े बड़े उलमा तश्रीफ लाए। इमामे हरम और बहुत से बुज़ुर्गों ने आपके लिए दुआएं की जिससे एक डेढ़ महीना में आप कुछ लिखने पढ़ने लगे थे।

प्रधानमंत्री अटल बिहारी को नसीहत–

इसी के साथ प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी, और उनके साथ मुख्य मंत्री कल्याण सिंह, गर्वनर यू०पी० सूरजभान और B.J.P. प्रदेशाध्यक्ष राजनाथ सिंह और लाल जी टण्डन भी आप को देखने आए। हज़रत ने उस समय भी प्रधानमंत्री को नसीहत करते हुए कहा कि यह मुल्क़ तीन चीज़ों पर क़ाइम है।

१. सेक्यूलर (Seculer) धर्मनिरपेक्षता

www.abulhasanalinadwi.org

२. डेमोक्रेसी (Democracy) लोकतन्त्र
३. नान वाइलेन्ट (Non violent) अहिंसा।

जब कभी इसके खिलाफ किया जाएगा तो मुल्क खतरे में पड़ जाएगा। इन लोगों ने आपकी बातें ख़ामोशी से सुनीं और थोड़ी देर बैठकर चले गए।

हज़रत मौलाना की तब्लीग़ी इज्तिमाअ़ में आखिरी तक़रीर—

हज़रत मौलाना की सेहत खराब थी और कुछ वाक्य भी मुश्किल से बोल पा रहे थे। १४ जून १९९९ ई० को नदवा में तब्लीग़ी जलसा था। अल्लाह जाने आप में कहां से ताक़त आ गई आपने मग़्रिब बाद उसमें आधा घण्टा तक़रीर की। आपने फरमाया कि मुसलमानों को आइडियल बनना चाहिए उनकी अपनी शिनाख्त होनी चाहिए कि लोग देखकर कहें कि हां मुसलमान ऐसा होता है।

हज़रत मौलाना को अमीर तब्लीग़ जमाअ़त मौलाना सअ़द और मौलाना ज़ुबैर साहब को खिलाफत देना—

हज़रत मौलाना ने इसी बीमारी में मौलाना इलयास साहब कान्धवी के पर पोते और मौलाना यूसुफ साहब के पोते मौलाना सअ़द साहब और मौलाना इनआ़म साहब पूर्व अमीर तब्लीग़ी जमाअ़त के लड़के मौलाना ज़ुबैर साहब को खिलाफत दी।

मीडिया की झूठी रिपोर्ट—

जनसत्ता ने हज़रत मौलाना की इस तब्लीग़ी तक़रीर का ग़लत मतलब निकाला और लिखा कि मौलाना ने मुसलमानों को अलग थलग रहने और विरोधी जज़्बात रखने की नसीहत की और यही नहीं बल्कि इसी टाइप के पम्पलेट भी बांटे गए और कहा कि इन्हें देहातों तक ले जाइये, इसी के सिाथ यह सुर्खी भी लगाई ''कारगिल में लड़ने वाले फौजियों के लिए

दुआ करने से अली मियां का इन्कार।[1] इससे प्रभावित होकर जगह–जगह से नदवा में फैक्स और फोन आदि आए। आपको गालियाँ दी गईं फिर अखबारों में इस खबर के विरोध में आर्टिकल छपे जिससे कुछ सुकून हुआ लेकिन अभी कट्टरवादी हिन्दुओं को इत्मिनान नहीं हुआ था। बहुत से सियासी लीडर पूर्व रक्षामंत्री मुलायम सिंह, अहमद हसन आदि मिलने आए और इस ग़लत खबर के छपने पर अफसोस प्रकट किया। इस घटना के दूसरे दिन इन्ट्रीगल यूनीवर्सिटी के जलसे में प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी को भी हाज़िर होना था। उस जलसे के कन्विनर डाक्टर मसऊद उस्मानी थे उन्होंने अपनी तक़रीर में जनसत्ता की खबर का भी ज़िक्र किया। लाल जी टण्डन ने अटल बिहारी के इशारे पर उस खबर की तरदीद की और हज़रत मौलाना के लिए सम्मानजनक शब्द का प्रयोग किया।

सुल्तान बुरुनाई एवार्ड–

सुल्तान बुरुनाई की तरफ से तीन सालों से किसी भी दीनी शोअ़बे (डिपार्ट) के बड़े आलिम को यह एवार्ड दिया जा रहा था। इस साल के लिए हज़रत मौलाना को चुना गया। हज़रत मौलाना बीमार थे इसलिए एवार्ड नदवा में ही दिए जाने का प्रोग्राम बनाया गया। सुल्तान हुस्न बल्क़िया ने इस एवार्ड को देने के लिए एक वज़ीर जिनके साथ वहां के यूनीवर्सिटी के चांसलर भी थे भेजा। लेकिन जनसत्ता वाली रिपोर्ट की वजह से यू०पी० और केन्द्र की B.J.P. सरकार का ज़ेहन साफ न था इसलिए हुकूमत ने सुरक्षा बल का बहाना किया और उन्हें लखनऊ आने की इजाज़त न दी। इसलिए दिल्ली ही में हज़रत मौलाना की तरफ से मौलाना राबेअ़ साहब ने यह एवार्ड लिया। हज़रत मौलाना ने यह रुपए जो लगभग बीस लाख थे मिलते ही उलमा और मशाइख (सूफी सन्त) में बाँट दिए और एक पैसा भी अपने ऊपर खर्च नहीं किया।

---

१. मौलाना की तक़रीर का मतलब यह था कि मुसलमानों को पूरी तरह इस्लाम पर अमल करना चाहिए जहां तक पम्पलेट की बात है तो कोई पम्पलेट नहीं बांटा गया था, इसी के साथ मौलाना से किसी ने कभी भी कारगिल के फौजियों के लिए दुआ की दरख्वास्त नहीं की थी।

www.abulhasanalinadwi.org

रमज़ान में नदवा का क़ियाम और हज़रत की वफात—

हज़रत मौलाना की सेहत गिरती जा रही थी, आप हर साल रमज़ान में अपने घर में रहते थे लेकिन इस बार डाक्टरों ने मश्वरा दिया कि लखनऊ में रहना ज़रुरी है। हज़रत मौलाना ने कहा कि २० रमज़ान तक नदवा में रहकर रायबरेली जाऐंगे। आपने रोज़े बराबर रखे, तरावीह भी पढ़ रहे थे। २० रमज़ान को आप रायबरेली गए और वहीं दो दिन बाद जुमा के दिन ११:४५ मिनट पर सूर: यासीन पढ़ते हुए अल्लाह तआ़ला के दरबार में हाज़िर हुए। खूब सर्दी पड़ रही थी, कोहरा था इसलिए बहुत कम लोग आपकी नमाज़ जनाज़ा में पहुंच सके। हज़रत मौलाना राबेअ़ साहब ने आपकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई आपके जनाज़े की नमाज़ लगभग डेढ़ लाख लोगों ने पढ़ी। वहीं अपने वालिद और भाई के बगल में दफ्न हुए।

सऊदी अरब के बादशाह शाह फहद के इशारे पर मदीना और मक्का में लगभग ३५००००० पैंतीस लाख लोगों ने ग़ाइबाना नमाज़ पढ़ी, विदेश से लोग पूरी पूरी फ्लाइट बुक करके आए, और रमज़ान व उसके बाद तो कोई ही हिन्दुस्तान की दीनी शख्सियत होगी जो तअ़ज़ियत (शोक) के लिए न आई होगी।

हज़रत मौलाना उलमा की नज़र में—

१. हज़रत मौलाना मुहम्मद इलयास साहब ने फरमाया आपकी वजह से तब्लीग़ को जितना फाइदा पहुंचा अब तक लगने वालों में से किसी से नहीं पहुंचा।

२. हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ साहब ने अपने एक खत में लिखा— हज़रत आप अपने उन कमालात व खूबियों से जो हज़रत मरहूम (मौलाना इलयास) के साथ मुहब्बत व तअ़ल्लुक और इस काम की तरफ पहल व

www.abulhasanalinadwi.org

इलयास) के साथ मुहब्बत व तअ़ल्लुक और इस काम की तरफ पहल व दअ़वत से आपको हासिल है, और सादाती जौहर ने जिसमें चार चाँद लगा दिए हैं, उससे हम लोगों को भी फाइदा पहुंचाए, आपका बहुत बहुत एहसान होगा।

३. मुफस्सिर कुरआन मौलाना अब्दुलमाजिद दरयाबादी ने मौलाना अलीमियां के बारे में फरमाया "यह उन तारों के झुरमुट में आफताब (सूरज) हैं"।

४. शेखुल हदीस मौलाना ज़करिय्या साहब फरमाते हैं— मौलाना अबुल हसन नेकियों का मजमूआ़ हैं।

५. मुफ्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी साहब पूर्व चीफ जस्टिस पाकिस्तान कहते हैं "अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मौलाना से इस ज़माने में दीन का जो बड़ा काम लिया है। उसके असरात हिन्द व पाक से निकल कर अरब दुनिया और यूरोप तक पहुंचे हैं जो किसी किसी के हिस्से में आते हैं"।

६. हज़रत अशरफ अली थानवी ने आपको एक खत में लिखा "मजमऊल कमालात यानी बहुत सारी खूबियों और अच्छाइयों के मालिक"।

७. अल्लामा सय्यद सुलेमान नदवी ने एक सवाल के जवाब में फरमाया "अलीमियां तो एक बड़े आलिम हैं"। दूसरी जगह आपने लिखा "हिजाज़ व मिस्र की फिज़ाएं (वातावरण) तो उनके दअ़वत के नगमों से मसहूर है" यानी वहां भी उनकी दअ़वत का चर्चा है।

८. इमाम हरम शेख अब्दुल अज़ीज बिन बाज़ ने फरमाया "मौलाना अलीमियां और नदवा नूर के मीनार की हैसियत रखते हैं।

९. इमामे हरम शेख मुहम्मद अब्दुल्लाह सबील को हज़रत मौलाना की मौजूदगी में जब जलसे का अध्यक्ष बनाने के लिए कहा गया तो आपने फरमाया "जहां अबुल हसन अली नदवी मौजूद हों मैं वहां अध्यक्ष नहीं बन सकता"।[१]

हज़रत मौलाना की किताबें—

मौलाना मुहम्मद जुबैर नदवी साहब ने हज़रत मौलाना के किताबों की एक सूची तय्यार की है। जिसमें अरबी किताबों की

१. मौलाना अली मियां अकाबिर व मशाहिर की नज़र में से यह भाग लिया गया है।

www.abulhasanalinadwi.org

संख्या १७० एक सौ सत्तर और उर्दू किताबों व पम्पलेटों की संख्या २७५ पौने तीन सौ तक बताई है।[1]

हज़रत मौलाना का इल्म–

१. तफ्सीर–

हज़रत मौलाना को तफ्सीर से सबसे ज़्यादा दिलचस्पी थी। मौलाना मन्ज़ूर नोअ़मानी साहब कहते थे कि अली मियां आयत से ऐसे मोती निकालते हैं जिस तर्क हमारा ज़ेहन नहीं पहुंचता।

२. हदीस–

हदीस पर आपकी गहरी नज़र थी। एक साल बुखारी शरीफ भी पढ़ाई थी, अपने ज़माने के बहुत बड़े हदीस के आलिम मौलाना ज़करिय्या साहब ने अपनी हदीस की किताबों पर हज़रत से मुक़द्दिमा लिखवाया है। आपसे मज़ाहिरुलउलूम के शेखुल हदीस शेख यूनुस और शाम के मुहद्दिस अल्लामा अब्दुल फत्ताह जैसे लोगों ने हदीस की इजाज़त ली है।

३. फिक़्ह–

हज़रत मौलाना को फिक़्ह के बारीक और छोटे छोटे मसाइल से कम दिलचस्पी थी। इसलिए आपने कभी फत्वा नहीं दिया।

४. अरबी उर्दू लिट्रेचर–

आपको अरबी और उर्दू दोनों भाषाओं पर कमाण्ड था। जिसको बड़े बड़े साहित्यकारों ने माना है। आप इंग्लिश, फारसी आदि भी बोलना पढ़ना लिखना जानते थे।

५. इतिहास–

---

१. सवानेह मुफक्किरे इस्लाम– ५२३

www.abulhasanalinadwi.org

आपने इतिहास से ऐसे ऐसे काम लिए हैं जो बहुत कम इतिहासकारों ने लिए होंगे।

हज़रत मौलाना के अख़्लाक़ व व्यवहार

१. सख़ावत व फय्याज़ी (दानता)—

हज़रत मौलाना को लाखों करोड़ों के इनआमात मिले, लेकिन आपने सबको बांट दिया अपने ऊपर कुछ भी खर्च नहीं किया। जैसा कि तुम पढ़ चुके हो।

२. ज़ुह्द (वैराग्य)—

हज़रत मौलाना एक ज़माने में बड़ी तंगहाली से ज़िन्दगी काट रहे थे ''कभी कभी तो रमज़ान में भी इफ्तार नसीब न होता था। कहीं जाना होता तो किराया उधार लेकर जाते। लेकिन उस ज़माने में भी दुनिया से भागते रहे। एक सऊदी ने आपको मौलाना अब्दुल्लाह अब्बास साहब के द्वारा अशरफ़ियों की एक थैली भेजी। आपने एक अशर्फी निकाल कर शुक्रिया के साथ थैली वापस भिजवा दी।[१]

३. ईमानी ताक़त—

हज़रत मौलाना ने मिस्र के जनरल नासिर के खिलाफ ''अलबअ़स'' और ''अरराइद'' अरबी पर्चों में लिखना शुरु किया तो जनरल नासिर ने जवाहर लाल नेहरु से हज़रत मौलाना को ऐसा करने से रोकने की दरख़्वास्त दी लेकिन हज़रत ने साफ इन्कार कर दिया।

४. इख़्लास—

यानी हर काम अल्लाह को खुश करने के लिए करना। सय्यद

१. मीरे कारवां— ५४

www.abulhasanalinadwi.org

अहमद शहीद रह० ने अपने बारे में फरमाया था कि समझदार होने के बाद से आज तक मैने ऐसा कोई काम नहीं किया जिसमे अल्लाह को खुश करने की नियत न हो। हज़रत मौलाना उनके इस जुमले को बार बार सुनाते और इख्लास पर ज़ोर देते और इसी पर आपका अमल था।

५. किसी का दिल दुखाने से परहेज़ करना–

हज़रत मौलाना ने अपने वालिद अब्दुल हई साहब के बारे में लिखा है कि दिल दुखाना उनके मज़हब में कुफ्र था। यही हाल आपका भी था।

६. हुस्ने अख्लाक़–

हज़रत मौलाना हुस्ने अख्लाक़ के बहुत ऊंचे दर्जे तक पहुंचे थे। रसूलुल्लाह सल्ल० अख्लाक़ के सबसे बड़ा नमूना थे जिसकी गवाही उनके जानी दुश्मनों ने भी दी थी। हज़रत मौलाना ने आप सल्ल० के उस हुस्ने अख्लाक़ में अपने आप को ढाल लिया था।

७. आपकी दिल की तड़प–

हज़रत मौलाना मुसलमानों के लिए ही नहीं बल्कि पूरी इंसानियत के लिए अपने दिल में बड़ी मुहब्बत रखते थे। कहीं कुछ बुरी खबर पता चलती तो आपकी तबियत बेचैन हो जाती। रातों को रो रो कर अल्लाह से दुआएं मांगते थे।

८. ईमानी बसीरत (दूरदर्शिता)–

हज़रत मौलाना बड़े बड़े खतरों को एक नज़र में ताड़ जाते थे। जिस ज़माने में मुसलमानों ने मिस्र के जनरल नासिर, तुर्की के कमाल अता तुर्क, लीबिया के कर्नल कद्दाफी, ईरान के खुमैनी को

अपना लीडर और हीरो मान रखा था। हज़रत मौलाना ने ऐलान कर दिया था कि यह सब इस्लाम के दुश्मन हैं।

९. एतिदाल (मध्यता)–

हज़रत मौलाना के अन्दर मियानारवी और एतिदाल था। आप जल्दी किसी से प्रभावित होकर अपनी राय न बदलते थे बल्कि खूब छान परखकर बीच की सही राय देते थे। यह चीज़ दीन का सही और गहरा इल्म हासिल करने से प्राप्त होती है।

१०. उदारता–

हज़रत मौलाना के अन्दर उदारता और वुसअ़त थी आपका पयाम हर मुस्लिम, हिन्दू, अरबी व यूरोपीय के लिए था।

www.abulhasanalinadwi.org